रजिस्ट्री सं० डी- 222 | REGISTERED NO. D-222

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 41] नई दिल्ली, शनिवार, अक्तूबर 8, 1966 (आश्विन 16, 1888)

No. 41] NEW DELHI, SATURDAY, OCTOBER 8, 1966 (ASVINA 16, 1888)

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रखा जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

नोटिस

NOTICE

नीचे लिखे भारत के असाधारण राजपत्र 23 सितम्बर 1966 तक प्रकाशित किये गये :—

The undermentioned *Gazettes of India Extraordinary* were published upto the 23rd September 1966 :—

अंक Issue No.	संख्या और तारीख No. and Date	द्वारा जारी किया गया Issued by	विषय Subject
170	No. 129-ITC(PN)/66, dt. 17-9-66.	Min. of Commerce	Import of raw materials, components and spare parts by scheduled industries borne on the Books of the Directorate General of Technical Development for the period April 66—March/1967.
	No. 130-ITC(PN)/66, dt. 17-9-66.	Do.	Import of Electric Hoist Blocks S. No. 65(2)/V—Ban on
171	No. 131-ITC(PN)/66, dated 19th September 1966.	Do.	Import of tobacco from U.S.A. under the Agricultural Commodities Agreement between the U.S.A. and India under U.S. Title I of the Agricultural Trade Development and Assistance Act of 1954 as amended (U.S. P.L. 480).
172	No. EB/66/SC Rly/Notification dated 20th September 1966.	Min. of Railways	Formation of a new Railway Zone as South Central Railway out of the existing Central and Southern Railways from 2nd October 1966.
	सं० ई०बी०/66/एस०सी० रेलवे/ अधिसूचना दिनांक 20-9-66	रेल मंत्रालय	वर्तमान मध्य और दक्षिणी रेलवे के स्थान पर एक नये दक्षिण रेलवे नामक रेलवे क्षेत्र का 2-10-66 से उदघाटन
173	No. 132-ITC(PN)/66, dated 20th September 1966.	Min. of Commerce	Import of capital goods and other items under National Defence Remittance Scheme.
174	No. 73/3/EP (M&C)/66 dated 4th August 1966.	Do.	Technical Committee for Developing and Expanding the production of Cinchona and Quinine Products.
	सं० 733/ई०पी० (एम० एण्ड सी०)/66 दिनांक 4-8-66	वाणिज्य मंत्रालय	सिंकोना तथा क्विनिन उत्पादकों के उत्पादन का विकास तथा वृद्धि करने की तकनीकी समिति ।

ऊपर लिखे असाधारण राजपत्रों की प्रतियां प्रकाशन प्रबन्धक, सिविल लाइन्स, दिल्ली के नाम मांगपत्र भेजने पर भेज दी जाएंगी । मांगपत्र प्रबन्धक के पास इन राजपत्रों के जारी होने की तारीख से दस दिन के भीतर पहुंच जाने चाहिएं ।

Copies of the *Gazettes Extraordinary* mentioned above will be supplied on Indent to the Manager of Publications, Civil Lines, Delhi. Indents should be submitted so as to reach the Manager within ten days of the date of issue of these Gazettes.

विषय सूची (CONTENTS)

	पृष्ठ (Pages)
भाग I—खंड 1—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधीतर नियमों, विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबधित अधिसूचनाएं	641
भाग I—खंड 2—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों तथा उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई सरकारी अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	909
भाग I—खंड 3—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों, विनियमों, आदेशों और संकल्पों से संबधित अधिसूचनाएं	49
भाग I—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई अफसरों की नियुक्तियों, पदोन्नतियों, छुट्टियों आदि से संबंधित अधिसूचनाएं	593
भाग II—खंड 1—अधिनियम, अध्यादेश और विनियम	—
भाग II—खंड 2—विधेयक और विधेयकों संबंधी प्रवर समितियों की रिपोर्ट	—

	पृष्ठ (Pages)
भाग II—खंड 3—उप-खंड (i)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा जारी किए गए विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए साधारण नियम (जिनमें साधारण प्रकार के आदेश, उप-नियम आदि सम्मिलित हैं)	1699
भाग II—खंड 3—उप-खंड (ii)—(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और (संघ-राज्य क्षेत्रों के प्रशासनों को छोड़कर) केन्द्रीय प्राधिकारों द्वारा विधि के अन्तर्गत बनाए और जारी किए गए आदेश और अधिसूचनाएं . .	2815
भाग II—खंड 4—रक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित विधिक नियम और आदेश .. .	233
भाग III—खंड 1—महालेखापरीक्षक, संघ-लोक-सेवा आयोग, रेल प्रशासन, उच्च न्यायालयों और भारत सरकार के संलग्न तथा अधीन कार्यालयों द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं ..	679
भाग III—खंड 2—एकस्व कार्यालय, कलकत्ता द्वारा जारी की गई अधिसूचनाएं और नोटिसें	375
भाग III—खंड 3—मुख्य आयुक्तों द्वारा या उनके प्राधिकार से जारी की गई अधिसूचनाएं	137
भाग III—खंड 4—विधिक निकायों द्वारा जारी की गई विविध अधिसूचनाएं जिसमें अधिसूचनाएं, आदेश, विज्ञापन और नोटिसें शामिल हैं .	643
भाग IV—गैर-सरकारी व्यक्तियों और गैर-सरकारी संस्थाओं के विज्ञापन तथा नोटिसें	199
पूरक सं० 41—	
1 अक्टूबर 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह की महामारी संबंधी साप्ताहिक रिपोर्ट	1421
10 सितम्बर 1966 को समाप्त होने वाले सप्ताह के दौरान भारत में 30,000 तथा उससे अधिक आबादी के शहरों में जन्म, तथा बड़ी बीमारियों से हुई मृत्यु से संबंधित आंकड़े .	1433

PART I—SECTION 1.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations and Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	641
PART I—SECTION 2.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave etc., of Government Officers issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by the Supreme Court	909
PART I—SECTION 3.—Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions, issued by the Ministry of Defence	49
PART I—SECTION 4.—Notifications regarding Appointments, Promotions, Leave, etc., of Officers issued by the Ministry of Defence	593
PART II—SECTION 1.—Acts, Ordinances and Regulations	—
PART II—SECTION 2.—Bills and Reports of Select Committees on Bills	—
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (i).—General Statutory Rules (including orders, bye-laws, etc. of a general character) issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	1699
PART II—SECTION 3.—SUB-SECTION (ii)—Statutory Orders and Notifications issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence) and by Central Authorities (other than the Administrations of Union Territories) ..	2815
PART II—SECTION 4.—Statutory Rules and Orders notified by the Ministry of Defence ..	233
PART III—SECTION 1.—Notifications issued by the Auditor General, Union Public Service Commission, Railway Administration, High Courts and the Attached and Subordinate Offices of the Government of India	679
PART III—SECTION 2.—Notifications and Notices issued by the Patent Offices, Calcutta ..	375
PART III—SECTION 3.—Notifications issued by or under the authority of Chief Commissioners	137
PART III—SECTION 4.—Miscellaneous Notifications including Notifications, Orders, Advertisements and Notices issued by Statutory Bodies	643
PART IV—Advertisements and Notices by Private Individuals and Private Bodies .	199
SUPPLIMENT No. 41—	
Weekly Epidemiological Reports for week-ending 1st October 1966	1421
Births and Deaths from Principal diseases in towns with a population of 30,000 and over in India during week-ending 10th September 1966	1433

भाग I—खण्ड 1

PART I—SECTION 1

(रक्षा मंत्रालय को छोड़कर) भारत सरकार के मंत्रालयों और उच्चतम न्यायालय द्वारा जारी की गई विधितर नियमों विनियमों तथा आदेशों और संकल्पों से संबंधित अधिसूचनाएं

Notifications relating to Non-Statutory Rules, Regulations, Orders and Resolutions issued by the Ministries of the Government of India (other than the Ministry of Defence, and by the Supreme Court.

राष्ट्रपति सचिवालय

नई दिल्ली, दिनांक 26 सितम्बर 1966

सं० 61प्रे-प्रेज०/66—राष्ट्रपति, उत्तर प्रदेश पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते है :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री शिव चरन सिंह,
पुलिस उप-निरीक्षक,
आगरा जिला,
उत्तर प्रदेश ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिए पदक प्रदान किया गया ।

23 फरवरी 1965 को यह सूचना मिली कि डाकू हर प्रसाद का दल, हरपाल गढ़ी गांव में डाका डालने वाला है अतः इन्हें पकड़ने के लिये तुरन्त ही एक पुलिस टुकड़ी को तैनात किया गया। श्री शिव चरन सिंह, पुलिस उप-निरीक्षक के नेतृत्व में पुलिस टुकड़ी ने डाकुओं का पता लगा लिया किन्तु पुलिस की मौजूदगी मालूम होने पर डाकू बिखर गये । फिर भी श्री सिंह ने यह देखने का कि झोंपड़ी में कोई डाकू शेष रह तो नहीं गया, निश्चय किया । जैसे ही वह दरवाजे के निकट पहुंचे उन पर गोली चलाई गई जिससे उनका बाया बाजू एवं जांघ घायल हो गये। इस अचानक हुए आक्रमण एवं घावों के बावजूद, श्री सिंह झोपड़ी में घुस गये और हर प्रसाद पर गोली चला कर उसे घायल कर दिया । डाकू बाहर भागा और पुलिस दल को बंदूक की लड़ाई में उलझा दिया । आगे हुई मुठभेड़ में हर प्रसाद और एक दूसरा डाकू जो झोपड़ी में थे, मारे गये ।

इस मुठभेड़ में, श्री शिव चरन सिंह ने उच्च कोटि की विशिष्ट वीरता, पहल शक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4 (i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 23 फरवरी 1965 से दिया जाएगा ।

सं० 62-प्रेज/66—राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री हरभजन सिंह,
पुलिस उप-निरीक्षक,
2री बटालियन, पंजाब सशस्त्र पुलिस,
पंजाब ।

श्री सन्तोख सिंह,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 5097,
2री बटालियन, पंजाब सशस्त्र पुलिस,
पंजाब ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किये गये ।

26 फरवरी 1964 को, पुलिस उप-निरीक्षक हरभजन सिंह की कमान में एक छोटे पुलिस गश्ती दल पर जम्मू एवं कश्मीर में युद्ध विराम रेखा के पार से सशस्त्र आक्रमणकारियों ने आक्रमण कर दिया । बहुत कम संख्या के बावजूद, गश्ती दल ने मोर्चे संभाल लिये और आक्रमणकारियों को बहुत नजदीक परास पर उलझाये रखा। थोड़ी देर में एक हैड कान्स्टेबल की कमान में दूसरा गश्ती दल उप-निरीक्षक के साथ सम्मिलित हो गया । उसी समय आक्रमणकारियों के दूसरे गिरोह ने पुलिस पर हल्की मशीन गनों तथा राइफलों से भारी गोलीबारी शुरू कर दी । आगे की मुठभेड़ में उप-निरीक्षक हरभजन सिंह तथा कान्स्टेबल सन्तोख सिंह ने अपनी रक्षा की परवाह किये बिना उत्कृष्ट साहस तथा दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन किया और शेष पुलिस दल के लिये प्रेरणा के स्रोत हुए जिसने बलशाली लड़ाई की और आक्रमणकारियों को काफी क्षति पहुंचा कर उन्हें पीछे हटने पर बाध्य कर दिया। थोड़ी देर के बाद उप-निरीक्षक हरभजन सिंह एवं कान्स्टेबल सन्तोख सिंह, युद्ध विराम रेखा के पार से होने वाली भारी गोलीबारी के बावजूद, उन स्थितियों तक रेंग कर गये जहां आक्रमणकारियों का पहले अधिकार था और तीन मृतक आक्रमणकारियों के हथियार एवं गोला बारूद लेकर वापिस आये ।

इस मुठभेड़ में, सर्वश्री हरभजन सिंह एवं सन्तोख सिंह ने उच्च कोटि के विशिष्ट साहस एवं कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 26 फरवरी 1964 से दिया जायेगा ।

दिनांक 27 सितम्बर 1966

सं० 63-प्रेज/66—राष्ट्रपति, असम पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते है :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री नकलेन तेमचेन आओ,
हवलदार, 1ली असम पुलिस बटालियन,
असम ।

श्री अविन्द्र संगम,
नायक, 1ली असम पुलिस बटालियन,
असम ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किये गये ।

8 अक्तूबर 1965 को प्रातः एक बजे के करीब असम पुलिस के एक गश्ती दल का लगभग 25 नागा विद्रोहियों से अचानक सामना हो गया । नायक अविन्द्र संगम ने, जो पुलिस दल के आगे थे, तुरन्त विद्रोहियों को राईफल की गोलीबारी में उलझा दिया और उनकी अग्रिम गारद को मार दिया । हवलदार नकलेन तेमचेन आओ जो नायक अविन्द्र संगम के बिलकुल पीछे थे, अपनी सुरक्षा की बिलकुल

परवाह न कर आगे भाग कर आये तथा विद्रोही गार्ड से बंदूक छीन ली और तब शेष विद्रोहियों पर गोलीबारी शुरू कर दी । इन दो पुलिस अधिकारियों के साहसपूर्ण आक्रमण ने न केवल संख्या में अधिक विद्रोहियों के दल को पीछे हटने से बाध्य कर दिया किन्तु उनमें से बहुत हताहत भी किये ।

श्री नकलेन सेमचेन आओ और श्री अविन्द्र संगम ने कठिन एवं भयंकर परिस्थिति में उच्च स्तर की कर्त्तव्यपरायणता, साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया ।

2. ये पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के वीरता के लिये दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 8 अक्तूबर 1965 से दिया जायेगा ।

सं० 64-प्रेज०/66—राष्ट्रपति, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री पुल्ला वेंकट सुब्बा राव,
कम्पनी कमाण्डर (स्थानापन्न),
1 ली बटालियन, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
नीमच ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया ।

9 मार्च 1966 को केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के कम्पनी कमाण्डर श्री पुल्ला वेंकट सुब्बाराव केन्द्रीय आरक्षित पुलिस की एक टुकड़ी के साथ असैनिक जीपों के एक सार्थ (कान्वाय) के संरक्षणार्थ जा रहे थे । जब यह सार्थ (कान्वाये) एक मोड़ को पार कर रहा था तो श्री राव ने सार्थ (कान्वाय) की ओर आते सशस्त्र व्यक्तियों के एक गिरोह को देखा । क्योंकि वे सशस्त्र व्यक्ति मणिपुर राइफल्स तथा असम राइफल्स के समान वर्दी पहने हुए थे अतः श्री राव पूछ-ताछ करने के लिए अपनी गाड़ी से उतरे । इसी क्षण एक सशस्त्र व्यक्ति ने अपनी राइफल में गोली भरी । इन सशस्त्र व्यक्तियों की सवाशयता पर संदेह करते हुए श्री राव ने कुशाग्र बुद्धि के साथ अपने व्यक्तियों को मोर्चे संभालने का आदेश दिया । विद्रोहियों ने हल्की मशीन गनों तथा 2 मार्टरों के साथ भारी गोली वर्षा शुरू कर दी । विरोधियो के मुकाबले में बहुत कम संख्या में होने के बावजूद श्री राव के नेतृत्व में केन्द्रीय आरक्षित पुलिस की टुकड़ी अपनी-अपनी स्थितियों पर डटी रही और विद्रोहियों को पीछे हटने पर बाध्य कर दिया ।

इस मुठभेड़ में, श्री पुल्ला वेंकट सुब्बा राव ने उत्कृष्ट साहस, पहल शक्ति तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है ।

सं० 65-प्रेज०/66—राष्ट्रपति केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री भीकाजी निकम,
नायक सं० 773,
1ली बटालियन,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
नीमच ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया ।

27 फरवरी 1966 को श्री भीकाजी निकम एक सार्थ (कान्वाय) की रक्षार्थ जा रहे थे जब इस पर विद्रोहियों ने आक्रमण कर दिया । अग्रिम गाड़ी का एक कान्स्टेबल मारा गया और अन्य चार को गहरी चोटें आईं । नायक भीकाजी निकम जोकि पीछे की गाड़ी में था अपनी छोटी टुकड़ी के साथ आगे आया तथा उसने स्थिति पर काबू पा लिया । इनके सुयोग्य नेतृत्व में, छोटी पुलिस टुकड़ी ने जो संख्या में बहुत कम थी, सुनियोजित आक्रमण को विफल कर दिया तथा विद्रोहियों को भारी संख्या में हताहत किया ।

इस मुठभेड़ में, नायक भीकाजी निकम ने उत्कृष्ट वीरता, पहल शक्ति तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया ।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 27 फरवरी, 1966 से दिया जायेगा ।

सं० 66-प्रेज०/66—राष्ट्रपति, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के निम्नांकित अधिकारियों को उनकी वीरता के लिये राष्ट्रपति का पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारियों के नाम तथा पद

श्री लेख राम,
सूबेदार, 6ठी बटालियन,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
नीमच ।

श्री नरेश मिश्र,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 6816,
6ठी बटालियन, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
नीमच । (स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किये गये ।

7 अगस्त 1965 की रात को युद्ध विराम रेखा पार से आक्रमण-कारियों ने जम्मू एवं कश्मीर के पुंछ क्षेत्र में स्थित गल्ली नामक स्थान पर सूबेदार लेख राम की कमान में केन्द्रीय आरक्षित पुलिस चौकी पर आक्रमण किया । केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के जवानों ने चौकी पर आक्रमणकारियों का बहादुरी से सामना किया और आक्रमण को विफल कर दिया । आगामी सप्ताह में चौकी पर आक्रमणकारियों ने भारी गोलाबारी कर काफी दबाव डालने के प्रयत्न जारी रखे । सूबेदार लेख राम के सुयोग्य नेतृत्व में, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस ने आक्रमणकारियों को दूरी पर रखा और जब चौकी घेरे में आ गई तो बिना पर्याप्त अन्न एवं जल के उन्होंने 15 अगस्त 1965 तक शूरवीरता से प्रतिरोध जारी रखा जब दुर्भाग्य-वश उन्हें चौकी छोड़नी पड़ी ।

भारी एवं केन्द्रित गोलाबारी के दौरान सूबेदार लेख राम ने शत्रु का सामना करने के लिये बराबर एक बन्कर से दूसरे बन्कर में जा-जा कर अपने जवानों को उत्साहित कर, नेतृत्व का सुन्दर उदाहरण दिया ।

युद्ध के दौरान कान्स्टेबल नरेश मिश्र का बन्कर एक राकेट से बुरी तरह नष्ट हो गया । इसके विपरीत, वह अपनी चौकी पर डटे रहे और तब तक गोलीबारी जारी रखी जब तक कि उनकी घावों से मृत्यु न हो गई ।

2. ये पदक राष्ट्रपति के पुलिस तथा अग्नि शमन सेवा पदक के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिये जा रहे हैं तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 15 अगस्त 1965 से दिया जायेगा ।

सं० 67-प्रेज०/66—राष्ट्रपति केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री पिरथी,
स्वीपर सं० एफ०/513,
6ठी बटालियन,
केन्द्रीय आरक्षित पुलिस,
नीमच ।

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया।

7 अगस्त 1965 की रात को युद्ध विराम रेखा पार से आक्रमणकारियों ने जम्मू एवं कश्मीर के पुंछ क्षेत्र में स्थित गल्ली नामक स्थान पर सूबेदार लेखराम की कमान में केन्द्रीय आरक्षित पुलिस चौकी पर आक्रमण किया। केन्द्रीय आरक्षित पुलिस के जवानों ने चौकी पर आक्रमणकारियों का बहादुरी से सामना किया और आक्रमण को विफल कर दिया। आगामी सप्ताह में चौकी पर आक्रमणकारियों ने भारी गोलाबारी कर काफी दबाव डालने के प्रयत्न जारी रखे। सूबेदार लेखराम के सुयोग्य नेतृत्व में, केन्द्रीय आरक्षित पुलिस ने आक्रमणकारियों को दूरी पर रखा और जब चौकी घेरे में आ गई तो बिना पर्याप्त अन्न एवं जल के उन्होंने 15 अगस्त 1965 तक शूरवीरता से प्रतिरोध जारी रखा जब दुर्भाग्यवश उन्हें चौकी छोड़नी पड़ी।

इस लड़ाई के दौरान, स्वीपर पिरथी ने एक घायल जवान की राईफल उठा ली और गोलीबारी करने में उसके स्थान पर डट गया। वह अपनी सुरक्षा की परवाह न कर, गोलियों से आच्छादित क्षेत्र में, स्वेच्छा से गोला बारूद के बक्सों को ले कर एक बन्कर से दूसरे बन्कर में जाता रहा।

स्वीपर पिरथी ने उत्कृष्ट साहस और उदाहरणीय कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. यह पदक पुलिस पदक नियमावली के नियम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 15 अगस्त 1965 से दिया जायेगा।

दिनांक 29 सितम्बर 1966

सं० 75-प्रेज़०/66—राष्ट्रपति, पंजाब पुलिस के निम्नांकित अधिकारी को उसकी वीरता के लिये पुलिस पदक प्रदान करते हैं :—

अधिकारी का नाम तथा पद

श्री ओम प्रकाश,
पुलिस कान्स्टेबल सं० 20/765,
20वीं, बटालियन, पंजाब सशस्त्र पुलिस,
पंजाब। (स्वर्गीय)

सेवाओं का विवरण जिनके लिये पदक प्रदान किया गया

1965 के आक्रमण के समय पंजाब सशस्त्र पुलिस की 20वीं बटालियन से सम्बद्ध कान्स्टेबल ओम प्रकाश फाजिल्का सेक्टर में सेना की यूनिटों के साथ तैनात थे। कान्स्टेबल ओम प्रकाश ने सेना जमाव के आगे स्थित निरीक्षण चौकी पर ड्यूटी के लिये स्वयं को प्रस्तुत किया और दोनों ओर से की जा रही गोलाबारी के बावजूद चौकी की रक्षा की और महत्वपूर्ण जानकारी एकत्रित की। 19 सितम्बर, 1965 की रात्रि को दोनों ओर से गोलाबारी तेज़ हो गई किन्तु कान्स्टेबल ओम प्रकाश अपने मोर्चे पर डटे रहे और वीरगति को प्राप्त हुये।

कान्स्टेबल ओम प्रकाश ने साहस एवं कर्त्तव्यपरायणता का विशिष्ट उदाहरण प्रस्तुत कर अपने जीवन का बलिदान कर दिया।

2. यह पदक पुलिस नियमावली के यिम 4(i) के अन्तर्गत वीरता के लिये दिया जा रहा है तथा फलस्वरूप नियम 5 के अन्तर्गत विशेष स्वीकृत भत्ता भी दिनांक 19 सितम्बर, 1965 से दिया जायगा।

दिनांक 30 सितम्बर 1966

सं० 68-प्रेज़/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्ति द्वारा प्रदर्शित अति असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उसको विशिष्ट सेवा मैडल "प्रथम श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

ब्रिगेडियर भूमि चन्द चौहान (आई० सी० 660)।

सं० 69-प्रेज़/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित असाधारण विशिष्ट सेवाओं के उपलक्ष्य में उनको, विशिष्ट सेवा मैडल, "द्वितीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

कप्तान सुनील राजेन्द्र, आई० एन०।

लेफ्टिनेंट कर्नल जोगिन्दर सिंह खुराना (एम० आर० 423), ए० एम० सी०।

लेफ्टिनेंट कर्नल हरदेव सिंह क्लर (आई० सी० 993) सिगनल्स।

लेफ्टिनेंट कर्नल (कुमारी) स्टेल्ला डोमिनिका पिकारडो (एन० 18369), एम० एन० एस०।

लेफ्टिनेंट कर्नल कीथ शौर्टलैंड्स (आई० सी० 1564), आर्टिलरी।

मेजर हंस राज लूथरा (एम० आर० 779), आर्मी मेडिकल कोर।

सं० 70-प्रेज़/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को अगस्त-सितम्बर, 1965 में पाकिस्तान के विरुद्ध संक्रिय में प्रदर्शित वीरता के लिये "महावीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1 मेजर-जनरल मोहिन्दर सिंह (आई० सी०-524), एम० सी०।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर 1965)

9 सितम्बर, 1965 को मेजर-जनरल मोहिन्दर सिंह ने लाहौर सेक्टर में एक इन्फैंट्री डिवीजन की कमान संभाली। उनके कमान सम्भालने के तुरन्त बाद उस डिवीजन को इच्छोगिल नहर की लड़ाई में कूदना पड़ा। अपने उत्साह, निश्चय तथा नेतृत्व से मेजर-जनरल मोहिन्दर सिंह ने इस विरचना में एक नया उत्साह पैदा कर दिया। अपनी सुरक्षा की परवाह किये बिना वह एक विरचना से दूसरी तक जाते रहे और अपने अधीनस्थ कमाण्डरों के सम्मुख कठिन कार्यों को पूरा करने के लिये एक उच्च उदाहरण प्रस्तुत किया।

9 सितम्बर से 23 सितम्बर, 1965 के मध्य मेजर-जनरल मोहिन्दर सिंह ने कुशल संक्रियात्मक योजनायें बनाईं तथा अदम्य साहस दिखाया तथा फलस्वरूप उनके अधीनस्थ इन्फैंट्री ब्रिगेड्स इच्छोगिल उत्तर पुल और डोगराई को अपने कब्जे में करने में सफल हुई।

2 लेफ्टिनेंट कर्नल सम्पूरन सिंह (आई० सी०-8041), वीरचक्र,
पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर 1965)

हाजी पीर दर्रे पर कब्जा करने के बाद, कहूता को जाने वाली सड़क पर कब्जा करना आवश्यक हो गया। जब शत्रु की भारी शक्ति के कारण यह कार्य बहुत ही कठिन हो गया तो लेफ्टिनेंट कर्नल सम्पूरन सिंह को सामरिक महत्व के एक पहाड़ी स्थान पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया। यह स्थान एक इन्फैंट्री ब्रिगेड के अग्रिम स्थिति से सम्बन्ध स्थापित करता है। अपनी टुकड़ी के साथ वह तुरन्त आगे बढ़े तथा शत्रु पर हमला कर पहाड़ी को अपने कब्जे में कर लिया और इस प्रकार सम्बन्ध स्थापित कर लिया। अपनी सुरक्षा की परवाह न कर वह और आगे बढ़े तथा लगातार तीन हमले कर शत्रु को पीछे धकेल दिया।

इस सम्पूर्ण संक्रिया में लेफ्टिनेंट कर्नल सम्पूरन सिंह ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

3 कप्तान कपिल सिंग थापा (आई० सी०-14682), जाट रेजिमेंट (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि–21 सितम्बर, 1965)

21/22 सितम्बर, 1965 की रात्रि को कप्तान कपिल सिंग थापा को डोगराई की लड़ाई में डोगराई गांव के उत्तरी-पश्चिमी किनारे पर कब्जा करने का कार्य सौंपा गया था। अपने सैनिकों के साथ वह स्वयं सुरंगें बिछे हुए भूभाग से होते हुए आगे बढ़े और शत्रु ठिकानों पर आक्रमण किया। उन्होंने शत्रु पर ग्रेनेडों तथा संगीनों से प्रहार किये और अपने लक्ष्य पर अधिकार कर लिया, किन्तु मुठभेड़ में वे स्वयं वीरगति को प्राप्त हुए।

कप्तान कपिल सिंग थापा ने उत्कृष्ट वीरता तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्चतम परम्पराओं के अनुरूप है।

4. जे० सी०-7526 सूबेदार टीकाबहादुर थापा, गोरखा राईफल्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि–30 सितम्बर 1965)

सूबेदार टीकाबहादुर थापा गोरखा राइफल्स की बटालियन की एक कम्पनी के प्रवर जे० सी० ओ० थे। इस कम्पनी को जम्मू तथा कश्मीर में कुछ लक्ष्यों से शत्रु को हटाने का कार्य सौंपा गया था। इन लक्ष्यों को पाकिस्तानी सेना ने युद्ध-विराम के पश्चात् दबा लिया था। जब सूबेदार थापा ने लक्ष्यों पर कब्जा कर लिया तो शत्रु ने उनकी कम्पनी पर जवाबी हमला किया, जिसको विफल कर दिया गया। शत्रु ने जब दूसरा जवाबी हमला किया तो सूबेदार थापा ने अपने दो साथियों के साथ धावा बोला और शत्रु को आगे बढ़ने से रोक दिया। इस मुठभेड़ में जब तोपखाने से संचार व्यवस्था टूट गई तो वह स्वयं एक दूसरी स्थिति से एक मार्टर ले आये और अकेले ही गोला-बारी की, किन्तु अचानक उन्हें शत्रु की एक गोली लगी। गहरा घाव होने के बावजूद वह फायर करने का आदेश देते रहे और इस प्रकार शत्रु को आगे बढ़ने से रोक दिया, किन्तु जख्मों के कारण वीरगति को प्राप्त हुए।

सूबेदार टीकाबहादुर थापा ने उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो भारतीय सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

5. लेफ्टिनेंट कर्नल संत सिंह (आई० सी०—5479), सिख लाईट इन्फैंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—2 नवम्बर 1965)

2/3 नवम्बर, 1965 की रात्रि को लेफ्टिनेंट कर्नल संत सिंह को एक लक्ष्य से पाकिस्तानी सेना को हटाने का कार्य-भार सौंपा गया था जिस पर शत्रु ने युद्ध-विराम की अवहेलना कर कब्जा कर लिया था। यह एक कठिन स्थान था और शत्रु द्वारा भली प्रकार सुरक्षित था। शत्रु द्वारा बिछाई हुई सुरंगों तथा गोला-बारी के बावजूद लेफ्टिनेंट कर्नल संत सिंह अपने आदमियों को लेकर आगे बढ़े और शत्रु पर धावा बोल दिया और हाथों-हाथ लड़ाई के बाद उन्होंने शत्रु को लक्ष्य से खदेड़ दिया। उसके बाद अपनी स्थिति का लाभ उठाते हुए वह शत्रु की तोपों और स्वचालित हथियारों से होने वाली गोला-बारी के बावजूद एक बंकर से दूसरे बंकर में गये और अपने सैनिकों को उत्साहित कर एक और लक्ष्य से शत्रु को भगा दिया जिसे पाकिस्तानी सेना ने दबा लिया था।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल संत सिंह ने उच्चकोटि के उत्कृष्ट साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

स० 71-प्रेज/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्ति को वीर चक्र का बार प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश चन्द्र जोशी, (आई० सी० 5054), वीर चक्र, सेन्ट्रल इन्डिया हार्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

सेन्ट्रल इन्डिया हार्स के कमांडिंग अफसर लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश चन्द्र जोशी को बर्की पर अधिकार करने के लिये एक सिख बटालियन को समीपवर्ती सहायता देते हुए खालरा-लाहौर सड़क के साथ आगे बढ़ने और उसके बाद इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे पर पंजाब रेजिमेंट की एक बटालियन के साथ आगे बढ़ते रहने का कार्य-भार सौंपा गया। उनके निर्देशन में उनके सैनिकों ने 10/11 सितम्बर, 1965 की रात्रि को सिख रेजिमेंट की बटालियन को बर्की पर अधिकार करने में बड़ी उपयोगी सहायता दी। उसके बाद शत्रु सुरंगों के बिछे हुए भूभाग के कारण कुछ समय के लिये उनका आगे बढ़ना रुक गया। लेफ्टिनेंट कर्नल जोशी स्वयं आगे गये तथा शत्रु सुरंगों के बीच किसी सुरक्षित रास्ते की खोज करने का प्रयत्न किया। किन्तु ऐसा करते समय उनका टैंक एक शत्रु सुरंग से बेकार हो गया। शत्रु की भारी लगातार गोला-बारी की उपेक्षा कर वह बर्की तक पैदल गये और एक जीप ली। जीप को लेकर स्वयं उन्होंने नहर के किनारे सुरंगों के मध्य सुरक्षित रास्ते की खोज की। उनके कार्य से उत्साहित टैंक चालकों ने इन्फैंट्री को अपना कार्य पूरा करने में बहुत ही उपयोगी सहायता दी। लेफ्टिनेंट कर्नल जोशी की जीप एक सुरंग पर जाने से उड़ गई तथा वह बुरी तरह घायल हो गये और बाद में उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल सतीश चन्द्र जोशी ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

सं० 72—प्रेज/66—राष्ट्रपति, निम्नांकित व्यक्तियों को उनकी वीरता के लिए "वीर चक्र" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं:—

1. 4144088–पी०ए०/नायक राम कुमार, कुमाऊं रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 अगस्त 1965)

7 अगस्त, 1965 को नायक राम कुमार कुमाऊं रेजिमेंट के दो सेक्शनों में से एक सेक्शन के कमांडर थे, जो करालपुर पुल पर सुरक्षात्मक कार्य पर था। लगभग 11-30 बजे रात्रि शत्रु ने करालपुर गांव से गोला-बारी प्रारम्भ कर दी और पुल पर राकेट फेंके। गांव वालों को जानी नुकसान से बचाने के लिए नायक राम कुमार को कम दूरी पर मार करने वाले शस्त्रों का प्रयोग करना पड़ा। इसी बीच उनके सेक्शन के काफी सैनिक हताहत हो गए और उनका कमांडर जख्मी हो गया। अपनी सुरक्षा की परवाह न कर वह कमांडर को पुल से दूर उठा ले गए। वह स्वयं भी ग्रेनेडों के टुकड़ों से जख्मी हो गए। इसके बावजूद नायक राम कुमार शत्रु के उस दस्ते की ओर बढ़े जो पुल को नष्ट करने जा रहा था। वह एक शत्रु सैनिक से भिड़ गए तथा एक हथ-गोला फेंका जिससे पुल तोड़ने का सामान लाने वाला शत्रु सैनिक जख्मी हो गया और दूसरे भाग गए। किन्तु अपने ही हथगोले के फटने के कारण स्वयं नायक राम कुमार की मृत्यु हो गई।

नायक राम कुमार ने अटट साहस तथा उच्च कोटि की कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

2. मेजर रनबीर सिंह (आई० सी०—11072), पंजाब रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 अगस्त 1965)

9/10 अगस्त, 1965 की रात्रि को मेजर रनबीर सिंह के नेतृत्व में उड़ी सेक्टर में घुसपैठियों को पकड़ने के लिए एक टोह टुकड़ी को भेजा गया। घुसपैठियों ने इस टोह टुकड़ी पर दो स्थानों से गोली-बारी आरम्भ कर दी। अपने दो सेक्शनों को रक्षात्मक गोली-बारी करने का आदेश देकर, मेजर रनबीर सिंह एक दूसरे सेक्शन को शत्रु के पीछे की स्थिति में ले गए। तब उन्होंने बड़ी तेजी से शत्रु शक्ति पर हमला किया,

जो उनसे अधिक तादाद में थे, तथा उसे तहस-नहस कर दिया और उनके अनेक स्वचालित हथियार अपने कब्जे में कर लिए।

पुनः 21 सितम्बर, 1965 को मेजर रनबीर सिंह को जम्मू तथा कश्मीर में एक लक्ष्य पर कब्जा करने का आदेश दिया गया। जब वह लक्ष्य के समीप आए तो उन्हें शत्रु की भारी गोला-बारी का सामना करना पड़ा तथा उनकी दोनों टांगें जख्मी हो गईं। जख्मी होने के बावजूद वह अपनी टुकड़ी को आगे ले गए किन्तु शत्रु की एक गोली उनकी छाती में लगी और वह वीर गति को प्राप्त हुए। फिर भी उनकी टुकड़ी ने लक्ष्य पर कब्जा करने के साथ-साथ बहुत से स्वचालित हथियार तथा बेतार-के-तार के उपकरणों को अपने अधीन कर लिया।

इस कार्यवाही में मेजर रनबीर सिंह ने वीरता, सूझ-बूझ तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

3. लेफ्टिनेंट कर्नल आर० एन० मिश्रा (आई० सी० 2489), पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—23 अगस्त, 1965)

23 अगस्त, 1965 को लेफ्टिनेंट कर्नल आर० एन० मिश्रा गौहरा पर एक बटालियन के हमले की कमान कर रहे थे जिस पर शत्रु ने हमारी भूमि में आए घुसपैठियों से सम्पर्क व्यवस्था बनाये रखने के लिए कब्जा कर लिया था। तोपखाने और मझौली मशीन-गन की विरोधी गोला-बारी के बावजूद लेफ्टिनेंट कर्नल मिश्रा ने अपनी बटालियन को आगे बढ़ाया तथा गौहरा पर कब्जा कर लिया। इस प्रकार हमारे सैनिको का कालीधर से सम्पर्क हो गया। उसके बाद जब शत्रु ने कालीधर चौकियों पर निर्धारित हमले किए तो लेफ्टिनेंट कर्नल मिश्रा ने अपने सैनिकों को अपनी स्थिति पर डटे रहने के लिए उत्साहित किया और उन्होंने हमारे सैनिकों को उस क्षेत्र से हटाने के लिए किए गए शत्रु के सारे प्रयत्न विफल फलकर दिए।

सम्पूर्ण कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल आर० एन० मिश्रा ने उच्च-कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

4. 3353717 सिपाही गुरमेल सिंह, सिख रेजिमेंट। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—25 अगस्त, 1965)

25 अगस्त, 1965 को जम्मू तथा कश्मीर में शत्रु की एक स्थिति पर हमारी एक कम्पनी का प्रहार अवरुद्ध हो गया, क्योंकि इस स्थिति पर पहुंचने का एक मात्र रास्ता शत्रु की मझौली तथा हल्की मशीन-गनों की गोला-बारी से आच्छादित था। सिपाही गुरमेल सिंह, जो अगले सेक्शन में थे, आगे बढ़े तथा सीधे शत्रु की हल्की मशीन-गन पर धावा बोला और उसकी नली पकड़ कर ऊपर खींचा किन्तु ऐसा करते समय शत्रु की हल्की मशीन-गन के एक विस्फोट से उनकी मृत्यु हो गई।

सिपाही गुरमेल सिंह ने उदाहरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जो सेना के उच्च परम्पराओं के अनुरूप हैं।

5. ऐक्टिंग कप्तान मूर्ती दुरिन्द्रा नायडू, (ई० सी० 51623), आर्टीलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—26 अगस्त, 1965)

कप्तान मूर्ती दुरिन्द्रा नायडू पैराशूट रेजिमेंट की एक बटालियन की अग्र-गामी कम्पनियों में से एक कम्पनी के अग्रिम प्रेक्षण अफसर थे। इस बटालियन ने जम्मू तथा कश्मीर में शत्रु के एक स्थान पर 26/27 अगस्त, 1965 को आक्रमण किया। जब अग्रिम कम्पनियां शत्रु की मझौली मशीन-गनों की भारी गोला-बारी में आ गईं तथा हमारे सैनिकों का आगे बढ़ना कठिन हो गया तो कप्तान नायडू ने एक सुस्थिति लेकर तोपखाने से प्रभावी गोला-बारी की जिससे हमारी बटालिन ने अपने लक्ष्य पर कब्जा कर लिया। पुनः 20 सितम्बर, 1965 को वह अपनी बटालियन की एक अग्र-गामी कम्पनी के साथ थे जिसे एक दूसरे लक्ष्य पर कब्जा करना था। कप्तान नायडू शत्रु की भारी गोला-बारी एवं मझौली मशीन-गनों के सम्मुख बाहर आए तथा एक सुस्थिति ली और वहां से तोपखाने को ठीक निशानों पर मार करने के आदेश दिए। इस कार्यवाही में वह सख्त घायल हो गए किन्तु स्थिति की गम्भीरता का अनुमान कर उन्होंने अपने को वहां से निकाले जाने से इन्कार कर दिया और करीब 3 घंटे तक गोली चलाते रहे तथा उसके बाद बेहोश हो गए। उनकी साहसिक कार्यवाही ने पैदल सेना को शत्रु के लगातार जवाबी हमलों को विफल करने में समर्थ बनाया।

सम्पूर्ण सक्रिया में ऐक्टिंग कप्तान मूर्ती दुरिन्द्रा नायडू ने साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप है।

6. लेफ्टिनेंट कर्नल मदन लाल चड्ढा (आई० सी०-2303), पैराशूट रेजिमेंट। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—31 अगस्त, 1965)

लेफ्टिनेंट कर्नल मदन लाल चड्ढा हाई आल्टीचूड वारफेयर स्कूल, जम्मू तथा कश्मीर, के कमान्डेंट थे। यह खबर मिलने पर कि पाकिस्तानी घुसपैठिए महत्वपूर्ण श्रीनगर-लेह सड़क को प्रयोग करने वाले हमारे सैनिकों की कार्यविधियों में हस्तक्षेप कर रहे हैं, उन्होंने घुसपैठियों के विरुद्ध समीप-सुरक्षा तथा अक्रामक कार्यवाही के लिए सोनेमार्ग में एक गैरिजन का संगठन किया। उन्होंने शत्रु के सभी सम्भावित रास्तों पर प्रबल गश्त का प्रबन्ध किया तथा इस प्रकार सार्थी (कानवाय) के लिए सुरक्षित रास्ता बनाया। अन्य दो अवसरों पर लेफ्टिनेंट कर्नल चड्ढा ने शत्रु पर हमला करने के लिये अपने सैनिकों का अग्र-गमन किया। हमले से 6 शत्रु सैनिक मारे गए तथा शेष हथियार और गोला-बारूद छोड़कर भाग गए। एक बार लेफ्टिनेंट कर्नल चड्ढा को आदेश हुआ कि वह एक कार्य के लिए, जिसमें सोनेमार्ग से श्रीनगर की ओर 30 मील तक 12,000 फीट तक की ऊंचाई पर कार्य करना था, स्कूल के साधनों से एक तदर्थ कम्पनी को तैयार करें। जब एन० सी० ओ० विद्यार्थी और एन० सी० ओ० प्रशिक्षकों से बनी हुई कम्पनी एक पुल के पास पहुंची तो वह शत्रु की गोला-बारी में आ गई। लेफ्टिनेंट कर्नल चड्ढा ने तेजी से अपने आदमियों को संगठित किया तथा शत्रु को पीछे खदेड़ दिया। जब कम्पनी और आगे बढ़ी तो शत्रु ने अग्रिम प्लाटून पर गोला-बारी की। जब लेफ्टिनेंट कर्नल चड्ढा अपने सैनिकों को कार्यवाही के लिए आदेश देने तथा उन्हें स्थितियों पर लगाने का कार्य कर रहे थे तो शत्रु की एक गोली उन्हें लगी तथा उनकी मृत्यु हो गई।

सम्पूर्ण कार्यवाही में लेफ्टिनेंट कर्नल मदन लाल चड्ढा ने साहस, पहल-शक्ति तथा सूझ-बूझ का प्रदर्शन किया।

7. कप्तान चितूर सुबरामनियम कृष्णन्, (आई० सी० 8590), आर्टिलरी रेजिमट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर, 1965)

1 सितम्बर, 1965 को जब पाकिस्तानी सेना ने छम्ब क्षेत्र में एक भारी हमला किया तो कप्तान चितूर सुबरामनियम कृष्णन् ने शत्रु तोपखाने का पता लगाने के लिए इस क्षेत्र पर उड़ान की। शत्रु गोला-बारी की परवाह न कर उन्होंने शत्रु तोपों पर वार किए और उन्हें शान्त कर दिया।

जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में वायु संक्रिया उड़ानों के कमान अफसर होने के नाते कप्तान कृष्णन् ने अपनी उड़ान से घुसपैठियों पर तोपखाने से गोला-बारी करने का निर्देशन किया और उनमें से बहुतों को हताहत किया। इस दौरान उन्होंने करीब 60 घंटों की उड़ानें कीं जिसमें 45 घंटे की संक्रियात्मक उड़ानें थीं।

इस कार्यवाही में कप्तान चितूर सुबरामनियम कृष्णन् ने उच्च-कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

8. जे० सी०—16959 नायब सूबेदार दाम्बर बहादुर खत्री, गोरखा राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

1 सितम्बर, 1965 को एक कम्पनी, जो सोनेमार्ग की ओर आगे बढ़ रही थी, शत्रु घुसपैठियों द्वारा घेर ली गई। अग्रिम प्लाटून के कमान्डर नायब सूबेदार दाम्बर बहादुर खत्री को आदेश हुआ कि वह शत्रु अधिकृत एक पहाड़ी पर अपना कब्जा करें। उन्होंने उस पहाड़ी को अपने कब्जे में कर लिया और यह देख कर कि शत्रु उत्तर की ओर पीछे हट रहा है, उन्होंने उसका पीछा किया। उसके बाद पीछे हटते हुए शत्रु के साथ मुठभेड़ आरम्भ हो गई। अपनी रक्षा की परवाह न कर, नायब सूबेदार खत्री शत्रु की एक हल्की मशीन-गन के समीप गए तथा चालक को गोली से मार कर मशीन-गन को अपने कब्जे में कर लिया। उन्होंने और अनेक घुसपैठियों को मार गिराया।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार दाम्बर बहादुर खत्री ने उदाहरणीय साहस और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जो सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप हैं।

9. 4141048 हवलदार देवी प्रकाश सिंह, कुमाऊं रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

छम्ब क्षेत्र में संक्रिया के समय, हवलदार देवी प्रकाश सिंह का बाजू अग्रिम स्थिति में एक प्लाटून की कमान करते समय शत्रु की गोली से जख्मी हो गया था। कम्पनी कमान्डर ने उन्हें आदेश दिया कि वह रेजिमेंटल सहायता चौकी पर जायें और वहां ठहरें। फिर भी वह अपने साथियों के साथ लड़ने के लिए गए तथा प्लाटून क्षेत्र पर पहुंचने पर देखा कि चार शत्रु टैंक उनकी स्थिति की ओर आ रहे हैं। अपनी चोट की परवाह न कर, उन्होंने शत्रु पर एक राकेट लांचर से निशाना साधा किन्तु इसके पहले कि वह फायर करते, उनकी कमर में शत्रु की ब्राउनिंग मशीन-गन की गोली लगी और वह जख्मी हो गए। वह फिर उठे और एक शत्रु टैंक पर गोला चला दिया। यह टैंक बाद में ध्वस्त किया गया। शत्रु के अन्य टैंक पीछे हट गए। इसके बाद हवलदार देवी प्रकाश सिंह चोटों के कारण वीर गति को प्राप्त हुए।

इस कार्यवाही में हवलदार देवी प्रकाश सिंह ने उदाहरणीय साहस, पहलशक्ति तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप हैं।

10. 5834480 राईफलमैन धन बहादुर मल्ला, गोरखा राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—1 सितम्बर 1965)

1 सितम्बर, 1965 को गोरखा राईफल्स की एक कम्पनी सोनेमार्ग की ओर बढ़ते समय पाकिस्तानी घुसपैठियों के घेरे में आ गई। जब हमारी एक प्लाटून शत्रु का पहाड़ी पर पीछा कर रही थी तो शत्रु की एक हल्की मशीन-गन ने कुछ समय के लिए उसका आगे बढ़ना रोक दिया। राईफलमैन धन बहादुर मल्ला, जो दाहिनी सेक्शन में थे, घिसट कर आगे बढ़े और शत्रु की हल्की मशीन-गन की स्थिति के पीछे गए तथा गनर को संगीन से मार दिया। उसके बाद उन्होंने शत्रु को और पीछे भगाने के लिए उसी मशीन-गन का प्रयोग किया।

इस कार्यवाही में राईफलमैन धन बहादुर मल्ला ने उदाहरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

11. ऐक्टिंग मेजर सत प्रकाश वर्मा (आई० सी० 14015), गोरखा राईफल्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—3 सितम्बर 1965)

मेजर सत प्रकाश वर्मा एक दल के अग्रिम कम्पनी कमान्डर थे। इस दल को जम्मू तथा कश्मीर में एक लक्ष्य पर जहां एक ऊंची पत्थर की दीवार थी, आक्रमण करने का काम दिया गया। जब उनके आक्रमण को शत्रु ने कुछ समय के लिये रोक दिया तो उन्होंने राकेट टुकड़ी की मार का निर्देशन किया और पत्थर की दीवार तथा शत्रु बंकरों को तोड़ने में सफल हो गये। फलस्वरूप उन्होंने शत्रु की अग्रिम स्थितियों को रौंद डाला। शत्रु की भारी गोला-बारी के बावजूद उन्होंने अपने जवानों को साहस के साथ आगे बढ़ाया तथा शत्रु के बंकरों को एक के बाद एक को नष्ट कर दिया। जब दो पाकिस्तानी सैनिकों ने बाहर आकर उन पर आक्रमण किया तो उन्होंने उन्हें अपनी खुखरी से मार गिराया। शत्रु की मझौली मशीन-गन के दो विस्फोट उनके पेट में लगे, किन्तु फिर भी उन्होंने अपने सैनिकों को उत्साहित किया तथा इस प्रकार लक्ष्य पर कब्जा हो गया। उसके बाद जख्मों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

एक्टिंग मेजर सत प्रकाश वर्मा ने उच्च-कोटि की वीरता तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

12. ऐक्टिंग मेजर जगदीश सिंह (आई० सी० 6703), आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—5 सितम्बर 1965)

5/6 सितम्बर, 1965 की रात्रि को मेजर जगदीश सिंह एक कम्पनी के साथ थे जिसने पुंछ में एक लक्ष्य पर आक्रमण किया। शत्रु की स्थिति से कुछ दूरी पर यह कम्पनी शत्रु की भारी गोला-बारी में आ गई तथा मेजर सिंह जख्मी हो गये। जख्मों की परवाह न कर वह बटालियन कमान्डर के साथ लक्ष्य तक गये तथा तोपखाने को ठीक निशाने पर मार का निर्देशन किया। इस प्रकार वह अपने सैनिकों को अधिक संख्या में हताहत होने से बचाने में सफल हुये।

सम्पूर्ण संक्रिया में ऐक्टिंग मेजर जगदीश सिंह ने उदाहरणीय साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

13. मेजर गिरीश चन्द्र वर्मा (आई० सी० 12453), डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को मेजर गिरीश चन्द्र वर्मा पुंछ क्षेत्र में शत्रु द्वारा भली प्रकार से रक्षित एक चौकी पर अपनी कम्पनी के हमले का नेतृत्व कर रहे थे। शत्रु की भारी गोला-बारी के सम्मुख अपने सैनिकों को आगे बढ़ने के लिये उत्साहित करने तथा आक्रमण का निर्देशन करने के लिये मेजर वर्मा अगली पंक्ति में बढ़ गये। दोनों ओर से धुआंधार गोला-बारी तथा हथगोलों के फेंके जाने के बाद शत्रु सैनिकों को पहली पंक्ति की खाईयों तथा बंकरों से पीछे हटा दिया। उसके बाद हुई हाथापाई में शत्रु सैनिकों को सारे बंकरों से खदेड़ दिया गया। लक्ष्य के आखरी किनारे पर डट-कर हुई लड़ाई में मेजर वर्मा को शत्रु की गोली लगी और उनकी मृत्यु हो गई। फिर भी उनकी कम्पनी ने लक्ष्य पर पूर्ण रूप से कब्जा कर लिया।

मेजर गिरीश चन्द्र वर्मा ने उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

14. कप्तान प्रभु सिंह (आई० सी० 13317), राजपूताना राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को कप्तान प्रभु सिंह एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे खेमकरन सेक्टर में फत्तीवाला पर एक शत्रु चौकी को कब्जे में करने का आदेश हुआ। अल्प जानकारी के होने तथा शत्रु द्वारा कठिन मुकाबिले के बावजूद उन्होंने एक प्लाटून का अग्र-गमन करते हुए शत्रु चौकी पर अधिकार कर लिया।

9 सितम्बर, 1965 को शत्रु ने दूसरी कम्पनियों पर आक्रमण में विफल होकर टैंकों के साथ कप्तान प्रभु सिंह की कम्पनी पर हमला कर दिया। कप्तान प्रभु सिंह प्रत्येक प्लाटून में गये तथा

अपने सैनिकों को स्थिति पर डटे रहने के लिये उत्साहित किया। अन्ततः वह शत्रु के आक्रमण को विफल करने में सफल हुए।

सम्पूर्ण संक्रिया में कप्तान प्रभु सिंह ने साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया जो सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप है।

15. 2/लेफ्टिनेंट एन० चन्द्र शेखरन नायर, (ई० सी० 58730), इन्जीनियर्स कोर।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1966)

6 सितम्बर से 22 सितम्बर, 1965 तक 2/लेफ्टिनेंट एन० चन्द्र शेखरन नायर एक इन्जीनियर प्लाटून की कमान कर रहे थे। शत्रु के तोपखाने तथा छोटे हथियारों की गोला-बारी के बावजूद उन्होंने डेरा बाबा नानक पुल के पास टैंक विरोधी सुरंगे बिछाई। उन्होंने कई बार शत्रु की कार्यविधियों से पुल को पहुंची हानि का अनुमान लगाने के लिये टोह कार्य भी किया तथा भविष्य की योजना के लिये महत्वपूर्ण सूचनायें दीं।

सम्पूर्ण संक्रिया में 2/लेफ्टिनेंट एन० चन्द्र शेखरन नायर ने सराहनीय साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

16. 2/लेफ्टिनेंट शशिन्द्र सिंह (ई० सी० 58105), गोरखा राईफल्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को 2/लेफ्टिनेंट शशिन्द्र सिंह एक कम्पनी की एक अग्रिम प्लाटून के कमान्डर थे जिसे अखनूर-जौरियन सड़क पर आगे बढ़ने का आदेश हुआ था। शत्रु ने अनेक सशस्त्र विलम्ब-कारी दल यहां पर छोड़ रखे थे। 2/लेफ्टिनेंट सिंह ने तीव्र कार्र-वाई करके शत्रु की कई स्थितियों का सफाया कर दिया। शत्रु की अन्तिम विलम्बकारी स्थिति पर जब उनका प्लाटून शत्रु के तोपखाने, मार्टरों तथा मशीन-गन की भारी गोला-बारी में आ गया तो उन्होंने अपने सैनिकों को संगठित किया और शत्रु पर धावा बोल दिया। लड़ाई में शत्रु की मशीन-गन का एक विस्फोट उनकी टांग में लगा और वह गिर गये। यह अनुमान कर कि उनका प्लाटून आगे नहीं बढ़ सकता, उन्होंने एक हल्की मशीन-गन छीनी और प्लाटून को पीछे हटने में सहायतार्थ रक्षात्मक गोली चलानी प्रारम्भ कर दी और शत्रु के मशीन-गन के एक विस्फोट से दोबारा जख्मी होने तक वह गोली चलाते रहे। चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

2/लेफ्टिनेंट शशिन्द्र सिंह ने उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो कि सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप है।

17. जे० सी० 8199 सूबेदार खजान सिंह, जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को जब सूबेदार खज़ान सिंह की कम्पनी का शत्रु की एक सुव्यवस्थित खाइयों में स्थित मशीन-गनों और टैंक विरोधी गनों की सहायता प्राप्त कम्पनी से मुकाबिला हुआ तो उन्होंने अपनी कम्पनी के साथ इतना जबरदस्त हमला किया कि शत्रु 35 मृतकों तथा अनेक शस्त्र छोड़ कर भाग खड़ा हुआ। अन्ततः इन शस्त्रों को कब्जे में कर लिया गया। लड़ाई के दौरान शत्रु की एक गोली उनको लगी तथा वह बेहोश हो कर गिर पड़े। होश आने पर उन्होंने देखा कि शत्रु की एक मझौली मशीन-गन अब भी गोला-बारी कर रही थी। अपनी स्टेन-गन के साथ वह उसकी ओर आगे बढ़े और उसे शान्त कर दिया।

इस कार्यवाही में सूबेदार खज़ान सिंह ने उच्च-कोटि के उदाह-रणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

18. 2938013 नायब सूबेदार राजबीर सिंह, राजपूत रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को नायब सूबेदार राजबीर सिंह एक राईफल कम्पनी की एक प्लाटून का नेतृत्व कर रहे थे। इस कम्पनी को बेडियार क्षेत्र से शत्रु को भगाने का कार्य सौंपा गया था। जब शत्रु ने भारी गोला-बारी की तथा प्लाटून को आगे बढ़ने से रोक दिया तो सूबेदार सिंह ने शत्रु पर धावा बोल दिया। यद्यपि उनको शत्रु की एक गोली लगी किन्तु फिर भी वह धावा बोलते रहे। यह देख कर कि शत्रु के टैंक आगे बढ़ रहे हैं, उन्होंने एक रिड्रम-प्रोजेक्टर उठाया और शत्रु टैंकों पर गोला-बारी चालू कर दी। अन्ततः लक्ष्य पर कब्जा कर लिया गया।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार राजबीर सिंह ने सराहनीय साहस तथा पहल शक्ति का परिचय दिया।

19. 5429011 हवलदार इन्द्रबहादुर गुरुंग, गोरखा राईफल्स। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर 1965)

6 सितम्बर, 1965 को हवलदार इन्द्रबहादुर गुरुंग को शत्रु की दो मशीन-गन चौकियों का सफाया करने का कार्य सौंपा गया था। जो डेरा बाबा नानक के पास एक प्लाटून को आगे बढ़ने से रोक रही थी। हवलदार गुरुंग अपने दो साथियों के साथ आगे बढ़े तथा एक मशीन-गन चौकी के पास पहुंचे। उसके बाद वह अकेले आगे बढ़े तथा चौकी में एक गोला फेंक कर मशीन-गनों को शान्त कर दिया। वह और आगे बढ़े किन्तु जैसे ही वह एक अन्य स्वचालित गन चौकी के पास पहुंचे उनको एक विस्फोट लगा और वह बुरी तरह घायल हो गये। घायल होने के बावजूद वह चौकी में कूद पड़े और गनर को मार दिया। इस कार्यवाही में उनकी मृत्यु हो गई किन्तु उनके प्लाटून ने लक्ष्य पर कब्जा कर लिया।

हवलदार इन्द्रबहादुर गुरुंग ने अटूट साहस, दृढ़-निश्चय तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च-परम्पराओं के अनुरूप है।

20. 4140565 नायक कंवर सिंह, गार्ड्स् ब्रिगेड।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

6 सितम्बर, 1965 को नायक कंवर सिंह अपनी कम्पनी के राईफल सेक्शन की कमान कर रहे थे। यह कम्पनी लाहौर क्षेत्र में एक शत्रु स्थिति पर धावा बोल रही थी। जब उनके सेक्शन की हल्की मशीन-गन के दो चालक शत्रु की भारी गोला-बारी से बुरी तरह घायल हो गये तो उन्होंने शीघ्रता से हल्की मशीन-गन संभाल ली और मार्टर विस्फोटों से स्वयं जख्मी होने के बावजूद अनेकों शत्रु सैनिकों को हताहत किया। उन्होंने शत्रु की एक मशीन-गन चौकी को शान्त कर दिया। अपने घाव के बावजूद उन्होंने प्रभावशाली गोला-बारी जारी रखी और अपने प्लाटून को लक्ष्य पर पहुंचने में सफल बनाया। एका-एक शत्रु के एक मार्टर विस्फोट ने हल्की मशीन-गन तथा उनके दोनों हाथों को उड़ा दिया। इस पर भी वह, जब तक लक्ष्य पर अधिकार नहीं हो गया, अपने साथियों को उत्साहित करते रहे।

इस सम्पूर्ण संक्रिया में नायक कंवर सिंह ने उच्च कोटि के महान साहस पहलशक्ति तथा दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

21. 3951343 सिपाही सुख राम, डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

6 सितम्बर, 1965 को जब पुंछ क्षेत्र में सिपाही सुख राम का सेक्शन एक भली प्रकार से रक्षित शत्रु चौकी पर आक्रमण का अग्र-गमन कर रहा था तो उनकी कम्पनी को शत्रु की भारी गोला-बारी का सामना करना पड़ा जिसके फलस्वरूप उनका आगे बढ़ना असम्भव हो गया। सिपाही सुख राम चार गोलों के साथ आगे बढ़े। कठिन विरोध होने पर भी वह शत्रु के समीप पहुंचने में सफल हो गये और दो गोले शत्रु की एक खाई में फेंक कर हल्की मशीन-गन को नष्ट कर दिया। इसके बाद सिपाही सुख राम एक और हल्की

मशीन-गन की ओर लपके तथा एक गोला हल्की मशीन-गन चलाने वाले शत्रु सैनिक पर फेंक दिया। ऐसा करते समय हल्की मशीन-गन के दो विस्फोट उनके सिर और छाती में लगे जिसके कारण उनकी मृत्यु हो गई।

सिपाही सुख राम ने उच्च-कोटि के उदाहरणीय साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

22. 13657947 गार्ड्समैन दाम्बर बहादुर छेत्तरी,
गार्ड्स् ब्रिगेड। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—6 सितम्बर, 1965)

6 सितम्बर, 1965 को लाहौर क्षेत्र में शत्रु द्वारा भली प्रकार से रक्षित एक चौकी पर उनकी कम्पनी के आक्रमण के समय शत्रु की मझौली मशीन-गन के विस्फोटों से गार्ड्समैन दाम्बर बहादुर छेत्तरी की छाती में सख्त चोट लगी। अपने घावों के बावजूद वह अपने साथियों को उत्साहित करते रहे तथा शत्रु की मार्टर और मझौली मशीन-गन की गोला-बारी के सम्मुख आगे बढ़े जहां वह फिर बुरी तरह घायल हो गये। शत्रु के स्वचालित हथियारों की मार से वह तीसरी बार फिर बायें कन्धे तथा हाथ में गोली लगने से जख्मी हो गये। किन्तु वह लक्ष्य की प्राप्ति के लिये आगे बढ़ने का प्रयत्न करते रहे और अपने शस्त्र से गोली चला कर शत्रु को भारी सख्या में हताहत किया। अन्तिम धावे तथा लक्ष्य पर कब्जा होने के पश्चात् वह गिर पड़े और उनकी मृत्यु हो गई।

गार्ड्समैन दाम्बर बहादुर छेत्तरी ने उदाहरणीय साहस तथा दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

23. 2/लेफ्टिनेंट वीरेन्द्र प्रताप सिंह (ई० सी० 56107),
सिख लाईट इन्फैन्ट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

7-8 सितम्बर, 1965 की रात्रि को 2/लेफ्टिनेंट वीरेन्द्र प्रताप सिंह एक कम्पनी के कार्यकारी प्लाटून कमांडर थे। इस कम्पनी को कुन्दनपुर पाकिस्तानी चौकी पर आक्रमण करने का आदेश हुआ। यद्यपि वह घायल हो गये थे किन्तु फिर भी शत्रु के तोपखाने तथा छोटे हथियारों की भारी मार के बावजूद वह आगे बढ़ते गये। बाद में जब उन्होंने देखा कि कम्पनी कमांडर लापता है तो उन्होंने स्वयं कमान सम्भाल ली और कम्पनी के धावे का अग्र-गमन करते हुए शत्रु की स्थिति को ध्वस्त कर दिया तथा बहुत से कैदी, एक टैंक गन और 2 मझौली मशीन-गनों को अपने कब्जे में कर लिया।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेंट वीरेन्द्र प्रताप सिंह ने उच्च-कोटि का स्थिर साहस, पहलशक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

24. जे० सी० 25564 सूबेदार पी० एम० ग्रेगरी,
मद्रास रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

7/8 सितम्बर, 1965 की रात्रि को सूबेदार पी० एम० ग्रेगरी एक बटालियन के सूबेदार ऐडजूटेंट का कार्य कर रहे थे। इस बटालियन को महाराजकी को कब्जे में करने का आदेश दिया गया। यह देख कर कि बटालियन लक्ष्य के निकट पहुंचने के बाद, शत्रु की भारी गोला-बारी के कारण आगे नहीं बढ़ सकी तो कम्पनी कमांडर ने सूबेदार ग्रेगरी को एक सेक्शन को साथ लेकर शत्रु पर पीछे से आक्रमण करने का आदेश दिया। गोले फेंक कर खाइयों को साफ कर सूबेदार ग्रेगरी ने शत्रु पर पीछे से हमला किया तथा 5 शत्रुओं को मार कर तथा एक को जख्मी कर अपने कार्य को सफलता पूर्वक पूरा किया।

इस मुठभेड़ में सूबेदार पी० एम० ग्रेगरी ने उच्च-कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

25. 1021059 ऐक्टिंग लास दफादार त्रिलोक सिंह,
दक्कन हार्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

7 सितम्बर से 12 सितम्बर, 1965 के मध्य खेमकरन क्षेत्र में हमारी सेना के आक्रमण के समय लांस दफादार त्रिलोक सिंह ने शत्रु के चार टैंक तथा एक रीक्वायललेस गन को ध्वस्त कर दिया। 12 सितम्बर, 1965 को जब उनका स्क्वाड्रन खेमकरन में नहर पर शत्रु की स्थिति पर धावा बोल रहा था तो एक शत्रु टैंक तथा एक गन ठीक हमारे टैंकों पर गोला-बारी कर रही थी। उन्होंने शत्रु टैंक तथा गन को ध्वस्त कर दिया और इस प्रकार अपने स्क्वाड्रन को नहर की दूसरी ओर भेजने में सफल बनाया।

इस कार्यवाही में, ऐक्टिंग लांस दफादार त्रिलोक सिंह ने उच्च-कोटि के धैर्य-पूर्ण साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

26. 2553212 सिपाही कन्नन,
मद्रास रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

7/8 सितम्बर, 1965 की रात्रि को जब मद्रास रेजिमेंट की एक कम्पनी महाराजकी पर हमला कर रही थी तो सिपाही कन्नन के प्लाटून को दाहिनी ओर से धावा बोलने और लक्ष्य पर कब्जा करने का आदेश हुआ। यह देख कर कि उनका प्लाटून कमांडर जख्मी हो गया है, सिपाही कन्नन ने शत्रु पर अकेले ही धावा बोल कर अपनी संगीन से दो पाकिस्तानी सिपाही मार दिये। घायल होने के बावजूद भी उन्होंने शत्रु पर धावा जारी रखा और दो पाकिस्तानी गन-चालकों को अपनी संगीन से मार गिराया। ऐसा करते समय शत्रु की मझौली मशीन-गन के एक विस्फोट से वह मारे गये, किन्तु उनकी प्लाटून ने शत्रु स्थिति का सफाया कर दिया।

इस कार्यवाही में सिपाही कन्नन ने उदाहरणीय साहस तथा दृढ़-निश्चय का परिचय दिया।

27. 2510685 हवलदार जस्सा सिंह,
पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—9 सितम्बर, 1965)

9 सितम्बर, 1965 को हवलदार जस्सा सिंह की कम्पनी फाजिलका सुलेमान्की रोड से परे रक्षात्मक ड्यूटी पर थी। जब शत्रु ने एक बटालियन की संख्या में अचानक आक्रमण किया और उन की कम्पनी की स्थिति के समीप आ गया तो हवलदार जस्सा सिंह अपनी खाई से बाहर निकले और शत्रु की ब्राउनिंग मशीन पर धावा बोल कर चालक को मार दिया। वह अकेले ही एक शत्रु सेक्शन से लड़े और कम-से-कम सात शत्रु सैनिक मार दिये या घायल कर दिये। मुठभेड़ में घायल होने पर भी वह अपने साथियों के साथ-साथ लड़ते रहे और शत्रु को अधिक संख्या में हताहत कर उसके हमले को असफल बना दिया।

इस मुठभेड़ में हवलदार जस्सा सिंह ने उच्च-कोटि की वीरता तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

28. मेजर शमशेर सिंह मनहास, (आई० सी० 4898),
सिख रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर, 1965)

10/11 सितम्बर, 1965 को मेजर शमशेर सिंह मनहास एक कम्पनी की कमान कर रहे थे जिसने बर्की गांव पर, जिसकी पिल बाक्सों, मझौली मशीन-गनों और तोपखाने की गोला-बारी से शत्रु द्वारा रक्षा की जा रही थी, आक्रमण कर दिया। लक्ष्य की ओर आधी दूरी पर जाते ही मेजर मनहास की कम्पनी तथा एक और आक्रमण करने वाली कम्पनी तोपखाने तथा मझौली मशीन-गन को भारी गोला-बारी में आ गई। दूसरी कम्पनी को दाहिनी ओर से लक्ष्य पर आक्रमण करने का आदेश देकर, मेजर मनहास अपने सैनिकों के अधिक संख्या में हताहत होने और शत्रु की एक गोली

के जांघ में घुसने से न घबरा कर, दृढ़ निश्चय के साथ सड़क की ओर से धावा बोला तथा राकेट लांचरों से दो पिल बाक्स ध्वस्त कर दिये और अन्ततः गाव पर कब्जा कर लिया। लक्ष्य पर पहुंचने पर उन्होंने अपने सैनिकों को पुनः संगठित किया और शत्रु के जवाबी हमलों से बचाव किया।

इस कार्यवाही में मेजर शमशेर सिंह मनहास ने उच्च कोटि के साहस, दृढ़-निश्चय तथा सूझबूझ का परिचय दिया।

29. कप्तान सुशील चन्द्र सब्बरवाल, (आई० सी०–11026), आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

कप्तान सुशील चन्द्र सब्बरवाल को इच्छोगिल नहर क्षेत्र में तोपखाने की सहायता के लिये एयर आपरेशन पायलट के रूप में नियुक्त किया गया था। हमारी विरचनाओं को सूचना देने हेतु उन्हें जोखिम उठाकर कई घंटों तक विमान-वाहित होना पड़ता था। उन्होंने शत्रु की गनों को उलझाने के लिये अनेकों उड़ानें की। अनेक अवसरों पर उन्होंने हमारी गनों का शत्रु सैनिक, गाड़ियों और टकों के जमाओं पर गोला-बारी करने का निर्देशन किया और उन्हें काफी हानि पहुचायी। 11 सितम्बर से 18 सितम्बर, 1965 के मध्य अनेक अवसरों पर, शत्रु की भारी गोला-बारी के बावजूद, नीचाई पर उड़ते हुए उन्होंने शत्रु स्थितियों के फोटोग्राफ लिये।

सम्पूर्ण संक्रिया में, कप्तान सुशील चन्द्र सब्बरवाल ने धैर्यपूर्ण साहस, पहल-शक्ति तथा कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

30. 3943797 ऐक्टिंग हवलदार रघुनाथ सिंह, डोगरा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

11 सितम्बर, 1965 को हवलदार रघुनाथ सिंह ने अपने टैंकों की सहायता से खेमकरन क्षेत्र में शत्रु टैंकों पर धावा बोला और हथियारों से लैस 4 पाकिस्तानी अधिकारियों तथा 16 अन्य सैनिक पकड़ लिये।

ऐक्टिंग हवलदार रघुनाथ सिंह ने उच्च कोटि के धैर्यपूर्ण साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

31. मेजर आदर्श कुमार कोछड़, (आई० सी०–8488), आर्टिलरी रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—11 सितम्बर, 1965)

16 सितम्बर, 1965 को मेजर आदर्श कुमार कोछड़ एक कृतिक-बल से सम्बद्ध बैटरी कमांडर थे जिसे चौविंडा में शत्रु के पीछे की स्थितियों में सड़क की नाकाबन्दी के लिये जसोरन, बतूर-देवग्रान्डी तथा टेकरी पर कब्जा करने का आदेश हुआ। मेजर कोछड़ की तोपखाने से गोला-बारी की चतुर योजना ने कृतिक-बल को जसोरन पर अधिकार करने में सफल बनाया। अपनी रक्षा की परवाह न कर वह गोरखा राईफल्स की एक बटालियन के बुरी तरह से घायल हुए कमांडिंग अधिकारी को बाहर निकालने के लिये शत्रु की तोपखाने की गोला-बारी की बराज के सम्मुख आगे बढ़ गये। इसके बाद शेष बटालियन का निर्देशन करते हुए वह बतूर-देवग्रान्डी पर कब्जा करने में सफल हुए। अगली कार्यवाही में हमारे कृतिक-बल को घेरे में लेने के शत्रु के प्रयत्न तथा जवाबी हमले, मेजर कोछड़ की अपने तोपखाने के संगठन के चतुर प्रयोग से, विफल कर दिये गये। जब उनकी टुकड़ी को पीछे हटने का आदेश हुआ तो वह शत्रु की गोला-बारी की परवाह न करते हुए अपने बहुत से हताहत सैनिकों को सुरक्षित स्थान पर ले आये।

सम्पूर्ण संक्रिया में, मेजर आदर्श कुमार कोछड़ ने उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

32. लेफ्टिनेंट बोनाला विजया रघुनन्दन राव, (आई० सी०–14289), गोरखा राईफल्स। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—16 सितम्बर, 1965)

लेफ्टिनेंट बोनाला विजया रघुनन्दन राव एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। इस कम्पनी को अखनूर-छम्ब क्षेत्र में स्थित शत्रु स्थितियों पर आक्रमण करने का आदेश हुआ। आक्रमण के थोड़ी देर पश्चात् कम्पनी को यह अनुभव हुआ कि शत्रु चारों ओर से उसके समीप बढ़ रहा है तथा पीछे लौटने के रास्ते को अवरुद्ध करने का प्रयास कर रहा है। लेफ्टिनेंट राव ने अपनी कम्पनी को पीछे हटने के लिये तुरन्त ही रक्षात्मक गोला-बारी का संगठन किया। शत्रु की तोपखाने तथा मार्टरों से भारी गोला-बारी के बावजूद वह एक चौकी से दूसरी चौकी तक गये तथा अपनी हल्की मशीन-गनों, मझौली मशीन-गनों, मार्टरों व ए एम एक्स टैंकों से गोला-बारी का स्वयं निर्देशन किया। जब एक हल्की मशीन-गन में कुछ खराबी हो गई तो वह खाई में कूद पड़े और स्वयं गन को ठीक कर गोला-बारी करने लगे। लेफ्टिनेंट राव ने अधिकाधिक तथा लक्षित गोला-बारी की और अपनी कम्पनी को भली प्रकार से हटने में सफल बनाया। सिर में एक विस्फोट के लगने से वह सख्त घायल हो गये तथा बेहोश होने से पहले अपने सैकिन्ड-इन-कमान्ड को सक्रिया का कार्य-भार सौंप दिया।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेंट बोनाला विजया रघुनन्दन राव ने उदाहरणीय साहस, पहल-शक्ति तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया जो सेना के उच्च परम्पराओं के अनुरूप हैं।

33. मेजर अबदुल रफी खां, (आई० सी०–5823), गढ़वाल राईफल्स।

(मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 सितम्बर, 1965)

17 सितम्बर, 1965 को मेजर अबदुल रफी खां गढ़वाल राईफल्स की एक बटालियन की कमान कर रहे थे, जिसने चौविन्डा के पश्चिम बतूर-देवग्रान्डी गांव पर कब्जा कर लिया था तथा गाव के समीप रक्षात्मक स्थितियां बना ली थी। शत्रु ने टैंकों से भारी जवाबी हमला किया। मेजर खां ने स्वयं लड़ाई का निर्देशन किया तथा उनकी बटालियन ने शत्रु को भारी हानि पहुंचा कर आक्रमण को विफल कर दिया। शाम को जब उनकी बटालियन को पीछे हटने का आदेश हुआ तो मेजर खां रेजिमेंटर चिकित्सा अधिकारी के साथ स्थिति पर डटे रहे और स्वयं हताहतों को निकालने का कार्य करते रहे। हताहतों को निकालते समय एक शत्रु विस्फोट के लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्रवाई में, मेजर अबदुल रफी खां ने उदाहरणीय साहस, नेतृत्व तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया तथा अपने जीवन का महान बलिदान किया।

34. जे० सी०–32564 नायब सूबेदार भिवासन, अम्भोर, महार रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—17 सितम्बर, 1965)

नायब सूबेदार भिवासन अम्भोर एक कम्पनी की प्लाटून की कमान कर रहे थे। इस कम्पनी ने खेमकरन क्षेत्र में हमारे एक माउन्टेन डिविजन के साथ शत्रु पर आक्रमण करने के लिये एक अड्डा स्थापित किया था। उन्होंने तीन टोह टुकड़ियों का अग्र-गमन किया और शत्रु के बारे में उपयोगी जानकारी ले आये। 17 सितम्बर, 1965 को दिन के 11.30 बजे जब शत्रु ने तोपखाने तथा मशीन-गनों से कम्पनी की स्थिति पर भारी गोलीबारी की तो वह एक खाई से दूसरी तक गये और शत्रु को पीछे खदेड़ने के लिये अपने जवानों को उत्साहित किया। दोबारा फिर उसी दिन जब 2.30 बजे शत्रु ने दूसरा धावा बोला तो सूबेदार अम्भोर अपने एक सेक्शन के साथ आगे बढ़े और जब शत्रु 80 गज की दूरी के अन्दर आ गया तो अपनी खाइयों से गोला-बारी आरम्भ कर दी। इस प्रकार उन्होंने स्थिति संभाली और शत्रु को पीछे खदेड़ दिया।

सम्पूर्ण संक्रिया में नायब सूबेदार भिवासन अम्भोर ने उच्च कोटि के धैर्यपूर्ण साहस, पहल-शक्ति तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

35. एक्टिंग लेफ्टिनेंट कर्नल रूमी हरमंसजी वजीना (आई० सी०–2826), महार रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 सितम्बर, 1965)

लेफ्टिनेंट कर्नल हरमोसजी वज़ीना एक बटालियन की कमान कर रहे थे, जिसे सियालकोट में, जहां पर शत्रु का भारी जमाव था, मुहादीपुर और छन्नी गावों पर कब्जा करने का आदेश हुआ। लेफ्टिनेंट कर्नल वज़ीना ने 18/19 सितम्बर, 1965 की रात्रि को मुहादीपुर और छन्नी क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। शत्रु की भारी गोला-बारी के कारण उन्हें अपनी बटालियन को संगठित करने का भी समय न मिला था कि 21/22 सितम्बर, 1965 की रात्रि को शत्रु ने इन गांवों पर भारी हमला किया और मुहादीपुर गांव में घुस आये, जिसके कारण बटालियन हैडक्वार्टर को खतरा पैदा हो गया। बटालियन के जवानों को संगठित कर, लेफ्टिनेंट कर्नल वज़ीना ने शत्रु पर जवाबी हमला किया और उसे मुहादीपुर गांव से खदेड़ दिया। इस कार्यवाही में 100 से अधिक शत्रु सैनिक, जिनमें एक अधिकारी भी था, मारे गये तथा 9 बन्दी बना लिये गये।

इस संक्रिया में ऐक्टिंग लेफ्टिनेंट कर्नल रूसी हरमोसजी वज़ीना ने उच्च कोटि की वीरता, सूझबूझ तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

36. मेजर धीरेन्द्र नाथ सिंह, (आई० सी०–13042), कुमाऊं रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 सितम्बर, 1965)

18 सितम्बर, 1965 को मेजर धीरेन्द्र नाथ सिंह कुमाऊं रेजिमेंट की एक बटालियन की कमान की कमान कर रहे थे जिसे केरी पर कब्जा करने का आदेश हुआ था। धावा बोलने वाली प्लाटून हल्की मशीन-गन, मझौली मशीन-गन तथा तोपखाने से होने वाली गोला-बारी से आच्छादित शत्रु सुरन्गों में फंस गये, जिसके फलस्वरूप काफी क्षति हुई। मेजर सिंह तुरन्त आगे आ गये तथा अपने सैनिकों को सुरंगें पार करने व शत्रु पर धावा बोलने के लिये उत्साहित किया। उन्होंने स्वयं अग्र-गमन किया किन्तु शीघ्र ही एक शत्रु सुरंग से वह घायल हो गये। उनकी एक टांग कट गयी और घायल अवस्था में वहीं पड़े थे जब उन्होंने देखा कि शत्रु की एक मझौली मशीन-गन समीप के बंकर से गोला-बारी कर रही है। वह रेंगते हुए आगे बढ़े और एक जवान से हल्की मशीन-गन लेकर शत्रु की मझौली मशीन-गन पर गोली-बारी कर उसे शान्त कर दिया। उनके कुशल नेतृत्व में उनके सैनिकों द्वारा शत्रु के साथ घोर हाथापाई के पश्चात् चौकी पर अधिकार कर लिया गया।

इस कार्यवाही में मेजर धीरेन्द्र नाथ सिंह ने उच्च कोटि के अदमित साहस, दृढ़ निश्चय तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

37. जे० सी०–6355 सूबेदार लक्षमन सलुके, मराठा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 सितम्बर, 1965)

सूबेदार लक्षमन सलुके मराठा रेजिमेंट की एक बटालियन की कम्पनी के सैकिन्ड-इन-कमांड थे जिसे 18 सितम्बर, 1965 को झामन में एक क्षेत्र पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था। जब शत्रु ने मशीनगन तथा छोटे हथियारों की गोला-बारी से उनकी कम्पनी को निष्क्रिय कर दिया तो सूबेदार सलुके को आदेश दिया गया कि वह एक रिजर्व प्लाटून को लेकर शत्रु को खदेड़ दें। उन्होंने अपने सैनिकों को एकत्रित किया तथा स्वयं अग्र-गमन कर शत्रु पर धावा बोल दिया। उन्होंने 16 शत्रु मार दिये तथा 9 बन्दी बना लिये। बाकी शत्रु सैनिक भाग गये। इस कार्यवाही ने बटालियन को लक्ष्य पर अधिकार करने में सफल बनाया।

इस मुठभेड़ में सूबेदार लक्षमण सलुके ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

38. जे० सी०–25538 नायब सूबेदार राम प्रसाद छेत्री, गोरखा राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि —18 सितम्बर, 1965)

18 सितम्बर, 1965 को गोरखा राईफल्स की एक बटालियन को अखनूर के पश्चिम में एक क्षेत्र पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया, जिस पर कि शत्रु ने कब्जा किया हुआ था। नायब सूबेदार राम प्रसाद छेत्री को जो कि एक कम्पनी के एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, शत्रु द्वारा भली प्रकार से रक्षित अन्दरुनी स्थानों पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया। जैसे ही कम्पनी लक्ष्य के समीप पहुंची तो नायब सूबेदार राम प्रसाद छेत्री को शत्रु की मझौली मशीन-गन का एक विस्फोट लगा। इसके बावजूद उन्होंने रेंगते हुये आगे बढ़ना जारी रखा, तथा एक शत्रु सैनिक को देखकर उस पर गोली चलाई और फलस्वरूप उसे दबोच लिया। इस समय नायब सूबेदार छेत्री शक्तिविहीन हो गये और उन्हें पीछे हटाना पड़ा। अन्ततः उस स्थान पर अधिकार कर लिया गया।

इस कार्यवाही में, नायब सूबेदार राम प्रसाद छेत्री ने उच्च कोटि के साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

39. मेजर मन मोहन चोपड़ा, (आई० सी०–2314), केवेलरी। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर, 1965)

19 सितम्बर, 1965 को मेजर मन मोहन चोपड़ा छथनवाला में एक शत्रु सैनिक जमाव पर इन्फैन्ट्री के आक्रमण की सहायता देने वाले एक स्कवाड्रन के साथ थे। मेजर चोपड़ा का टैंक तथा अन्य कई टैंक खराब भूभाग पर चलते-चलते धंस गये। शत्रु ने इन टैंकों पर तोपखाने और मार्टरों से भारी गोला-बारी की। अविचलित, मेजर चोपड़ा अपने स्थान पर डटे रहे और तीन टैंकों को सफलता पूर्वक निकाल लिया। ऐसा करते समय जब एक शत्रु मार्टर का एक गोला उनके टैंक पर गिरा तो वह बुरी तरह से घायल हो गये। बाद में घावों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

सम्पूर्ण कार्रवाई में, मेजर मन मोहन चोपड़ा ने उच्च कोटि के साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

40. ऐक्टिंग मेजर विजय कुमार (आई० सी०–12464), मराठा रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर, 1965)

19 सितम्बर, 1965 को मेजर विजय कुमार मराठा रेजिमेंट की एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। इस बटालियन को छथनवाला में आगे बढ़ने तथा हमारी सैन्य टुकड़ियों को इधर-उधर करने का प्रयत्न करते हुए शत्रु से निपटने का आदेश हुआ था। आक्रमण के दौरान धावा बोलने वाली कम्पनी शत्रु की भारी गोला-बारी में आ गई। अविचलित, मेजर विजय कुमार ने अपने सैनिकों को आगे बढ़ने के लिये उत्साहित किया। मुठभेड़ में मेजर विजय कुमार शत्रु की मझौली मशीन-गन के एक विस्फोट से बुरी तरह घायल हो गये किन्तु वह घिसटते हुए कम्पनी के साथ बढ़ते रहे और अपने सैनिकों को उत्साहित कर कम्पनी को दिये गये कार्य को पूरा किया।

इस कार्यवाही में, ऐक्टिंग मेजर विजय कुमार ने उदाहरणीय साहस, दृढ़-निश्चय तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

41. लेफ्टिनेंट रविन्द्र सिंह समियाल, (आई० सी०–13685), जम्मू तथा काश्मीर राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—19 सितम्बर, 1965)

19 सितम्बर, 1965 को जब शत्रु ने चौबिडा पर आक्रमण किया तो लेफ्टिनेंट रविन्द्र सिंह समियाल शत्रु की मझौली मशीन-गन की चौकी तक रेंग कर गये तथा दो ग्रेनेड फेंक कर उसे नष्ट कर दिया और शत्रु की मझौली मशीन-गन को कब्जे में कर उसे शत्रु पर इस्तेमाल किया। उनके निर्भीक साहस ने शत्रु आक्रमण को विफल करने तथा शत्रु चौकी पर अधिकार करने में हमारे सैनिकों का उत्साहवर्धन किया।

इस मुठभेड़ में लेफ्टिनेंट रविन्द्र सिंह समियाल ने सराहनीय साहस तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

42. मेजर दर्शन सिंह लल्ली (आई० सी०–9725), डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 सितम्बर, 1965)

20/21 सितम्बर, 1965 की रात्रि को हाजी-पीर दर्रे पर आक्रमण के समय मेजर दर्शन सिंह लल्ली को एक स्थान पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया था, जिसकी रक्षा शत्रु की दो से अधिक प्लाटून कर रही थीं। शत्रु की भारी गोला-बारी तथा अपने सैनिकों के भारी संख्या में हताहत होने के बावजूद, मेजर लल्ली ने वीरता से आक्रमण किया और लक्ष्य पर कब्जा कर लिया। उसके बाद शत्रु के जवाबी हमलों को खदेड़ने के लिये अपने सैनिकों को पुनः संगठित किया। शत्रु ने लगभग 250 सैनिकों तथा तोपखानों और मझौली मशीन-गनों से एक जवाबी हमला किया, किन्तु मेजर लल्ली ने एक बंकर से दूसरे बंकर तक जाकर तथा सैनिकों को उत्साहित कर केवल 60 सैनिकों की सहायता से आक्रमण को विफल कर दिया। जब शत्रु के जवाबी हमले के पश्चात् वह अपनी रक्षा का संगठन कर रहे थे तो शत्रु की एक मझौली मशीन-गन के विस्फोट के लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

इस कार्यवाही में, मेजर दर्शन सिंह लल्ली ने उच्च कोटि की वीरता, सूझबूझ तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

43. 3930517 हवलदार काशी राम,
डोगरा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 सितम्बर, 1965)

20/21 सितम्बर, 1965 की रात्रि को हाजी-पीर दर्रे के दक्षिण में एक स्थिति पर आक्रमण के समय हवलदार काशी राम एक कम्पनी से सम्बद्ध मझौली मशीन-गन सेक्शन के कमांडर थे। एक शत्रु मझौली मशीन-गन ने कम्पनी का आगे बढ़ना रोक दिया और हवलदार काशी राम को इसे उलझाये रखने का आदेश हुआ। अपने कार्य को करते समय शत्रु की मशीन-गन के विस्फोट से उनका हाथ और कंधा जख्मी हो गया, किन्तु अपने जख्मों की परवाह न कर वह गोला-बारी करते रहे और अन्ततः शत्रु की मझौली मशीन-गन को शांत कर दिया। बुरी तरह से घायल होने पर भी हवलदार काशी राम अपनी कम्पनी की सहायता करते रहे। जैसे ही कम्पनी लक्ष्य के पास पहुंची, शत्रु ने जवाबी हमला किया। हवलदार काशी राम के घावों से यद्यपि बुरी तरह खून बह रहा था, फिर भी वह गोला-बारी करते रहे। उनको दोबारा शत्रु की गोली लगी जिस से उनकी मृत्यु हो गई।

सम्पूर्ण संक्रिया में, हवलदार काशी राम ने उदाहरणीय ,साहस दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप हैं।

44. 2838710 हवलदार केदार सिंह,
राजपूताना राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—20 सितम्बर, 1965)

20 सितम्बर, 1965 को हवलदार केदार सिंह एक ऐन्टी-टैंक प्लाटून की टुकड़ी की कमान कर रहे थे जिस पर सियालकोट क्षेत्र में शत्रु टैंकों तथा पैदल सेना ने आक्रमण किया। हवलदार सिंह की टुकड़ी के साथ केवल एक रीक्वायल-लेस गन, जिसको ले जाने वाली गाड़ी को शत्रु गोला-बारी ने बेकार कर दिया था, शेष रह गई। उन्होंने उस गन को गाड़ी से उतार लिया और शत्रु की भारी गोला-बारी के मध्य उसे एक किनारे पर ले गये तथा वहां से गोला-बारी कर शत्रु के दो टैंक नष्ट कर दिये और शत्रु को उस क्षेत्र से पीछे हटने के लिये बाध्य कर दिया।

सम्पूर्ण संक्रिया में हवलदार केदार सिंह ने उच्च कोटि की वीरता और दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

45. मेजर राम स्वरूप शर्मा, (आई० सी०–10025,
राजपूताना राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

21 सितम्बर, 1965 को खेमकरन सेक्टर में शत्रु की एक स्थिति पर आक्रमण के समय मेजर राम स्वरूप शर्मा एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। कम्पनी पर भारी गोला-बारी के बावजूद वह आगे बढ़े और शत्रु की स्थिति पर साहस तथा निश्चय से हमला किया। फलस्वरूप शत्रु भाग खड़ा हुआ, उसके दो टैंक नष्ट कर दिये गये व कुछ हथियार अधिकार में कर लिये गये।

इस कार्यवाही में, मेजर राम स्वरूप शर्मा ने उच्चकोटि की उदाहरणीय वीरता तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

46. ऐक्टिंग मेजर सुरेन्द्र परशाद, (आई० सी०–13057),
मराठा रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

एक मराठा बटालियन द्वारा थट्टी जैमल सिंह पर अधिकार करने के पश्चात् शत्रु ने 20 सितम्बर, 1965 को हमारी एक कम्पनी की स्थिति पर जवाबी हमला किया जिस के कारण कम्पनी कमांडर बुरी तरह घायल हो गया तथा पीछे ले जाया गया। मेजर सुरेन्द्र परशाद ने उस कम्पनी की कमान संभाली। कम्पनी पर तीन दिन काफी दबाव रहा था तथा बहुत से सैनिक हताहत हो गये थे। जब शत्रु ने मार्टर और टैंकों से एक और जवाबी हमला किया तो मेजर सुरेन्द्र परशाद ने अपनी सुरक्षा की परवाह न कर एक प्लाटून से दूसरी प्लाटून तक जाकर शत्रु को उलझाये रखने के लिये अपने सैनिकों को उत्साहित किया। इस कार्यवाही में वह बुरी तरह घायल हुए किन्तु अपने घावों की परवाह न कर वह अपने स्थान पर तब तक डटे रहे जब तक कि शत्रु को पीछे न हटा दिया गया। अन्त में चोटों के कारण उनकी मृत्यु हो गई।

सम्पूर्ण सक्रिया में ऐक्टिंग मेजर सुरेन्द्र परशाद ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

47. लेफ्टिनेंट एम० एस० बुत्तड़, (आई० सी०–13620),
पंजाब रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्कर, 1965)

21 सितम्बर, 1965 को लेफ्टिनेंट एम० एस० बुत्तड़ इच्छोगिल नहर के किनारे एक कम्पनी की कमान कर रहे थे। दूर किनारे पर शत्रु की गतिविधियों की जानकारी तथा उस पर गोला-बारी करने के लिये आदेश देने के लिये वह शत्रु के छोटे हथियारों, मार्टरों एवं तोपखाने की गोला-बारी के सम्मुख इधर-उधर जाते रहे। उनकी कुशल तथा वीरता-पूर्ण कार्य-विधियों से एक शत्रु टैंक नष्ट कर दिया गया और उनकी कम्पनी का मनोबल उच्च बना रहा।

लेफ्टिनेंट एम० एस० बुत्तड़ ने उच्च कोटि के साहस तथा दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

48. जे० सी०–6026 सूबेदार पाले राम,
एम० एम०, जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्कर, 1965)

21/22 सितम्बर, 1965 की रात्रि को डोगराई गांव पर आक्रमण के समय सूबेदार पाले राम एक कम्पनी की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। जब शत्रु की मशीन-गनों ने हमारे सैनिकों पर सही गोला-बारी की तो उन्होंने हमला बोल दिया और शत्रु की एक गोली के लगने से घायल होने पर भी, अपने साथियों को कड़ा मुकाबिला करने के लिये उत्साहित किया। वह स्वयं एक पिल-बाक्स पर पहुंचे और ग्रेनेड फेंक कर शत्रु की गनों को शान्त कर दिया किन्तु छाती में चोट लगने से बुरी तरह घायल हो गये। अविचलित, वह एक दूसरे पिल-बाक्स पर गये तथा उसे भी शान्त कर दिया। उसके पश्चात् वह बेहोश स्थिति में पीछे ले जाये गये। उनकी वीरता से उत्साहित उनके जवान बहादुरी से लड़े तथा शत्रु स्थिति को नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में, सूबेदार पाले राम ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

49. जे० सी०–24430 नायब सूबेदार छोटू राम,
जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

डोगराई गांव की लड़ाई के समय सूबेदार छोटू राम की कम्पनी को उस क्षेत्र पर अधिकार करने का कार्य सौंपा गया जहां पर शत्रु टैंक स्थित थे। लक्ष्य के समीप पहुंच कर उन्होंने अपने सैनिकों को शत्रु स्थिति पर आक्रमण करने का आदेश दिया। उन्होंने स्वयं एक टैंक पर धावा बोला और उसके अन्दर ग्रेनेड फेंक कर चालक को मार दिया तथा टैंक पर अधिकार कर लिया। उनकी वीरता और नेतृत्व से उत्साहित होकर उनकी प्लाटून ने शत्रु स्थिति को रौंद

डाला और सही-सलामत तीन टैंक अपने अधिकार में कर लिये तथा चार मशीन-गनों को नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में नायब सूबेदार छोटू रोम ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

50. 2848775 लांस नायक भंवर सिंह,
राजपूताना राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

खेमकरन क्षेत्र में शत्रु टैंक की एक स्थिति पर आक्रमण के समय लांस नायक भंवर सिंह के सेक्शन को शत्रु टैंकों को नष्ट करने का कार्य सौंपा गया। इस सेक्शन ने शत्रु की स्थिति पर धावा बोला और 2 टैंक नष्ट कर दिये। यद्यपि उनके सेक्शन कमांडर की मुठभेड़ में मृत्यु हो गई थी तथा वह स्वयं एक शत्रु ब्राउनिंग मशीन-गन के विस्फोट से बुरी तरह घायल हो गये थे, किन्तु फिर भी उन्होंने गोला-बारी चालू रक्खी तथा एक तीसरे शत्रु टैंक को बेकार कर दिया।

इस कार्यवाही में, लांस नायक भंवर सिंह ने साहस तथा कर्तव्य परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

51. 2439708 लांस नायक लाखा सिंह,
पंजाब रेजिमेंट। (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

21 सितम्बर, 1965 को जम्मू एवं काश्मीर क्षेत्र में एक लक्ष्य पर आक्रमण के समय लांस नायक लाखा सिंह अग्र-गामी सेक्शन में थे। पास-पास की लड़ाई में शत्रु इतना समीप आ गया कि लांस नायक लाखा सिंह स्वतः भरने वाली राईफल की खाली मंगजीन को नहीं बदल सके। महान प्रत्युत्पन्न मति से उन्होंने अपने लोह टोप को उतारा और उससे एक-के-बाद-एक तीन शत्रु सैनिकों को बुरी तरह से घायल कर दिया। तत्पश्चात् उन्होंने एक और शत्रु सैनिक को संगीन घोंपा, किन्तु इसी समय शत्रु की मझौली मशीन-गन का एक विस्फोट उनके लगा और वह गिर पड़े। ऐसी दशा में भी वह गोली चलाते रहे तथा 4 और शत्रु सैनिकों को मार दिया।

लांस नायक लाखा सिंह ने उदाहरणीय साहस तथा अडिगता का परिचय दिया।

52. 3150340 सिपाही लेहना सिंह,
जाट रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—21 सितम्बर, 1965)

डोगराई गांव की लड़ाई के समय जब सिपाही लेहना सिंह की कम्पनी ने गांव के उत्तरी भाग पर अधिकार कर लिया तो वह शत्रु की मशीन-गन की भारी गोला-बारी में आ गई। पीछे हटते हुए शत्रु को विच्छेद-स्थिति करने के लिये स्वयं को शत्रु की गोला-बारी के सामने प्रकट कर एक हल्की मशीन-गन के साथ सिपाही लेहना सिंह ने मोर्चा संभाल लिया। अपनी सुरक्षा की परवाह न कर उन्होंने उस असुरक्षित मोर्चे पर अपनी हल्की मशीन-गन के साथ अधिकार कर लिया और कम-से-कम 30 शत्रुओं को मार दिया तथा 4 शत्रु गाड़ियों को नष्ट कर दिया।

इस कार्यवाही में, सिपाही लेहना सिंह ने उदाहरणीय साहस तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया।

53. लेफ्टिनेंट कर्नल कृष्ण प्रसाद लाहिरी, (आई० सी०–2645), गढ़वाल राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर, 1965)

अगस्त-सितम्बर, 1965 को क्रियाओं के समय लेफ्टिनेंट कर्नल कृष्ण प्रसाद लाहिरी एक बटालियन की कमान कर रहे थे जिसे गडरा शहर पर अधिकार करना था। 22 सितम्बर, 1965 की रात्रि को जब शत्रु ने सकारदू चौकी पर दोबारा अधिकार करने के लिये लगातार आक्रमण किये तो लेफ्टिनेंट कर्नल लाहिरी स्वय कुमक लेकर अपनी कम्पनी की अग्रिम चौकी तक गये और आक्रमण को विफल कर दिया। इसके पश्चात् धैर्यपूर्ण साहस तथा दृढ़ निश्चय से उन्होंने अपने सैनिकों का पाकिस्तानी आक्रमणकारियों से मुकाबिला करने के लिये अग्र-गमन किया तथा कुछ और लक्ष्यों पर अधिकार कर लिया।

सम्पूर्ण कार्यवाही में, लेफ्टिनेंट कर्नल कृष्ण प्रसाद लाहिरी ने उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का प्रदर्शन किया।

54. कप्तान दिवाकर अनन्त परांजपे (आई० सी०-12416), महार रेजिमेंट।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर, 1965)

जम्मू-स्यालकोट क्षेत्र में कप्तान दिवाकर अनन्त परांजपे उस कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसने एक बटालियन द्वारा रक्षित स्थान की सबसे अग्रिम स्थिति पर अधिकार किया था। 22 सितम्बर, 1965 को शत्रु ने तोपखाने और कवचित शस्त्रों की सहायता से आक्रमण किया और कप्तान परांजपे के सैनिकों को भारी संख्या में हताहत किया। उनकी एक प्लाटून स्थिति को शत्रु ने रौंद डाला। अपनी प्लाटून के शेष सैनिकों को पुनः संगठित कर कप्तान परांजपे ने शत्रु पर साहस और दृढ़ निश्चय के साथ जवाबी आक्रमण किया तथा शत्रु को उस क्षेत्र से खदेड़ कर खोई हुई स्थिति पर पुनः अधिकार कर लिया।

इस कार्यवाही में कप्तान दिवाकर अनन्त परांजपे ने उदाहरणीय साहस, पहल-शक्ति तथा सूझ-बूझ का परिचय दिया।

55. फ्लाइट लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण गरुड़, (6327), जी० डी० (एन)।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर, 1965)

सन् 1962 से फ्लाइट लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण गरुड़ चित्र लेने वाली टोह स्क्वाड्रन के नेवीगेटर थे। फोटो लेने के लिये की गई टोह उड़ानें खतरे से पूर्ण होती हैं क्योंकि यह उड़ानें सदैव दिन में बिना अनुरक्षक के करनी पड़ती हैं। सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय उन्होंने सदैव कठिन मिशनों के लिये अपने को अर्पित किया तथा बहुत ही उपयोगी सूचनायें प्राप्त कीं। इन सूचनाओं ने योजना बनाने तथा संक्रियाओं को कार्यान्वित करने में बड़ा योगदान दिया।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण गरुड़ ने सदैव उदाहरणीय साहस तथा उच्च कोटि की व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया

56. फ्लाइट लेफ्टिनेंट गगांधर रगानाथ रेल्कर, (5928), जी० डी० (एन)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर 1965)

फ्लाइट लेफ्टिनेंट गंगाधर रगानाथ रेल्कर 1962 से चित्र लेने वाली टोह स्क्वाड्रन के नेवीगेटर थे। सितम्बर, 1965 की संक्रियाओं के समय उन्होंने अनेक मिशनों पर उड़ानें कीं और शत्रु की स्थितियों के बारे में महत्वपूर्ण सूचनायें प्राप्त कीं। कठिन उड़ानों के लिये उन्होंने सदैव अपने को अर्पित किया और ऐसी अनेक संक्रियात्मक उड़ानें कीं। टोह उड़ानों से उनके द्वारा प्राप्त सूचनाओं ने हमारी योजना और संक्रियाओं के संचालन में बहुत बड़ा योगदान दिया।

सम्पूर्ण कार्यवाही में, फ्लाइट लेफ्टिनेंट गंगाधर रंगानाथ रेल्कर ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस और व्यावसायिक कुशलता का परिचय दिया।

57. 2/लेफ्टिनेंट रीत मोहिन्दर पाल सिंह, (ई० सी०–56709), लाईट कैवलरी।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर, 1965

22 सितम्बर, 1965 को 2/लेफ्टिनेंट रीत मोहिन्दर पाल सिंह एक टैंक ट्रुप के लीडर थे, जिसे लाहौर क्षेत्र में एक शत्रु स्थिति पर अधिकार करने का आदेश हुआ था। शत्रु स्थिति से 400 गज की दूरी तक जाने पर वह शत्रु द्वारा बिछाई गई सुरंगों के पास पहुंचे। शत्रु गोला-बारी के बावजूद, वह अपने सैनिकों को सुरंगें बिछे हुए भूभाग के दूसरी ओर ले जाने के लिये एक उपयुक्त रास्ते की तलाश करने के लिये अपने टैंक से उतरे। यद्यपि शत्रु के एक विस्फोट के छाती तथा दाहिने हाथ में लगने से वह घायल हो गये थे, फिर भी उन्होंने अपना टोह कार्य पूरा किया। उन्हें पुनः एक गोला लगा जिससे उनका चेहरा भी बुरी तरह घायल हो गया।

इस कार्यवाही में, 2/लेफ्टिनेंट रीत मोहिन्दर पाल सिंह ने उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

पुरस्कार की प्रभावी तिथि—22 सितम्बर, 1965)

58. 1011043 लास दफादार ऊधन सिंह,
हडसन्स हार्स। **(मरणोपरान्त)**

22 सितम्बर, 1965 को जसोरन में अगस्त-सितम्बर 1965 की संक्रियाओं के समय जब हमारी पैदल सेना शत्रु की भारी गोला-बारी में आ गई तो लास दफादार ऊधन सिंह ने खराब भूमि से पैदा हुए सीमित प्रेक्षण के बावजूद अपने टैंक को आगे ले जाने का फैसला किया। यद्यपि उनका टैंक शत्रु के टैंकों की उभय दिशा से होने वाली गोला-बारी में आ गया फिर भी वह दो शत्रु टैंकों को तोड़ने में सफल हुए इसी बीच उनके टैंक पर भी शत्रु ने मार की जिसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। उनकी कार्यवाही ने हमारी सैनिकों को कठिन स्थिति से बचने में सफल बनाया।

इस कार्यवाही में, लास दफादार ऊधन सिंह ने साहस तथा कर्तव्य परायणता का परिचय दिया जो सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है।

59. 2551118 सिपाही भास्करन नायर,
मद्रास रेजिमेंट। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—24 सितम्बर, 1965)

सिपाही भास्करन नायर मद्रास रेजिमेंट की एक बटालियन की कम्पनी में थे जिसे इच्छोगिल नहर के पास एक स्थान पर घुस आने वाले शत्रु को पीछे हटाने का कार्य सौंपा गया था। जब सिपाही नायर की कम्पनी शत्रु के सुस्थित बंकरों से होने वाली छोटे हथियारों की सही गोला-बारी में आ गई तो वह आगे बढ़े तथा तीन हथगोले फेंक कर शत्रु की तीन हल्की मशीन-गनों को शान्त कर दिया। जब वह चौथे शत्रु बंकर के पास पहुंचने वाले ही थे, तो एक शत्रु विस्फोट के लगने से उनकी मृत्यु हो गई।

सिपाही भास्करन नायर ने सराहनीय साहस तथा पहल शक्ति का परिचय दिया।

60. जे० सी० –2431 सूबेदार नन्द किशोर,
कुमाऊं रेजिमेंट। **(मरणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-11 अक्तूबर, 1965)

11 अक्तूबर, 1965 को शत्रु ने हमारी प्लाटून की सामरिक महत्व की एक स्थिति को रौंद डाला। सूबेदार नन्द किशोर ने, जो कि अपनी कम्पनी के प्रवर जे० सी० ओ० थे, जवाबी हमला किया जो अंशतः सफल हुआ। इस कार्रवाई में वह घायल हो गये तथा उन्हें रेजिमेंट सहायता केन्द्र पर ले जाया गया। शीघ्र ही वह अपनी कम्पनी में सम्मिलित हो गये और एक घायल सिगनलर से पिस्तौल लेकर अपने साथियों को एकत्रित किया। उन्होंने आक्रमण में बाधक शत्रु की एक ब्राउनिंग मशीन-गन तथा एक ब्रेन हल्की मशीन-गन पर दो राकेट चलाये और ब्रेन लाईट मशीन गन तथा चालकों को नष्ट कर दिया। तब पिस्तौल हाथ में लिये उन्होंने शत्रु के मोर्चे पर आक्रमण के लिये अग्र-गमन किया। उसके थोड़ी ही देर पश्चात् उनके सिर तथा छाती में चोटें लगी और उनकी मृत्यु हो गई।

सूबेदार नन्द किशोर ने सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप साहस, नेतृत्व तथा पहल-शक्ति का परिचय दिया।

61. मेजर पूरन सिंह (आई० सी०-6391),
ग्रेनेडियर्ज। **(परणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-31 अक्तूबर, 1965)

मेजर पूरन सिंह राजस्थान में, लौंग रेंज सीमा गश्त की कमान कर रहे थे। 31 अक्तूबर, 1965 को प्रातः काल उनका खाईयों में सुस्थित शत्रु सैनिकों से सामना हो गया और उनकी कुछ सैन्य टुकड़ियां शत्रु के घेरे में आ गई। मेजर सिंह ने अपनी शेष अन्य टुकड़ियों को ऐसा संगठित किया कि शत्रु घेरे में आ गया। जब शत्रु ने भारी गोला-बारी आरम्भ कर दी तो मेजर सिंह ने अपने सैनिकों का अग्र-गमन कर इतनी प्रभावशाली जवाबी गोला-बारी की कि शत्रु अपनी स्थिति छोड़ कर पीछे हट गया। वह एक दूसरे मोर्चे पर लगातार तीन आक्रमणों को विफल करने में सहायक हुये। उसके बाद शत्रु के घेरे में आ जाने से वह वीरगति को प्राप्त हुए।

सम्पूर्ण संक्रिया में, मेजर पूरन सिंह ने सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप उदाहरणीय साहस तथा अविचलित दृढ़ निश्चय का परिचय दिया।

62. मेजर परनजीत सिंह ग्रेवाल, (आई० सी०–12007),
ग्रेनेडियर्ज।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-15 नवम्बर, 1965)

15/16 नवम्बर, 1965 की रात्रि को मेजर परनजीत सिंह ग्रेवाल राजस्थान में एक गश्ती दल का नेतृत्व कर रहे थे। इस क्षेत्र को शत्रु ने अनाधिकृत रूप से दबा लिया था। अचानक गश्ती दल पर, मार्टरों तथा मशीन-गनों से शत्रु ने गोला बारी आरम्भ कर दी। उन्होंने रात्रि को अपने सैनिकों को शान्त रहने का आदेश दिया और अगली सुबह स्वयं उन्होंने शत्रु पर धावा बोलने का नेतृत्व किया। यद्यपि उनकी छाती में घाव हो गया था, फिर भी वह उस समय तक संक्रिया का निर्देशन करते रहे जब तक कि उन्हें पीछे न ले जाया गया तथा लक्ष्य के अधिकतर भाग से शत्रु का सफाया न कर दिया गया।

इस कार्यवाही में, मेजर परनजीत सिंह ग्रेवाल ने उच्च कोटि के उदाहरणीय साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

63. जे० सी० –9950 सूबेदार दीना नाथ,
ग्रेनेडियर्ज। **(परणोपरान्त)**

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-15 नवम्बर, 1965)

15 नवम्बर, 1965 को सूबेदार दीना नाथ राजस्थान में लौंग रेंज सीमा पेट्रोल की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे। जब हमारे सैनिक एक अग्रिम बेस, पर, जिसको कि शत्रु ने अनाधिकृत रूप से दबा रखा था, पहुंचे तो उन्होंने शत्रु स्थिति, शक्ति तथा हथियारों के बारे में सूचना लाने के लिये स्वयं को अर्पित किया। वह अग्रिम चौकी पर पहुंचे तथा हथगोले फेंक कर बहुत से शत्रु सैनिकों को मार गिराया। एक शत्रु सैनिक को पकड़ते समय उनको एक गोली लगी तथा घटनास्थल पर ही वह वीर गति को प्राप्त हुये।

सूबेदार दीना नाथ के उच्च कोटि की सराहनीय साहस तथा कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया।

64. लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह, (आई० सी०–14790),
गढ़वाल राईफल्स।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-17 नवम्बर, 1965)

17/18 नवम्बर, 1965 को लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह एक बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे राजस्थान के एक क्षेत्र में युद्ध-विराम के पश्चात् घुस आने वाले शत्रु को निकालने का आदेश हुआ था। रात भर मार्च करने के बाद बटालियन लक्ष्य के पीछे एक स्थान पर पहुंच गई। 18 नवम्बर, 1965 को 4 बजे प्रातः लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह की कम्पनी तथा बटालियन की एक दूसरी कम्पनी ने शत्रु स्थिति पर धावा बोल दिया। शत्रु के छोटे तथा स्वचालित हथियारों की गोला-बारी के बावजूद लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह आगे बढ़े तथा तब तक लड़ते रहे, जब तक कि शत्रु को लक्ष्य से न भगा दिया गया।

इस कार्यवाही में, लेफ्टिनेंट जसबीर सिंह ने उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया।

65. 2/लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण, (आई० सी०–14541),
मराठा लाईट इन्फेंट्री।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-17 नवम्बर, 1965)

17/18 नवम्बर, 1965 को 2/लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण उस बटालियन की एक कम्पनी की कमान कर रहे थे, जिसे राजस्थान के एक क्षेत्र में युद्ध-विराम के पश्चात घुस आने वाले शत्रु को निकालने का आदेश हुआ था। रात भर मार्च करने के पश्चात 2/लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण की कम्पनी तथा बटालियन की एक दूसरी कम्पनी ने शत्रु स्थिति पर धावा बोल दिया। बुरी तरह घायल हो जाने के बावजूद वह शत्रु की छोटे तथा स्वचालित हथियारों की भारी गोला-बारी पर भी अपनी कम्पनी का तब तक नेतृत्व करते रहे, जब तक कि शत्रु को लक्ष्य से खदेड़ न दिया गया।

इस कार्यवाही में 2/लेफ्टिनेंट गोपाल कृष्ण ने उच्च कोटि के साहस तथा नेतृत्व का परिचय दिया ।

66. 2744148 हवलदार शान्ताराम शिन्दे,
मराठा लाईट इन्फेंट्री । (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि 17 नवम्बर, 1965)

हवलदार शान्ता राम शिन्दे उस बटालियन की एक कम्पनी की एक प्लाटून की कमान कर रहे थे, जिसे राजस्थान के एक क्षेत्र में घुस आने वाले शत्रु को निकालने का आदेश हुआ था । लक्ष्य के पीछे एक स्थान पर पहुंचने पर उनकी प्लाटून ने छोटे तथा स्वचालित हथियारों की विरोधी भारी गोला-बारी के बावजूद शत्रु स्थिति पर धावा बोल दिया । हवलदार शिन्दे ने अकेले ही दो शत्रु बंकरों का सफाया कर दिया । शत्रु की हल्की मशीन-गन ने जब उनकी प्लाटून को आगे बढ़ने से रोका तो वह ग्रेनेड फेंकने के लिये शत्रु बंकर तक रेंगते हुए गये । जब वह ऐसा कर रहे थे तो शत्रु के एक ग्रेनेड के फटने से उनकी मृत्यु हो गई । परन्तु उस समय तक उन्होंने बहुत से शत्रु सैनिकों को मार दिया था तथा शेष बचने वालों ने आत्म-समर्पण कर दिया ।

हवलदार शान्ता राम शिन्दे ने उच्च कोटि के सराहनीय साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

67. 4036250 लांस हवलदार देव सिंह भंडारी,
गढ़वाल राईफल्स । (मरणोपरान्त)

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि-17 नवम्बर, 1965)

लांस हवलदार देव सिंह भंडारी उस बटालियन की एक कम्पनी के अग्रिम सेक्शन की कमान कर रहे थे, जिसे युद्ध विराम के पश्चात् राजस्थान के एक क्षेत्र में घुस आने वाले शत्रु को खदेड़ने का आदेश हुआ था । उनकी कम्पनी का आक्रमण शत्रु की एक भली प्रकार से स्थित तथा हमारे सैनिकों को अधिकाधिक संख्या में हताहत करने वाली हल्की मशीन-गन के कारण रुक गया । शत्रु के छोटे तथा स्वचालित हथियारों से होने वाली भारी गोलाबारी की परवाह न कर, हवलदार भंडारी रेंगते हुए शत्रु की हल्की मशीन-गन तक पहुंचे और एक हथगोला फेंक कर गनर को मार दिया । ऐसा करते समय उनके सिर में गोली लगी तथा उनकी मृत्यु हो गई ।

लांस हवलदार देव सिंह भंडारी ने उच्च कोटि के सराहनीय साहस, दृढ़ निश्चय तथा कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया ।

सं० 73-प्रेज०/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को उत्कृष्ट वीरता के लिये 'अशोक चक्र, द्वितीय श्रेणी' प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथ बालकृष्ण सावर्देकर (4593),
जनरल ड्यूटीज (पायलट) ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—10 सितम्बर 1965)

सितम्बर, 1965 की संक्रियाओं के समय स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथ बालकृष्ण सावर्देकर एक लड़ाकू टोह स्क्वाड्रन के साथ संक्रियात्मक ड्यूटी पर तैनात थे । 10 सितम्बर, 1965 को वह अपने साथी विमान-चालक के साथ एक हमले के लिये एक जेट ट्रेनर वायुयान से उड़ान लेने वाले थे जब अचानक हवाई मैदान पर शत्रु के चार विमानों ने हमला कर दिया जिसके कारण ट्रेनर वायुयान में आग लग गई । इससे पहले कि वह जलते हुए हवाई जहाज को छोड़ें । उनके साथी के कपड़ों मे आग लग गई । वह विमान से घिसट कर आगे बढ़ते ही बेहोश हो गये तथा केवल अपनी वर्दी के ऊपरी भाग को ही उतार सके । स्क्वाड्रन लीडर सावर्देकर पर भी चोटें आईं । इसी समय वायुयान के गोला-बारूद में आग लग गई । और वे फटने आरम्भ हो गये । स्क्वाड्रन लीडर सावर्देकर ने अपनी सुरक्षा की परवाह न कर अपने साथी के अब तक जलते हुए बाकी कपड़ों को अलग किया तथा जलते हुये जूतों और मोजों को भी उतारा । उसके बाद उन्होने अपने कपड़ों को अपने साथी के चारों ओर लपेट दिया और आग को शान्त कर दिया । इस प्रकार उन्होंने अपने साथी की जान बचाई ।

स्क्वाड्रन लीडर विश्वनाथ बालकृष्ण सावर्देकर ने उदाहरणीय साहस, मैत्री भावना तथा कर्त्तव्यपरायणता का परिचय दिया जो वायु सेना की उच्च परम्पराओं के अनुरूप है ।

2. श्री प्रीत पाल सिंह ।
3. श्री किरपाल सिंह ढींगरा ।
4. श्री सतीश सूद ।
5. श्री अरुण खन्ना ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—14 फरवरी 1966)

14 फरवरी, 1966 को, 4 विद्यार्थी सर्वश्री प्रीत पाल सिंह, किरपाल सिंह ढींगरा, सतीश सूद, तथा अरुण खन्ना एक कार में सफर कर रहे थे और उन्होंने देखा कि उनके आगे जाने वाली एक कार में तीन व्यक्ति हाथापाई मे उलझे हुए हैं । थोड़ी ही देर बाद उन्होंने इनमें से एक व्यक्ति को कार से बाहर गिरते हुए देखा पर कार नहीं रुकी । यह अनुभव कर कि कोई सन्देहजनक बात है श्री प्रीत पाल सिंह तथा उनके साथियों ने शोर मचाया तथा कार का पीछा किया । अन्त में, वे उसको रोकने में सफल हुए तथा अपने को जोखिम में डाल कर कार में बैठे हुए व्यक्तियों में से एक को दबोच लिया । इसके पश्चात वे वापिस आये तथा कार में से गिरे हुए व्यक्ति को उठाया । घावों के कारण तबतक उसकी मृत्यु हो चुकी थी । तथा शनाख्त से पता चला कि वह पंजाब रोडवेज का एक कैशियर था ।

सर्वश्री प्रीत पाल सिंह, किरपाल सिंह ढींगरा, सतीश सूद तथा अरुण खन्ना ने, अपनी सुरक्षा की परवाह न कर, कार का पीछा करने तथा उसे रोकने में उच्च कोटि की वीरता तथा प्रशंसनीय पहलशक्ति का परिचय दिया ।

सं० 74-प्रेज०/66—राष्ट्रपति निम्नांकित व्यक्तियों को वीरता के लिये "अशोक चक्र, तृतीय श्रेणी" प्रदान करने का अनुमोदन करते हैं :—

1. श्री अमर सिंह, वाचमैन ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—7 सितम्बर, 1965)

श्री अमर सिंह जम्मू एवं कश्मीर में एक वायु सेना स्टेशन में नियुक्त थे । अगस्त-सितम्बर, 1965 में पाकिस्तानियों की कश्मीर घाटी में घुसपैठ के समय वह गांव-गांव में गये तथा घुसपैठियों के बारे में महत्वपूर्ण सूचनायें एकत्रित कीं । अनेक अवसरों पर श्री अमर सिंह ने सैनिक गश्ती दलों की घुसपैठियों के विरुद्ध कार्रवाइयों का मार्ग प्रदर्शन किया । 7 सितम्बर, 1965 को, जब शत्रु वायुयानों ने हवाई अड्डे पर आक्रमण किया, तो श्री अमर सिंह ने जलती हुई इमारत के शस्त्रागार से हथियार तथा गोलाबारूद बाहर निकालने में सराहनीय कार्य किया ।

श्री अमर सिंह ने सराहनीय साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

2. श्री कांसी राम,
सिविलियन ड्राइवर, आर्मी सर्विस कोर से सम्बद्ध ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—12 सितम्बर, 1965)

श्री कांसी राम, 12 सितम्बर, 1965 को चड़वा में एक आर्मी सर्विस कोर की एक बटालियन के साथ ड्यूटी पर थे । उनकी गाड़ी गोला-बारूद से भरी हुई थी ।

उस क्षेत्र पर शत्रु ने हवाई हमला किया, जिसके कारण एक गाड़ी का क्लीनर मारा गया था तथा श्री कांसी राम घायल हो गये । शत्रु गोला-बारी एवं अपने घाव के बावजूद, श्री कांसी राम ने अपनी गाड़ी को खाली किया, क्लीनर के मृत शरीर को उठाया तथा अपनी गाड़ी को पीछे सुरक्षित स्थान में ले आये ।

श्री कांसी राम ने सराहनीय साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया ।

3. श्री कंवल नैन,
सिविलियन ड्राईवर, हैडक्वाटर इन्फेंट्री ब्रिगेड से सम्बद्ध ।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 सितम्बर, 1965)

13 सितम्बर, 1965 को श्री कंवल नैन गोलाबारूद से भरी हुई अपनी गाड़ी में सार्थ (कान्वाय) के साथ जा रहे थे जब शत्रु ने भारी गोला-बारी आरम्भ कर दी । कुछ गाड़ियां गोलों के लगने से जलने लगीं । जब कुछ ड्राइवरों ने अपनी गाड़ियां छोड़

दीं, श्री कंवल नैन अपनी सुरक्षा की परवाह न कर, अपनी गाड़ी को सुरक्षित स्थान पर ले गये। उसके पश्चात् अपनी सूझबूझ से वह तीन बार वापिस गये और तीन अन्य भरी हुई गाड़िया सुरक्षित स्थान पर ले आये।

सम्पूर्ण कार्यवाही में, श्री कंवल नैन ने उदाहरणीय साहस तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

4. श्री रोशन लाल,

सिवलियन ड्राईवर, राजपूताना राईफल्स से सम्बद्ध।

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—13 सितम्बर, 1965)

स्यालकोट क्षेत्र में सितम्बर, 1965 की संक्रियाओं के समय श्री रोशन लाल राजपूताना राईफल्स की एक यूनिट के साथ सम्बद्ध थे तथा अग्रिम क्षेत्र में सामान एवं सेना को ले जाने का कार्य कर रह थे। 13 सितम्बर, 1965 को जब यूनिट की गोला-बारूद, पेट्रोल, तेल इत्यादि सामान ले जाने वाली गाड़ियों पर शत्रु ने भारी गोला-बारी की, जिसके परिणामस्वरूप विस्फोट होने लगे और आग लगने लगी तो श्री रोशन लाल अपनी सुरक्षा की परवाह न कर, भागकर अपनी गाड़ी पर गये और उसे सुरक्षित स्थान पर ले आये। वह वापिस गये और ऐसी कई गाड़ियां ले आये जिनके ड्राईवर उन्हें छोड़ गये थे। इस प्रकार उन्होंने लड़ाई के लिये अति आवश्यक साज-सामान को बचा लिया। पुनः, 15 सितम्बर, 1965 को, जब श्री रोशन लाल, संभरण चौकी से गोलाबारूद, पेट्रोल, तेल आदि एकत्रित कर अन्य गाड़ियों के साथ अपनी यूनिट की ओर आ रहे थे, तो शत्रु वायुयानों ने गाड़ियों पर भारी गोला-बारी की तथा नैपाम बम भी फेंके। जब कुछ ड्राईवर अपनी गाड़ियां छोड़कर चले गये, श्री रोशन लाल, शत्रु द्वारा लगातार बमबारी के बावजूद अपनी गाड़ी को चलाते रहे तथा इस प्रकार उन्होंने महत्वपूर्ण सामान को बचाया।

सम्पूर्ण कार्यवाही में, श्री रोशन लाल ने साहस, पहल-शक्ति तथा कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया।

5. श्री अतुल कुमार हलदर

(पुरस्कार की प्रभावी तिथि—18 सितम्बर, 1966)

18 सितम्बर, 1965 को डोगरा रेजिमेंट की एक बटालियन एक तेज बहने वाली नदी को कामचलाऊ प्रबन्ध से पार करने का अभ्यास कर रही थी। पानी की गहराई 15 से 20 फुट तक थी तथा भारी बर्षा हो रही थी। भारी मात्रा में सैनिक सामग्री ले जाने वाले कुछ बेड़े डूब गये। श्री अतुल कुमार हलदर ने, जो पास ही में मछलियां पकड़ रहे थे, सामान को निकालने में अपने को अर्पित किया। उन्होंने नदी में अनेकों बार गोते लगाये और डूबे हुए सामान का काफी भाग निकाल लिया। उसी रात्रि को सारा सामान न निकाल पाने के कारण दूसरे दिन सुबह भी अपने प्रयत्न जारी रखे तथा अन्ततः लगभग सारे सामान को अपने कुछ मित्रों की सहायता से निकाल लिया।

श्री हलदर द्वारा प्रदर्शित कुशलता एवं साहस बहुत ही सराहनीय है।

वाई० डी० गण्डेविया,
राष्ट्रपति के सचिव

खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय

(सहकारिता विभाग)

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 20 सितम्बर 1966

सं० 7-3/66-सी० सी०—भारत सरकार ने नवम्बर 1962 में 50,000 से अधिक आबादी वाले सभी शहरों तथा नगरों में उपभोक्ता सहकारी भण्डारो का विस्तृत जाल बिछाने के लिए एक केन्द्रीय प्रायोजित योजना शुरू की थी। मार्च 1966 के अन्त तक 7,649 प्राथमिक भण्डारों/शाखाओं सहित 246 थोक भण्डार स्थापित किए जा चुके थे। अवमूल्यन के परिणामस्वरूप, पहले से स्थापित किए जा चुके उपभोक्ता भण्डारों को और मजबूत बनाने और 1966-67 में 101 थोक भण्डार, 2,000 प्राथमिक भण्डार/शाखाएं और लगभग 60 बहुविभागी भण्डार स्थापित करने का एक त्वरित कार्यक्रम शुरू करने का निर्णय किया गया था। इसके अतिरिक्त, सरकारी तथा गैर-सरकारी क्षेत्रों के उद्योगों में उपभोक्ता सहकारी समितियों के विकास के विशेष कार्यक्रमों को भी विस्तृत तथा सुदृढ़ किया जा रहा है।

2. इन कार्यक्रमों की सफलता अधिकतर अत्यावश्यक वस्तुओं की निर्बाध पूर्ति और सरकारी अभिकरणों तथा आम जनता से मिलनेवाले सहयोग पर निर्भर करेगी। अत्यावश्यक वस्तुओं का उचित मूल्यों पर समान वितरण सुनिश्चित करने के लिए उपभोक्ता सहकारी समितियों का कारगर तथा स्थायी उपकरण के रूप में तुरन्त विकास करने हेतु व्यापक मार्गदर्शन सुलभ करने तथा उचित उपायों के बारे में सलाह देने के लिए उपभोक्ता सहकारी समितियों की एक केन्द्रीय सलाहकार समिति स्थापित करने का निर्णय किया गया है।

3. समिति का गठन निम्न प्रकार होगा :—

अध्यक्ष

1. मंत्री,
खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता।

उपाध्यक्ष

2. उप-मंत्री,
खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता।

सदस्य

3. श्री अन्नासाहब पी० शिन्दे,
उप-मंत्री,
खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता।
4. श्री टी० वी० आनन्दन,
संसद्-सदस्य।
5. श्री पी० आर० चक्रवर्ती,
संसद्-सदस्य।
6. श्री विश्वनाथ पाण्डेय,
संसद्-सदस्य।
7. डा० डी० एस० कोठारी,
अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग,
नई दिल्ली।
8. श्री के० टी० चांदी,
अध्यक्ष,
भारत का खाद्य निगम,
मद्रास।
9. श्री बी० मजुमदार,
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय सहकारी कृषि विपणन संघ,
नई दिल्ली।
10. श्री एल० सी० जैन,
अध्यक्ष,
कोआपरेटिव स्टोर लि०,
कनाट सर्कस,
नई दिल्ली।
11. डा० एस० आर० रानाडे,
अध्यक्ष,
राष्ट्रीय उपभोक्ता सहकारी संघ,
नई दिल्ली।

12. डा० एम० के० सक्सेना,
प्रादेशिक अधिकारी,
इन्टरनेशनल को-आपरेटिव एलायंस,
6, कैनिंग रोड,
नई दिल्ली ।

13. श्री सी० एम० रामचन्द्रन,
अवैतनिक सचिव,
चन्द्रशेखरपुरम कोआपरेटिव कंज्यूमर्स स्टोर लि०
कुम्बाकोनम,
मद्रास राज्य ।

14. श्री अमर सिंह हरिका,
अध्यक्ष,
स्टेट कोआपरेटिव कंज्यूमर्स फैडरेशन लि०,
सेक्टर 17, चंडीगढ ।

15 श्री पी० एल० टंडन,
अध्यक्ष,
हिन्दुस्तान लीवर लि०,
बम्बई ।

16 श्री नेहर सिंह,
अध्यक्ष,
हिमाचल प्रदेश सहकारी विपणन संघ,
दी माल, शिमला ।

17. सचिव, भारत सरकार,
सहकारिता विभाग,
खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

18. सचिव,
राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम,
नई दिल्ली ।

19. आयुक्त, सिविल सप्लाई,
वाणिज्य मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

20. योजना आयोग का एक प्रतिनिधि ।

21. वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

22. उद्योग मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

23. श्रम मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

24. निर्माण, आवास तथा नगर विकास मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

25. शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि ।

26. खाद्य विभाग (खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय) का एक प्रतिनिधि ।

सदस्य-सचिव

27. श्री एन० पी० चटर्जी,
संयुक्त सचिव,
सहकारिता विभाग,
खाद्य, कृषि, सामुदायिक विकास तथा सहकारिता मंत्रालय,
नई दिल्ली ।

4. समिति के विचारणीय विषय निम्नलिखित होंगे :—

(1) उपभोक्ता सहकारी समितियों के ठोस तथा समन्वित विकास के लिए उपायों की सिफारिश करना;

(2) सहकारी समितियों की प्रगति की विशेष रूप से संगठनात्मक, सम्भरण तथा वित्तीय पहलुओं के संदर्भ में समय-समय पर समीक्षा करना;

(3) कार्यक्रम में लोगों का अधिक सहयोग प्राप्त करने और उनकी पहल करने तथा नेतृत्व की भावना को बढ़ावा देने के लिए उपाय सुझाना; और

(4) कार्यक्रम को चलाने के लिए अपेक्षित कार्यकर्त्ताओं के प्रशिक्षण प्रबन्धों की समीक्षा करना ।

5. समिति को किसी भी ऐसे मामले पर कार्यवाही करने के लिए उप समितियां गठित करने का अधिकार होगा, जो उसके अधिकार में आता हो ।

6. यह व्यक्ति जो पदेन के रूप में अथवा किसी विशेष पद पर होने के नाते समिति का सदस्य नियुक्त हुआ हो, यदि वह पदेन पद अथवा नियुक्ति पर नहीं रहता है, जैसी भी स्थिति हो, तो वह स्वतः ही समिति का सदस्य नहीं रहेगा । सभी आकस्मिक रिक्तियां उस प्राधिकारी या निकाय की सलाह से भरी जाएंगी जिसने स्थान रिक्त करनेवाले सदस्य को मनोनीत किया था ।

7. समिति की बैठकें समय-समय होती रहेंगी और छः महीनों में कम से कम एक बैठक अवश्य होगी ।

8. दो वर्षों के पश्चात् समिति पुनर्गठित की जाएगी ।

आदेश

आदेश दिया जाता है कि इस संकल्प की प्रतिलिपि सभी सम्बन्धित व्यक्तियों को भेजी जाए ।

यह आदेश भी दिया जाता है कि इस संकल्प को भारत के राजपत्र में आम जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाए ।

एस० चक्रवर्ती, सचिव

शिक्षा मंत्रालय

संकल्प

नई दिल्ली, दिनांक 19 जुलाई 1966

विषय :—अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्—संकल्प में संशोधन ।

सं० एफ० 1-2/64-टी०-2—समय-समय पर संशोधित (29 अक्तूबर 1964 तक), भूतपूर्व शिक्षा विभाग, भारत सरकार के संकल्प संख्या एफ० 16-10/44-ई०-III, दिनांक 30 नवम्बर, 1945 में आंशिक संशोधन करते हुए, राष्ट्रपति आदेश देते हैं कि निम्नलिखित धाराएं जोड़ दी जाएं अथवा अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् की स्थापना से संबंधित संकल्प में संशोधन किए जाएं :—

(i) पैराग्राफ 3 की धारा (i) की उपधारा (क) को संशोधित करके इस प्रकार पढ़ा जाए :—

"(क) अध्यक्ष—कार्यभारी मंत्री, केन्द्रीय सरकार। (यदि किसी अवसर पर वह परिषद् की किसी बैठक की अध्यक्षता न कर सकें तो उपस्थित सदस्यों को अपने में से ही उसी विशेष बैठक के लिए अध्यक्ष चुन लेना चाहिए)" ।

(ii) पैराग्राफ 3 और पैराग्राफ 5 की धारा (i) की उपधारा (ख) (ii) में से "संयुक्त" शब्द को हटा दिया जाए ।

(iii) निम्नलिखित उपधारा को पैराग्राफ 3 की धारा (i) की उप-धारा (म) के बाद जोड़ दिया जाए :—

"(य) महानिदेशक, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (पदेन)" ।

आदेश

2. आदेश दिया जाता है कि यह संकल्प भारत के राजपत्र में प्रकाशित कर दिया जाए ।

3. यह भी आदेश दिया जाता है कि सभी राज्य सरकारों, संघीय क्षेत्रों और भारत सरकार के मंत्रालयों को एक-एक प्रति भेज दी जाए।

ए० बी० अन्दोरमानी, संयुक्त शिक्षा सलाहकार

नई दिल्ली, दिनांक 28 सितम्बर 1966

सं० 22(11)/62 एस० आर०-II—इस मंत्रालय की अधिसूचना सं० 22(11) 62-एस० आर०-II—दिनांक 2 नवम्बर, 1966 के सिलसिले में, ब्रिगेडियर जे० एस० पैन्टल, भारत के महा सर्वेक्षक को ब्रिगेडियर गम्भीर सिंह के स्थान पर भूगोलिक राष्ट्रीय समिति का सदस्य नियुक्त किया जाता है।

सं० 22(22)/62 एस० आर०-II—इस मंत्रालय की अधिसूचना सं० 22(22)/62 एस० आर०-II, दिनांक 27 सितम्बर, 1966 के सिलसिले में, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली के प्राणि विज्ञान-विभाग के प्रधान तथा प्रोफेसर डा० बी० आर० शेषाचर को प्रो० पी० माहेश्वरी के स्थान पर जीव-विज्ञान की राष्ट्रीय समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है।

एम० एम० मल्होत्रा, उप सचिव

श्रम, रोजगार और पुनर्वास मंत्रालय

रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशालय

(श्रम और रोजगार विभाग)

नई दिल्ली, दिनांक 26 सितम्बर 1966

सं० ई० ई० 1-3/15/66—भारत सरकार श्रम और रोजगार मंत्रालय के संकल्प संख्या ई० पी०/ई० ई०-81/1/58, दिनांक 13 अक्तूबर 1958 के अनुसार अधिसूचना ई० पी०-81/1/58, दिनांक 19 जनवरी 1959 के अधीन रोजगार, समस्याएं नियुक्ति अवसर जुटाना और राष्ट्रीय रोजगार सेवाओं की कार्य प्रणाली से सम्बन्धित मामलों में श्रम और रोजगार मंत्रालय को सलाह देने के लिए भारत सरकार ने रोजगार की केन्द्रीय समिति का गठन किया था। अधिसूचना संख्या ई० ई०-81/1/62, दिनांक 7 नवम्बर 1962 के अधीन इस समिति का पुनर्गठन किया गया। क्योंकि उक्त समिति की कार्य अवधि समाप्त हो गई है, अतः भारत सरकार आगामी तीन वर्षों के लिए रोजगार की केन्द्रीय समिति का सहर्ष पुनः संगठन करती है और इस अधिसूचना की तारीख से आगामी तीन वर्षों के लिए उक्त समिति में कार्य करने के लिए अधोलिखित व्यक्तियों की नियुक्ति करती है :—

1. केन्द्रीय श्रम, रोजगार और पुनर्वास मंत्री (अध्यक्ष)
2. आन्ध्र प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि (गृह/श्रम III विभाग)
3. असम सरकार के प्रतिनिधि (श्रम विभाग)
4. बिहार सरकार के प्रतिनिधि (श्रम और रोजगार विभाग)
5. गुजरात सरकार के प्रतिनिधि (शिक्षा और श्रम विभाग)
6. जम्मू और कश्मीर सरकार के प्रतिनिधि (वित्त विभाग)
7. केरल सरकार के प्रतिनिधि (स्वास्थ्य और श्रम विभाग)
8. मध्य प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि (श्रम विभाग)
9. मद्रास सरकार के प्रतिनिधि (उद्योग, श्रम और आवास विभाग)
10. महाराष्ट्र सरकार के प्रतिनिधि (उद्योग और श्रम विभाग)
11. मैसूर सरकार के प्रतिनिधि (श्रम और म्युनिसिपल प्रशासन विभाग)
12. उड़ीसा सरकार के प्रतिनिधि (श्रम, रोजगार और आवास विभाग)
13. पंजाब सरकार के प्रतिनिधि (श्रम और रोजगार विभाग)
14. राजस्थान सरकार के प्रतिनिधि (श्रम और रोजगार विभाग)
15. उत्तर प्रदेश सरकार के प्रतिनिधि [श्रम (ख) विभाग]
16. पश्चिम बंगाल सरकार के प्रतिनिधि (श्रम विभाग)
17. श्री अनन्त प्रसाद शर्मा, संसद्-सदस्य (लोक-सभा)
18. श्री बालकृष्ण वासनिक, संसद्-सदस्य (लोक-सभा)
19. श्री टी० वी० आनन्दन, संसद्-सदस्य (राज्य-सभा)
20. श्री अर्जुन अरोड़ा, संसद्-सदस्य (राज्य-सभा)
21. श्री वीरेन्द्र अग्रवाल एम० ए० एल० बी० (अर्थशास्त्री) वेयर्ड रोड, फ्लैट नम्बर 4, लेडी हार्डिंग हास्पिटल, नई दिल्ली
22. प्रोफेसर के० एस० सोनाचलम (अर्थशास्त्री), अर्थशास्त्र विभाग के अध्यक्ष, अन्नामलाई विश्वविद्यालय
23. अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग आयोग के प्रतिनिधि
24. लघु उद्योग बोर्ड के प्रतिनिधि
25. भारतीय राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस के प्रतिनिधि
26. अखिल भारतीय मजदूर कांग्रेस के प्रतिनिधि
27. हिन्द मजदूर सभा के प्रतिनिधि
28. भारतीय नियोजक संगठन के प्रतिनिधि
29. अखिल भारतीय औद्योगिक नियोजक संगठन के प्रतिनिधि
30. अखिल भारतीय निर्माता संगठन के प्रतिनिधि
31. अखिल भारतीय महिला परिषद् के प्रतिनिधि
32. निदेशक, व्यावहारिक जनशक्ति अनुसंधान संस्था, नई दिल्ली के प्रतिनिधि
33. संयुक्त सचिव, भारत सरकार एवं जनशक्ति निदेशक, गृह मंत्रालय, नई दिल्ली
34. रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशक, नई दिल्ली
35. रोजगार निदेशक, रोजगार और प्रशिक्षण महानिदेशालय (सदस्य-सचिव)

ग० जगन्नाथ, अवर सचिव

PRESIDENT'S SECRETARIAT

New Delhi, the 26th September 1966

No. 61*A-Pres.*/66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Uttar Pradesh Police :—

Name of the officer and rank

Shri Shiv Charan Singh,
Sub-Inspector of Police,
Agra District,
Uttar Pradesh.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 23rd February, 1966, on receiving information that the gang of dacoit Har Prasad was likely to commit a dacoity in village Harpari Garhi a police party was detailed to intercept them. The Police party under the leadership of Shri Shiv Charan Singh, Sub-Inspector of Police, located the gang but becoming aware of the presence of the police, the dacoits scattered. Shri Singh, however, decided to see if any of the dacoits had remained in the hide-out. As Shri Singh approached the door, he was fired at and wounded in the left arm and thigh. Undaunted by this sudden attack and the injuries he had received, Shri Singh rushed inside the hut and fired at dacoit Har Prasad injuring him. The dacoit rushed out and engaged the police party in a gun duel. Har Prasad and another dacoit who had been in the hut were killed in the ensuing encounter.

In this operation, Shri Shiv Charan Singh exhibited conspicuous gallantry, initiative and devotion to duty of a high order

2. This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of Police Medal and consequently carries with it a special allowance admissible under rule 5, with effect from the 23rd February 1965.

No. 62-*Pres.*/66.—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Punjab Police :—

Names of the officers and rank

Shri Harbhajan Singh,
Sub-Inspector of Police, 2nd Battalion,
Punjab Armed Police,
Punjab.

Shri Santokh Singh,
Police Constable No. 5097, 2nd Battalion,
Punjab Armed Police,
Punjab.

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On 26th February 1964, a small police patrol under the command of Sub-Inspector Harbhajan Singh was ambushed

by a party of armed intruders from across the cease-fire line in Jammu & Kashmir Although heavily outnumbered, the patrol took up positions and engaged the intruders at very close range In the meantime a second patrol party under the command of a Head Constable joined Sub-Inspector Harbhajan Singh At the same time, another group of intruders opened heavy fire with LMGs and rifles on the police. In the ensuing encounter, Sub Inspector Harbhajan Singh and Constable Santokh Singh displayed conspicuous courage and determination, without regard for their lives and were an inspiration to the rest of the police party who put up a valiant fight and forced the intruders to retreat with heavy loss Sub-Inspector Harbhajan Singh and Constable Santokh Singh later crawled up to the positions previously held by the intruders, despite heavy firing from across the cease-fire line and brought back arms and ammunition from three dead intruders

During this encounter, Sarvashri Harbhajan Singh and Santokh Singh exhibited conspicuous courage and devotion to duty of a very high order

2 These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 26th February 1964.

The 27th September 1966

No 63-*Pres*/66—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Assam Police.—

Names of the officers and rank

Shri Naklen Temchen Ao,
Havildar, 1st Assam Police Battalion,
Assam.

Shri Awindra Sangma,
Naik, 1st Assam Police Battalion,
Assam

Statement of services for which the decorations have been awarded

On the 8th October 1965, at about 0100 hours a police patrol party suddenly came upon a group of about 25 hostiles. Shri Awindra Sangma, who was in the front of the police party, immediately engaged the hostiles with rifle killing their advance guard Havildar Naklen Temchen Ao, who was just behind, rushed forward in complete disregard of his personal safety, snatched away the gun from the hostile guard and then opened fire on the rest of the hostiles. By the boldness of their attack, the two policemen not only forced the numerically superior group of hostiles to withdraw but also inflicted casualties on them.

Shri Naklen Temchen Ao and Shri Awindra Sangma displayed a high sense of duty, and courage and determination in a very difficult and dangerous situation

2 These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 8th October 1965

No 64-*Pres*/66—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Central Reserve Police —

Name of the officer and rank

Shri Pulla Venkata Subba Rao,
Company Commander (*Officiating*),
1st Battalion, Central Reserve Police,
Neemuch

Statement of services for which the decoration has been awarded.

On the 9th March 1966, Shri Pulla Venkata Subba Rao, Company Commander, Central Reserve Police, with a Section of the Central Reserve Police, was escorting a convoy of civilian jeeps While the convoy was negotiating a sharp bend, Shri Rao noticed a column of armed men marching towards the convoy As the armed men were wearing uniforms resembling Manipur Rifles and Assam Rifles, Shri Rao got down from his vehicle to make enquiries At this, one of the armed men loaded his rifle Suspecting the *bone-fides* of these armed men, Shri Rao with great presence of mind, ordered his men to take up positions The hostiles opened heavy fire with LMGs and 2" mortars Although very much out-numbered, the small CRP party under the leadership of Shri Rao held their ground and forced the hostiles to withdraw

In this encounter, Shri Pulla Venkata Subba Rao displayed conspicuous courage, initiative and leadership

2 This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal

No 65 *Pres*./66—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Central Reserve Police —

Name of the officer and rank

Shri Bhikaji Nikam,
Naik No 773, 1st Battalion,
Central Reserve Police,
Neemuch.

Statement of services for which the decoration has been awarded

On the 27th February 1966, Naik Bhikaji Nikam was escorting a convoy when it was ambushed by hostiles. One Constable in the leading vehicle was killed and four others seriously wounded Naik Bhikaji Nikam, who was in the rear vehicle, rushed forward with his small party and took control of the situation Under his able leadership, the small police party, though very much out-numbered, repulsed the well planned attack, inflicting heavy casualties on the hostiles

During this encounter, Naik Bhikaji Nikam exhibited conspicuous gallantry, initiative and devotion to duty

2 This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 27th February 1966

No 66-*Pres*/66—The President is pleased to award the President's Police and Fire Services Medal for gallantry to the undermentioned officers of the Central Reserve Police.—

Names of the officers and rank

Shri Lekh Ram,
Subedar, VI Battalion,
Central Reserve Police,
Neemuch

Shri Naresh Mishra,
Police Constable No 6816
VI Battalion, Central Reserve Police,
Neemuch (*Deceased*)

Statement of services for which the decorations has been awarded.

On the night of the 7th August 1965, hostile forces from across the cease-fire line attacked a Central Reserve Police post commanded by Subedar Lekh Ram at Galli in the Poonch area of Jammu and Kashmir The CRP personnel at the post bravely faced the intruders and repulsed the attack For the next week the post was subjected to intensive shelling while the intruders continued to exert heavy pressure on the post Under the able leadership of Subedar Lekh Ram, the C R P kept the hostiles at bay, and even when the post was encircled and was without adequate food and water, they continued their gallant resistance till 15th August, 1965 when they had to abandon the post.

During heavy and concentrated shelling, Subedar Lekh Ram gave a fine example of leadership by moving continuously from bunker to bunker encouraging his men to face the enemy

During the course of fighting the bunker of Constable Naresh Mishra was badly damaged by a rocket In spite of this, he remained at his post and kept on firing till he was fatally wounded.

2 These awards are made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the President's Police and Fire Services Medal and consequently carry with them the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 15th August 1965

No 67 *Pres*/66—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Central Reserve Police —

Name of the officer and rank

Shri Pirthi
Sweeper No F/513, VI Battalion,
Central Reserve Police,
Neemuch

Etatement of services for which the decoration has been awarded

On the night of the 7th August 1965, hostile forces from across the cease-fire line attacked a Central Reserve Police post commanded by Subedar Lekh Ram at Galli in the Poonch area of Jammu and Kashmir The CRP personnel at the post bravely faced the intruders and repulsed the attack For the next week the post was subjected to intensive shelling while the intruders continued to exert heavy pressure on the post Under the able leadership of Subedar Lekh Ram, the C R P kept the hostiles at bay, and even when the post was encircled and was without adequate food and water, they continued their gallant resistance till 15th August 1965, when they had to abandon the post

During the fighting, Sweeper Pirthi took the rifle of a wounded Policeman and took his place in the firing line He also voluntarily moved from bunker to bunker through the bullet swept area, carrying boxes of ammunition, without caring for his personal safety

Sweeper Pirthi exhibited conspicuous courage and exemplary devotion to duty

2 This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 15th August 1965

The 29th September 1966

No. 75-*Pres*/66—The President is pleased to award the Police Medal for gallantry to the undermentioned officer of the Punjab Police.—

Name of the officer and rank

Shri Om Parkash,
Police Constable No 20/765,
20th Battalion,
Punjab Armed Police,
Punjab. *(Deceased)*

Statement of services for which the decoration has been awarded

During the 1965 hostilities the 20th Battalion of the Punjab Armed Police to which Constable Om Parkash belonged was deployed along with units of the Army in the Fazilka Sector. Constable Om Parkash volunteered for duty at an observation post ahead of the line held by the Army and despite heavy firing from both sides, manned the post and collected valuable information On the night of the 19th September 1965, the firing was intensified from both sides but Constable Om Parkash stuck to his post till he was killed.

Constable Om Parkash set an outstanding example of courage and devotion to duty in the performance of which he laid down his life

2 This award is made for gallantry under rule 4(i) of the rules governing the award of the Police Medal and consequently carries with it the special allowance admissible under rule 5, with effect from the 19th September 1965

The 30th September 1966

No. 68-*Pres*/66—The President is pleased to approve the award of the 'VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *Class I,* to the undermentioned officer for distinguished service of the most exceptional order —

Brigadier BHUMI CHAND CHAUHAN (IC-660).

No 69-*Pres*/66—The President is pleased to approve the award of the "VISHISHT SEVA MEDAL"/"DISTINGUISHED SERVICE MEDAL", *Class II,* to the undermentioned officers for distinguished service of an exceptional order :—

Captain SUNIL RAJENDRA, I N

Lieutenant Colonel JOGINDAR SINGH KHURANA (MR-423) A M C,

Lieutenant Colonel HARDEV SINGH KIER (IC-993), Signals

Lieutenant Colonel (Miss) STELLA DOMINICA Picardo (N 18369) M N.S.

Lieutenant Colonel KEITH SHORTLANDS (IC-1564), Artillery.

Major HANS RAJ LUTHRA (MR 779) A M.C.

No. 70-*Pres*/66—The President is pleased to approve the award of the MAHA VIR CHAKRA for acts of gallantry in the August-September 1965 operations against Pakistan to :—

1. Major General MOHINDAR SINGH (IC-524), M.C.

(Effective date of award—9th September 1965)

On the 9th September 1965, Major General Mohindar Singh took over command of an Infantry Division in the Lahore Sector Soon thereafter the Division plunged in the battle for the Ichhogil canal. With his zeal, determination and leadership, Major General Mohindar Singh infused a new spirit in the formation Disregarding his personal safety, he moved from formation to formation and set a very high example to his subordinate commanders in the accomplishment of difficult tasks

During the period from the 9th to 23rd September 1965, Major General Mohindar Singh displayed sound operational planning and indomitable courage which enabled the Infantry Brigades under his command to capture Ichhogil Uttar Bridge and Dograi

2 Lieutenant Colonel SAMPURAN SINGH (IC-8041), Vr C, The Punjab Regiment

(Effective date of award—9th September 1965)

After the capture of Haji Pir Pass, it became necessary to secure the road to Kahuta. When, due to heavy enemy opposition, the task became very difficult, lieutenant Colonel Sampuram Singh was detailed to secure a strategic ridge which linked up that position with the forward position of an Infantry Bridge He immediately rushed forward with his men, charged the enemy and captured the ridge, thus establishing the link Disregarding his own safety, he moved forward and in three successive attacks pushed the enemy back

Throughout, Lieutenant Colonel Sampuran Singh displayed exemplary courage and leadership of a high order

3 Captain KAPIL SING THAPA (IC-14682), The Jat Regiment *(Posthumous)*

(Effective date of award—21st September 1965)

On the night of the 21st/22nd September 1965, during the battle of Dograi, Captain Kapil Sing Thapa was given the task of capturing the north western edge of Dograi village. He personally led his men through a minefield and assaulted the enemy position. He engaged the enemy with grenades and bayonets and captured the objective, but was himself killed in the encounter.

Captain Kapil Sing Thapa displayed conspicuous gallantry and determination in the best traditions of the Army.

4 JC 7526 Subedar TIKABAHADUR THAPA, The Gorkha Rifles. *(Posthumous)*

(Effective date of award—30th September 1965)

Subedar Tikabahadur Thapa was the senior JCO of a company of a battalion of Gorkha Rifles which was detailed to clear certain objectives in Jammu & Kashmir area which had been encroached upon by the Pakistani forces after the cease fire After the objectives were cleared, the enemy made a counter attack on his company, which was repulsed When the enemy made a second counter attack, Subedar Thapa, with two of his men, charged the enemy and stopped further advance During the encounter, when the communications with the Artillery failed, he himself brought a mortar from another position and fired it single handed. Suddenly he was hit by a bullet Despite the sever wound, he kept on directing the fire and thus foiled further moves by the enemy, but soon he succumbed to his injuries.

Subedar Tikabahadur Thapa displayed exemplary courage and leadership in the best traditions of the Army.

5. Lieutenant Colonel SANT SINGH (IC-5479), The Sikh Light Infantry

(Effective date of award—2nd November 1965)

On the night of the 2nd/3rd November 1965, Lieutenant Colonel Sant Singh was given the task of clearing an objective which notwithstanding the cease-fire had been encroached upon by Pakistani forces. This was a difficult feature and strongly defended by the enemy Despite enemy mines and artillery fire, Lieutenant Colonel Sant Singh moved forward with his men, charged the enemy and, after a bitter hand to hand fight, cleared the objective Later, taking advantage of his position, Lieutenant Colonel Sant Singh moved from bunker to bunker in the face of heavy enemy artillery and automatic fire encouraging his men and cleared another objective which also had been encroached upon by Pakistani forces

Throughout, Lieutenant Colonel Sant Singh displayed conspicuous gallantry and leadership of a high order.

No 71-*Pres.*/66—The President is pleased to approve the award of the BAR to VIR CHAKRA for gallantry to :—

Lieutenant Colonel SATISH CHANDRA JOSHI (IC-5054), Vr. C,

Central India Horse. *(Posthumous).*

(Effective date of award—10th September 1965).

Lieutenant Colonel Satish Chandra Joshi, commanding officer, Central India Horse, was given the task of advancing along the Khalra-Lahore road, providing close support to a battalion of a Sikh Regiment for the capture of Burki and afterwards continuing his advance with a battalion of a Punjab Regiment to the east bank of Ichhogil canal. Under his direction his men provided valuable support to the battalion of the Sikh Regiment in capturing Burki on the night of 10th/11th September 1965 Thereafter, his advance was temporarily held by enemy mine fields Lieutenant Colonel Joshi himself went forward and tried to find a detour round the enemy mines, but while doing so his tank was disabled by a mine. In complete disregard of incessant heavy enemy shelling, he walked to Burki, and obtained a jeep Driving the jeep himself, he reconnoitered a passage through the mine fields on to the canal bank Inspired by his act, the tank crew gave excellent support to the infantry in the successful completion of its mission Lieutenant Colonel Joshi was severely wounded in the action, when his jeep blew up on a mine, and died later.

Throughout, Lieutenant Colonel Satish Chandra Joshi displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty of a high order.

No 72-*Pres*/66—The President is pleased to approve the award of VIR CHAKRA for acts of gallantry to—

1 4144088 PA/Naik RAM KUMAR, The Kumaon Regiment. *(Posthumous)*

(Effective date of award—7th August 1965)

Naik Ram Kumar was the commander of one of two sections of the Kumaon Regiment on protective duties at Kralpur Bridge on the 7th August 1965. At about 2330 hours the enemy opened fire from village Kralpur and also fired rockets at the bridge. Naik Ram Kumar had to rely on short-range weapons to prevent casualties among the villagers. Meanwhile, his section suffered heavy casualties and his commander was wounded In disregard of his personal safety, he dragged the commander away from the bridge site He himself was also injured by grenade splinters Despite this, when enemy demolition squads reached the bridge, Naik Ram Kumar rushed and grappled with an enemy soldier and

managed to throw his grenade, as a result of which the enemy soldier carrying the demolition charge was wounded and the others fled. Naik Ram Kumar, however, died as a result of the bursting of the grenade thrown by him.

Naik Ram Kumar displayed indomitable courage and devotion to duty of a high order.

2. Major RANBIR SINGH (IC-11072), The Punjab Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—9th August* 1965)

On the night of the 9th/10th August 1965, a patrol under Major Ranbir Singh was sent to round up infiltrators in the Uri Sector. The infiltrators opened fire on the patrol from two positions. Ordering two of his Sections to provide covering fire, Major Ranbir Singh led another section and positioned it behind the enemy. Then with lightning speed he attacked and annihilated the entire enemy force much superior in number and captured a number of automatic weapons.

Again on the 21st September 1965, Major Ranbir Singh was ordered to capture an objective in Jammu and Kashmir. When he came near the objective, he was met with heavy enemy fire and was wounded in both legs. Despite his wounds, he led his party forward, but was hit in the chest by an enemy bullet and killed. His party, however, captured the feature, together with a number of automatic weapons and wireless equipment.

Throughout, Major Ranbir Singh displayed gallantry, resourcefulness and leadership in the best traditions of the Army.

3. Lieutenant Colonel R. N. MISRA (IC-2489), The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—23rd August* 1965)

On the 23rd August 1965, Lieutenant Colonel R. N. Misra was commanding a battalion attack on Gauhra which had been occupied by the enemy to protect the line of communication of infiltrators operating on our territory. Despite artillery and MMG fire, Lieutenant Colonel Misra led his battalion against the enemy and captured Gauhra, and this enabled our troops to effect a link with Kalidhar. Subsequently, when the enemy mounted determined attacks on Kalidhar posts, he encouraged his men to hold their ground; and foiled all enemy attempts to dislodge our troops from that area.

Throughout, Lieutenant Colonel R. N. Misra displayed courage and leadership of a high order.

4. 3353717 Sepoy GURMEL SINGH, The Sikh Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—25th August* 1965)

On the 25th August 1965, an assault by one of our companies on an enemy position in Jammu and Kashmir was held up as its only aproach route was covered by MMG and LMG fire by the enemy. Sepoy Gurmel Singh who was in the forward section, rushed forward, charged straight for the enemy LMG, and holding it by the barrel, pulled it out; but while doing so, he got a burst from the enemy LMG and died.

Sepoy Gurmel Singh displayed exemplary courage and determination in the best traditions of the Army.

5. A/Captain MURTY DURINDRA NAIDU (EC-51623), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—26th August* 1965)

Captain Murty Durindra Naidu was the artillery Forward Observation Officer with one of the leading companies of a battalion of Parachute Regiment which attacked an enemy feature in Jammu and Kashmir area on the 26th/27th August 1965. When the leading companies came under heavy enemy MMG fire and it became difficult for our troops to advance, Captain Naidu occupied a vantage position and brought down artillery fire effectively, which enabled the battalion to capture the objective. Again on the 20th September 1965, he was accompanying a leading company of his battalion for capturing another enemy feature. Captain Naidu exposed himself to heavy enemy shelling and MMG fire and occupied a suitable position from where he directed accurate artillery fire at the enemy. During the encounter, he was seriously wounded. But realising the gravity of the situation, he refused to be evacuated and continued firing for about three hours till he fell unconscious. His bold action enabled the infantry to repulse successive enemy counter-attacks.

Throughout, A/Captain Murty Durindra Naidu displayed courage, determination and devotion to duty which are in the best traditions of the Army.

6. Lieutenant Colonel MADAN LAL CHADHA (IC-2303), The Parachute Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—31st August* 1965)

Lieutenant Colonel Madan Lal Chadha was commandant of the High Altitude Warfare School in Jammu and Kashmir. On receiving reports that Pakistani infiltrators had been trying to interfere with our troops who were using the vital Srinagar-Leh road, he organised a garrison at Sonemarg for close defence and also for offensive action against the infiltrators. He arranged for vigorous patrolling covering all likely enemy approaches and thus ensured safe passage of convoys. On two other occasions, Lieutenant Colonel Chadha accompanied his men and led them to charge the enemy. As a result of the charge, six of the enemy soldiers were killed and the rest fled leaving behind arms and ammunition. At one stage, Lieutenant Colonel Chadha was ordered to form up an *ad-hoc* company from within the School's resources for a task which involved operating about 30 miles from Sonemarg towards Srinagar negotiating heights of over 12,000 feet. When the company consisting of NCO students and NCO instructors reached near a bridge, it came under enemy fire. Lieutenant Colonel Chadha quickly organised his men and drove away the enemy. During further advance of the company, the enemy fired at the leading platoon. While Lieutenant Colonel Chadha was deploying his men and directing the operation, he was hit by an enemy bullet and was killed.

Throughout, Lieutenant Colonel Madan Lal Chadha displayed exemplary courage, initiative and resourcefulness.

7. Captain CHITOOR SUBRAMANIAM KRISHNAN (IC-8590), The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—1st September* 1965)

On the 1st September 1965, when Pakistani forces launched a massive attack in the Chhamb Sector, Captain Chitoor Subramaniam Krishnan flew over the area in order to locate enemy artillery guns. Disregarding heavy enemy fire, he engaged the enemy artillery guns and ultimately silenced them.

As Officer Commanding of the Air Operation Flight in Jammu and Kashmir area, Captain Krishnan employed his Flight in directing artillery fire against the infiltrators and inflicted heavy casualties on them. He flew nearly 60 hours, of which 45 hours were on operational sorties.

Throughout, Captain Chitoor Subramaniam Krishnan displayed courage and leadership of a high order.

8. JC-16959 Naib Subedar DAMBAR BAHADUR KHATTRI, The Gorkha Rifle.

(*Effective date of award—1st September* 1965)

On the 1st September 1965, a company which was proceeding to Sonemarg was ambushed by enemy infiltrators. Naib Subedar Dambar Bahadur Khatri, the leading platoon commander, was ordered to capture a hill occupied by them. He captured the feature after an assault and finding that the enemy infiltrators were withdrawing to the north, he chased them. Thereafter a close-quarter battle developed with the retreating enemy. Disregarding his own safety, Naib Subedar Khattri closed in on an enemy LMG, shot the gunner dead and recovered the LMG. He also killed several other infiltrators.

In this action, Naib Subedar Dambar Bahadur Khattri displayed exemplary courage and determination in the best traditions of the Army.

9. 4141048 Havildar DEVI PRAKASH SINGH, The Kumaon Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—1st September* 1965)

During the operations in Chhamb Sector, Havildar Devi Prakash Singh was hit in the arm by an enemy bullet, while commanding a platoon in its forward location. He was ordered to report to the Regimental Aid Post by his company commander and to stay there. However, he went back to fight alongside his comrades and, on reaching the platoon area, he found four enemy tanks approaching towards his position. Disregarding his injury, he aimed a rocket launcher towards an enemy tanks, but was wounded in the waist by a burst from an enemy Browning machine gun before he could open fire. He again got up and managed to score a direct hit on a tank which was later destroyed. The other enemy tanks then turned round and retreated. Later, Havildar Devi Prakash Singh succumbed to his injuries.

Throughout, Havildar Devi Parkash Singh displayed exemplary courage and initiative and devotion to duty in the best traditions of the Army.

10. 5834480 Rifleman KHAN BAHADUR MALLA, The Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—1st September* 1965).

On the 1st September 1965, a company of Gorkha rifles, while proceeding to Sonemarg, was ambushed by Pakistani infiltrators. While one of our platoons was chasing the enemy uphill, an enemy LMG halted its further advance for a while. Rifleman Ghan Bahadur Malla, who was in the right hand section, crawled forward and reached behind the LMG position an bayonetted the gunner to death. He then used the enemy LMG to chase the infiltrators further away.

In this action Rifleman Khan Bahadur Malla displayed exemplary courage and determination.

11. A/Major SAT PARKASH VARMA (IC-14015), The Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—3rd September* 1965)

Major Sat Parkash Varma was the leading Company Commander of a force deployed for an attack on an objective in

Jammu and Kashmir approach to which was barred by a high stone wall. When his assault was temporarily halted by the enemy, he directed the fire of his rocket launchers and managed to cause a breach in the stone wall and enemy bunkers. Subsequently, he over-run the enemy forward positions. Despite heavy enemy fire, he led his men resolutely and silenced the enemy bunkers one by one. When two Pakistani soldiers came out and attacked him, he killed both of them with his "*Khukri*". He was, however, hit in the stomach by two bursts of enemy MMG. Even then he continued to encourage his his men and ultimately the objective was captured. Later, however, he succumbed to his wounds.

A/Major Sat Parkash Varma displayed gallantry and leadership of a high order.

12. A/Major JAGDISH SINGH (IC-6703),
The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—5th September* 1965)

On the night of 5th/6th September 1965, Major Jagdish Singh, was with a company which launched an attack on an objective in the Poonch sector. At a distance from the enemy position, the company came under heavy enemy fire and Major Jagdish Singh was wounded. Undaunted, he accompanied the Battalion Commander right up to the objective and personally directed the artillery fire accurately. He was thus able to reduce the number of casualties of his own troops.

Throughout, A/Major Jagdish Singh displayed exemplary courage and determination.

13. Major GREESH CHANDRA VERMA (IC-12453),
The Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th September* 1965)

On the 6th September 1965, Major Greesh Chandra Verma was leading his company in an attack on a very strongly-defended enemy post in the Poonch Sector. To encourage his troops in the face of heavy enemy fire, Major Verma moved to the front line to direct the operations. After a fierce exchange of fire and throwing of hand grenades, the enemy troops were driven from the first line of trenches and bunkers. Subsequently, as a result of hand-to-hand fighting, the enemy were knocked out of all the bunkers. In a pitched fight on the last edges of the objective Major Verma was hit in the head by an enemy bullet and died.

His company, however, gained the objective completely.

Major Greesh Chandra Verma displayed exemplary courage, leadership and determination of a high order.

14. Captain PRABHU SINGH (IC-13317),
The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, Captain Prabhu Singh was commanding a company of a battalion which was ordered to seize an enemy post at Fattiwala in Khem Karan Sector. Leading a platoon, he seized the post, despite scanty information and strong enemy opposition.

On the 9th September, 1965, the enemy having failed in his attacks on other companies, charged the location of Captain Prabhu Singh's company with tanks. Captain Prabhu Singh went to each platoon and encouraged them to hold the position. He ultimately succeeded in repulsing the enemy attack.

Throughout, Captain Prabhu Singh displayed courage and leadership which are in the best traditions of the Army.

15. Second Lieutenant N. CHANDRA SEKHARAN NAIR (EC-58730),
The Corps of Engineers.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

From 6th to 22nd September, 1965 Second Lieutenant N. Chandra Sekharan Nair was commanding an Engineer Platoon. He laid anti-tank mines on the near side of Dera Baba Nanak bridge, in the face of heavy artillery and small Arms fire of the enemy. He also carried out a number of reconnaissances to assess the damage caused by enemy act on to this bridge and provided valuable information for future planning.

Throughout, Second Lieutenant N. Chandra Sekharan Nair displayed commendable courage and devotion to duty.

16. Second Lieutenant SHASHINDRA SINGH (EC-58105),
The Gorkha Rifles.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, Second Lieutenant Shashindra Singh was in command of the leading platoon of a company which was ordered to advance along the Akhnoor-Jaurian Road. The enemy had left behind a number of well-armed delaying parties. Second Lieutenant Singh cleared a number of enemy positions by rapid action. At the last delaying position, his platoon came under intense artillery mortar and machine gun fire from the enemy. He formed up his men and led the assault. In the encounter he was hit by a machine gun burst in the leg and fell down. Realising that his platoon could not advance any further, he snatched an LMG and opened up on the enemy in order to cover the withdrawal of the platoon. He continued firing till he was hit again by a machine gun burst, as a result of which he died.

Second Lieutenant Shashindra Singh displayed exemplary courage, leadership and devotion to duty in the best traditions of the Army.

17. JC-8199 Subedar KHAZAN SINGH,
The Jat Regiment.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September 1965, when Subedar Khazan Singh's company faced an enemy company in a well-dug-out position supported by Medium Machine Gun and Anti-Tank Guns, he led his company to charge the enemy so fiercely that the enemy fled leaving behind 35 killed and numerous weapons which were ultimately captured. During the encounter, he received a bullet wound and fell unconscious. On recovering he found an enemy Medium Machine Gun still engaging his troops. He rushed forward with his Sten gun and silenced it.

In this action, Subedar Khazan Singh displayed exemplary courage and leadership of a high order.

18. 2938013 Naib-Subedar RAJBIR SINGH,
The Rajput Regiment.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, Naib Subedar Rajbir Singh was leading a platoon of a rifle company which was assigned the task of dislodging the enemy from its position from Bediar area. When the enemy opened heavy fire and checked the advance of the platoon, Naib-Subedar Singh charged the enemy. Though he was hit by an enemy bullet, he continued his charge. On seeing the enemy tanks advancing, he took up of a Strim projector and fired towards the enemy tanks. Ultimately the objective was captured.

In this action, Naib-Subedar Rajbir Singh displayed commendable courage and initiative.

19. 5429011 Havildar INDRABAHADUR GURUNG,
The Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, Havildar Indrabahadur Gurung was given the task of clearing two machine gun posts which were obstructing the advance of a platoon near Dera Baba Nanak. Havildar Gurung moved forward with two of his men and reached a point near the machine gun post. He then went on alone and lobbed a grenade into the post and silenced the machine guns. He advanced further; but as he was approaching another automatic gun post, he was hit by a burst and was seriously wounded. Despite his wounds, he jumped into the post and killed the gunners. He was killed in this action but his platoon captured the objective.

Havildar Indrabahadur Gurung displayed indomitable courage, determination and devotion to duty, in the best traditions of the Army.

20. 4140565 Naik KUNWAR SINGH,
Brigade of the Guards.

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, Naik Kunwar Singh was commanding a rifle section of his company which was assaulting an enemy position in the Lahore sector. When two soldiers manning the LMG of his Section were seriously wounded by heavy and intensive enemy mortar and machine gun fire, he quickly took over the LMG and although himself injured by mortar splinters, inflicted heavy casualties on the enemy. He silenced one enemy machine gun post. Despite his wound, he continued firing effectively and thus enabled his platoon to get to the objective. Suddenly, an enemy mortar burst, knocked out his LMG and blew off both his hands. Undeterred, he continued encouraging his men till the objective was captured.

Throughout, Naik Kunwar Singh displayed supreme courage, initiative and determination of a high order.

21. 3951343 Sepoy SUKH RAM,
The Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th September,* 1965)

On the 6th September, 1965, when Sepoy Sukh Ram's section was leading an attack on a well-defended enemy post in the Poonch sector, his company came under heavy enemy fire which rendered further advance impossible. Sepoy Sukh Ram rushed forward with four grenades. Inspite of stiff opposition, he managed to close in, dropped two grenades in an enemy trench and destroyed an LMG. Sepoy Sukh Ram then dashed to another LMG and lobbed a grenade at the enemy solidier manning the LMG. While doing so, he got two bursts of LMG fire on his head and chest, as a result of which he died.

Sepoy Sukh Ram displayed exemplary courage, initiative and determination of a high order.

22. 13657947 Guardsman DAMBAR BAHADUR CHHETRI,

Brigade of the Guards. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—6th September, 1965*)

On the 6th September 1965, when his company was attacking a strongly held enemy position in the Lahore sector, Guardsman Dambar Bahadur Chettri was seriously wounded in the chest by enemy medium machine gun fire. Despite his wounds, he kept on encouraging his men and rushed forward in the face of intensive enemy mortar and MMG fire which again wounded him seriously. He was hit a third time by enemy automatic fire in the left shoulder and hand, but he staggered on to the objective and firing his weapon, inflicted heavy casualties on the enemy. After the final assault and capture of the objective, he dropped dead.

Guardsman Dambar Bahadur Chhetri displayed exemplary courage and determination.

23. Second Lieutenant VIRENDRA PRATAP SINGH (EC-56107),
The Sikh Light Infantry.

(*Effective date of award—7th September, 1965*)

On the night of 7th/8th September, 1965, Second Lieutenant Virendra Pratap Singh was acting as platoon commander of a company which was ordered to attack the Pakistani post at Kundanpur. Although he was wounded, he continued to lead his men in the face of intense artillery and small arms fire. Later, finding that his company commander was missing, he took command and, leading the company in a final charge, over-ran the enemy position and captured a number of prisoners, a tank gun and two MMGs.

In this action, Second Lieutenant Virendra Pratap Singh displayed cool courage, initiative and determination of a high order.

24. JC-25564 Subedar P. M. GREGORY,
The Madras Regiment.

(*Effective date of award—7th September, 1965*)

On the night of 7th/8th September, 1965, Subedar P. M. Gregory was serving as Subedar Adjutant of a battalion which was ordered to capture Maharajke. Finding that the battalion, after reaching near the objective, could not advance further because of heavy enemy fire the Commanding Officer asked Subedar Gregory to take a section and attack the enemy from the rear. Having cleared the trenches by throwing grenades Subedar Gregory attacked the enemy from the rear and carried out his task successfully, killing five of the enemy and wounding one.

In this encounter, Subedar P. M. Gregory displayed courage and leadership of a high order.

25. 1021059 A/Lance Dafedar TIRLOK SINGH,
The Deccan Horse.

(*Effective date of award—7th September, 1965*)

During an attack by our troops in the Khem Karan Sector, between 7th and 12th September, 1965, Lance Dafedar Tirlok Singh destroyed 4 enemy tanks and one recoilless gun. On the 12th September, 1965, when his squadron was assaulting the enemy position on Khem Karan distributory, an enemy tank and a gun were bringing down accurate fire on our tanks. He destroyed the tank and the gun and thus enabled his squadron to send two tanks across the distributory.

In this action, A/Lance Dafedar Tirlok Singh displayed cool courage and determination of a high order.

26. 2553212 Sepoy KANNAN,
The Madras Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—7th September, 1965*)

On the night of 7th/8th September, 1965, when a company of Madras Regiment was mounting an attack on Maharajke, the platoon to which Sepoy Kannan belonged was ordered to assault the enemy position from the right and capture the objective. Seeing that his platoon commander had been wounded Sepoy Kannan assaulted the enemy position single-handed, killing two Pakistani soldiers with his bayonet. Although wounded, he continued his attack and bayonetted two Pakistani gunners. While doing so, he was killed by fire from an enemy MMG, but his platoon succeeded in clearing the enemy position.

In this action, Sepoy Kannan displayed exemplary courage and determination.

27. 2510685 Havildar JASSA SINGH,
The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—9th September, 1965*)

On the 9th September, 1965, Havildar Jassa Singh's company was holding defences outside the road Fazilka-Sulaimanke. When the enemy mounted a sudden attack at battalion strength and reached his company position, Havildar Jassa Singh came out of his trench and charged on an enemy Browning machine gun and killed the gunner. He fought single-handed with an enemy section and killed or wounded at least seven enemy soldiers. Though wounded in the encounter, he kept on fighting with his men and repulsed the attack inflicting heavy casualties on the enemy.

In this encounter, Havildar Jassa Singh displayed gallantry and determination of a high order.

28. Major SHAMSHER SINGH MANHAS (IC-4898),
The Sikh Regiment.

(*Effective date of award—10th September, 1965*)

On the 10th/11th September, 1965, Major Shamsher Singh Manhas was leading a company which made an assault on Burki village, which was defended by concrete pill boxes and with MMG and artillery fire. Halfway to the objective, Major Manhas' company and another assaulting company came under heavy enemy artillery and MMG fire. Directing the other company to attack the objective from the right side, Major Manhas, undeterred by heavy casualties and an enemy bullet through his thigh, led the assault along the road axis with great determination and destroyed two pill boxes with rocket launchers and ultimately captured the village. After reaching the objective, he reorganised his men and prevented counter-attacks by the enemy.

In this action, Major Shamsher Singh Manhas displayed courage, determination and resourcefulness of a high order.

29. Captain SUSHIL CHANDRA SABHARWAL (IC-11026),
The Regiment of Artillery

(*Effective date of award—11th September, 1965*)

Captain Sushil Chandra Sabharwal was employed as Air OP Pilot in support of an Artillery Brigade in the Ichhogil canal sector. He was required to be airborne for long hours at considerable risk in order to provide information to our formation. He carried out several sorties to engage the enemy guns. On several occasions, he directed the fire of our guns on enemy concentrations of men, vehicles and tanks and inflicted heavy casualties on them. On several occasions between 11th and 18th September 1965 he took aerial photographs of enemy positions flying at a low height, despite heavy enemy fire.

Throughout, Captain Sushil Chandra Sabharwal displayed cool courage initiative and devotion to duty.

30. 3943797 A/HAVILDAR RAGHUNATH SINGH,
The Dogra Regiment.

(*Effective date of award—11th September, 1965*)

On the 11th September, 1965, Havildar Raghunath Singh, supported by tanks, launched attack on enemy tanks in the Khem Karan Sector and captured 4 Pakistani officers and 16 other ranks who were fully armed.

A/Havildar Raghunath Singh displayed cool courage, initiative and determination of a high order.

31. Major ADARSH KUMAR KOCHHAR (IC-8488),
The Regiment of Artillery.

(*Effective date of award—16th September, 1965*)

On the 16th September, 1965, Major Adarsh Kumar Kochhar was battery Commander affiliated to a task force which was ordered to capture Jassoran, Butur Deograndi and Tekri in order to establish a road block behind enemy positions in Chawinda. Major Kochhar's skilful fire plan enabled the task force to capture Jassoran. Disregarding his own safety, he rushed into the enemy artillery barrage to evacuate the Officer Commanding of a battalion of Gorkha Rifles, who had been mortally wounded. Thereafter, guiding the remnants of this battalion, he succeeded in capturing Butur Deograndi. Subsequently, several counter-attacks of the enemy were beaten back and the enemy's attempts to encircle our task force were foiled by Major Kochhar's skilful use of his own artillery concentrations. When his column was ordered to withdraw, he brought back many casualties to safety disregarding enemy fire.

Throughout, Major Adarsh Kumar Kochhar displayed courage and leadership of a high order.

32. Lieutenant BONALA VIJAYA RAGHUNANDAN RAO (IC-14289),
The Gorkha Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—16th September, 1965*)

Liutenant Bonala Vijaya Raghunandan Rao was commanding a company of Gorkha Rifles which was ordered to carry out an attack on the enemy positions in the Akhnoor-Chhamb sector. Soon after the attack was launched, it was realised that the enemy was closing in on all sides and was trying to cut off the route by which the company could return. Lieutenant Rao immediately organised covering fire for the withdrawal of his company. Despite heavy enemy artillery and mortar fire, Lieutenant Rao moved from post to post and personally directed the MMG, LMG, mortar and AMX tank fire. At one stage, when an LMG developed some mechanical defects, he jumped into the trench, personally rectified the defect and started firing. Lieutenant Rao brought down maximum and accurate fire which enabled the company to make a clean break. He was seriously wounded by sharpnel in the head but before losing consciousness he asked his second-in-command to take charge of the operation.

In this action, Lieutenant Bonala Vijaya Raghunandan Rao displayed exemplary courage, initiative and determination which are in the best traditions of the Army.

33. Major ABDUL RAFEY KHAN (IC-5823),
The Garhwal Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th September, 1965*)

On the 17th September, 1965, Major Abdul Rafey Khan was commanding a battalion of Garhwal Rifles which had captured village Butur Deograndi to the west of Chawinda and taken up a defensive position on the near side of the village. The enemy made a strong counter-attack with tanks.

Major Khan personally directed the fighting and his battalion repulsed the attack with heavy losses to the enemy. In the evening, when his battalion was ordered to withdraw, Major Khan remained in position along with the Regimental Medical Officer and personally carried and evacuated the casualties. While doing so he was hit by an enemy shell and was killed.

In this action, Major Abdul Rafey Khan displayed exemplary courage and devotion to duty and made the supreme sacrifice of his life.

34. JC-32564 Naib-Subedar BHIWASAN AMBHORE,
The Mahar Regiment.

(*Effective date of award—17th September, 1965*)

Naib-Subedar Bhiwasan Ambhore was commanding a platoon of a company which had established a base for operations to be launched against the enemy by one of our Mountain Divisions in the Khem Karan sector. He led three patrols and brought back useful information about the enemy. At 1130 hours on 17th September, 1965, when the enemy brought down heavy artillery and machine gun fire on the Company position, he went from trench to trench and encouraged his men to beat back the enemy. Again at 1430 hours on the same day, when the enemy made another assault, Subedar Ambhore moved forward with one of his sections and started firing from trenches when the enemy came within 80 yards. He thus held the line and beat back the enemy.

Throughout, Naib Subedar Ambhore displayed cool courage, initiative and leadership of a high order.

35. A/Lieutenant Colonel RUSSI HORMUSJI BAJINA (IC-2826),
The Mahar Regiment.

(*Effective date of award—18th September, 1965*)

Lieutenant Colonel Russi Hormusji Bajina was commanding a battalion which was ordered to capture Muhadipur and Chhani villages in the Sialkot Sector, where the enemy had built up heavily. Lieutenant Colonel Bajina captured Muhadipur and Chhani area on the night of 18th/19th September 1965. Due to heavy shelling by enemy mortars and guns he hardly had time to reorganise his battalion when on the night of 21st/22nd September, 1965, the enemy, launching a major counter-attack against these villages, penetrated into Muhadipur village and seriously threatened the Battalion Headquarters. With personnel of the Battalion Headquarters, Lieutenant Colonel Bajina, counter-attacked the enemy and threw him out of Muhadipur village. In this action over one hundred enemy personnel, including an officer, were killed and nine were taken prisoners.

In this action, A/Lieutenant Colonel Russi Hormusji Bajina displayed gallantry, resourcefulness and leadership of a high order.

36. Major DHIRENDRA NATH SINGH (IC-13012),
The Kumaon Regiment.

(*Effective date of award—18th September, 1965*)

On the 18th September, 1965, Major Dhirendra Nath Singh was commanding a Company of a battalion of Kumaon Regiment which was ordered to capture Keri. The assaulting platoons which rushed forward soon ran into an enemy mine-field covered by LMGs, MMGs and artillery fire, as a result of which they sustained a number of casualties. Major Singh immediately moved in front and encouraged his men to cross the mine field and to charge the enemy. He himself led the charge, but almost immediately he was injured by a mine. He lost a leg and was lying wounded in the mine-field when he saw an enemy MMG firing from a nearby bunker. He crawled forward and, taking an LMG from one of his men started firing at the enemy MMG and silenced it. Under his able leadership, the post was captured by this men after fierce hand-to-hand fighting.

In this action, Major Dhirendra Nath Singh displayed undaunted courage, determination and leadership of a high order.

37. JC-6355 Subedar LAXUMAN SALUNKE,
The Maratha Regiment.

(*Effective date of award—18th September, 1965*)

Subedar Laxuman Salunke was second-in-command of a company of a battalion of Maratha Regiment which was assigned the task of capturing an area in Jhangar on 18th September, 1965. When the enemy pinned his company down with heavy machine gun and small arms fire Subedar Salunke was ordered to use a reserve platoon and wipe out the enemy. He rallied his men and led them to charge the enemy. They killed 16 of the enemy and took 9 as prisoners; the others fled. This enabled the battalion to capture the objective.

In this encounter, Subedar Laxuman Salunke displayed exemplary courage and leadership of a high order.

38. JC-25538 Naib Subedar RAM PRASAD CHHETRI
The Gurkha Rifles.

(*Effective date of award—18th September 1965*)

On the 18th September, 1965, a battalion of the Gorkha Rifles was ordered to capture a feature west of Akhnoor, which the enemy had occupied. Naib-Subedar Ram Prasad Chhetri, who was in command of a platoon in a company, was assigned the task of capturing strongly defended enemy depth localities. As the company was closing in, Naib-Subedar Ram Prasad Chhetri was hit by enemy MMG fire. Undaunted, he continued creeping forward and noticing an enemy soldier, fired at him and subsequently overpowered him. Naib-Subedar Chhetri was now at the point of collapse and was evacuated. The feature was eventually captured.

In this action, Naib-Subedar Ram Prasad Chhetri displayed courage and determination of a high order.

39. Major MAN MOHAN CHOPRA (IC-2314),
Cavalry. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—19th September, 1965*)

On the 19th September, 1965, Major Man Mohan Chopra was engaged with a squadron supporting an infantry attack on an enemy stronghold at Chathanwala. Some of our tanks, including the tank of Major Chopra, got bogged down in deceptive terrain. The enemy brought down heavy artillery and mortar fire on these tanks. Undaunted, Major Chopra held his ground and successfully extricated three tanks. While doing so, he was severely wounded when an enemy mortar shell fell on his tank. He later succumbed to his injuries.

Throughout, Major Man Mohan Chopra displayed courage and determination of a high order.

40. A/Major VIJAY KUMAR (IC-12464),
The Maratha Regiment.

(*Effective date of award—19th September, 1965*)

On the 19th September, 1965, Major Vijay Kumar was commanding a company of a battalion of the Maratha Regiment. The battalion was ordered to deal with the enemy who was trying to advance and out-flank our forces from the position at Chathanwala. During the attack, the assaulting company came under heavy enemy fire. Undaunted, Major Vijay Kumar continued encouraging his men to go ahead with the assault. During the encounter, Major Vijay Kumar was very seriously injured by a burst of enemy MMG fire, but he dragged himself along with the company and continued to inspire his men and fulfilled the task assigned to the company.

In this action, A/Major Vijay Kumar displayed exemplary courage, determination and devotion to duty.

41. Lieutenant RAVINDER SINGH SAMIYAL (IC-13685),
Jammu and Kashmir Rifles.

(*Effective date of award—19th September, 1965*)

On the 19th September, 1965, when Chawinda was attacked by the enemy, Lieutenant Ravinder Singh Samiyal crawled to an enemy MMG post, threw two grenades and destroyed the post. Taking possession of the enemy MMG, he used it against the enemy. His dauntless courage inspired our troops to repulse the attack, and to capture the enemy post.

In this encounter, Lieutenant Ravinder Singh Samiyal displayed commendable courage and initiative.

42. Major DARSHAN SINGH LALLI (IC-9725)
The Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—20th September, 1965*)

During an attack on Haji Pir Pass on the night of 20th/21st September, 1965, Major Darshan Singh Lalli was assigned the task of capturing a feature which was defended by more than two enemy platoons. Despite heavy enemy shelling and casualties in his company Major Lalli led a gallant charge and captured the objective and thereafter re-organised his position in order to beat back enemy counter attacks. A counter-attack was launched by the enemy with nearly 250 personnel, supported by heavy artillery and MMGs but Major Lalli repulsed the attack with only 60 personnel, he himself going from bunker to bunker to encourage his men. When he was reorganising his defences after the counter-attack, he was killed by a burst of enemy MMG fire.

In this action Major Darshan Singh Lalli displayed gallantry, resourcefulness and leadership of a high order.

43. 3930517 Havildar KANSHI RAM,
The Dogra Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—20th September, 1965*)

Havildar Kanshi Ram was MMG Section Commander attached to a company during a battalion attack on a feature south of Haji Pir Pass, on the night of 20th/21st September 1965. The advance of the assaulting company was halted by an enemy MMG and Havildar Kanshi Ram was ordered to engage it. While carrying out the task, he was hit by an enemy MMG burst in the arm and shoulder. But disregarding his injuries, he continued firing and finally silenced the enemy MMG. Though badly wounded, Havildar Kanshi Ram continued to assist his company. Soon after the company reached the objective, the enemy counter-attacked and Havildar Kanshi Ram although profusely bleeding, kept on firing on the enemy. He was hit again and succumbed to his injuries.

Throughout, Havildar Kanshi Ram displayed exemplary courage, determination and devotion to duty in the best traditions of the Army.

44. 2338710 Havildar KEDAR SINGH,
The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—20th September, 1965*)

On the 20th September, 1965, Havildar Kedar Singh was commanding a detachment of an anti-tank platoon which was attacked by enemy tanks and infantry in Sialkot sector. Havildar Singh's detachment was left with only one recoilless gun and the vehicle on which it was mounted had been made ineffective by enemy fire. He dismounted the gun and under intense enemy fire moved it to a flank from where he fired on and destroyed two enemy tanks, forcing the enemy to withdraw from the area.

Throughout, Havildar Kedar Singh displayed gallantry and determination of a high order.

45. Major RAM SWARUP SHARMA (IC-10025),
The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

Major Ram Swarup Sharma was in command of a company during an attack on an enemy position in the Khem Karan sector, on the 21st September, 1965. Despite heavy enemy fire on the company, he moved forward and assaulted the enemy position with courage and determination. As a result, the enemy fled; two enemy tanks were destroyed and some arms were captured.

In this action, Major Ram Swarup Sharma displayed gallantry and initiative of a high order.

46. A/Major SURENDER PARSHAD (IC-13057),
The Maratha Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—21st September, 1965*).

After Thatti Jaimal Singh was captured by a Maratha Battalion, the enemy launched a counter-attack on the 21st September 1965 on one of our company positions as a result of which the company commander was severely wounded and evacuated. Major Surender Parshad took over command of the company, which had already been hard pressed continuously for three days and had suffered heavy casualties. When the enemy launched another counter-attack with mortar and tank fire, Major Surender Parshad inspired his men to engage the enemy by moving from platoon to platoon in complete disregard of his personal safety. In this action he was severely wounded, but, unmindful of his wounds, he held his ground till the enemy was beaten back. Subsequently, he succumbed to his injuries.

Throughout, A/Major Surender Parshad displayed exemplary courage and leadership of a high order.

47. Lieutenant M. S. BUTTAR (IC 13620),
The Punjab Regiment.

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

On the 21st September, 1965, Lieutenant M. S. Buttar was commanding a company on the Ichhogil canal bank. He exposed himself to enemy small arms, mortar and artillery fire in order to retain observation over the enemy on the far bank and to direct fire on the enemy. His efficient and gallant performance resulted in the destruction of an enemy tank and in raising the morale of his company.

Lieutenant M. S. Buttar displayed courage and determination of a high order.

48. JC-6026 Subedar PALE RAM
MM, Jat Regiment

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

Subedar Pale Ram was commanding a platoon of a company during the attack on Dograi village on the night of 21st/22nd September, 1965. When enemy machine guns brought accurate fire on our troops, he charged the enemy, and despite a bullet wound, encouraged his men to press home the attack. He himself reached a pill-box and silenced the guns by grenades but was seriously wounded in the chest. Undaunted, he made his way to the next pill-box and silenced that also, after which he collapsed and had to be evacuated. Encouraged by his bravery, his men fought valiantly and destroyed the enemy position.

In this action, Subedar Pale Ram displayed exemplary courage and leadership of a high order.

49. JC-24430 Naib-Subedar CHHOTU RAM,
The Jat Regiment.

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

During the battle of Dograi village, Subedar Chhotu Ram's company was given the task of capturing the area where the enemy tanks were in harbour. On reaching the objective, he directed his men to attack the enemy position. He himself assaulted one tank and dropping a grenade inside, killed the crew and captured the tank. Inspired by his bravery and leadership, his platoon over-ran the enemy position, captured three tanks intact, and destroyed four machine guns.

In this action, Naib-Subedar Chhotu Ram displayed exemplary courage and leadership of a high order.

50. 2848775 Lance Naik BHANWAR SINGH,
The Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

During an attack on an enemy tank position in the Khem Karan sector, Lance Naik Bhanwar Singh's section was detailed to destroy enemy tanks. The Section launched an attack on the enemy position and destroyed two enemy tanks. Although his section commander was killed in the encounter and he himself was badly wounded by a burst of an enemy Browning machine gun fire, he kept on firing on the enemy and damaged a third enemy tank.

In this action, Lance Naik Bhanwar Singh displayed courage and devotion to duty which are in the best traditions of the Army.

51. 2439708 Lance Naik LAKHA SINGH,
The Punjab Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

On the 21st September, 1965, in a company assault on an objective in Jammu and Kashmir area, Lance Naik Lakha Singh was in the leading section. In a hand-to-hand fight the enemy came so close that Lance Naik Lakha Singh could not change the empty magazine of his self-loading rifle. With great presence of mind, he took off his helmet and with it he hit three enemy soldiers one after another and injured them seriously. Subsequently he bayonetted another enemy soldier, but at this stage he was hit by a burst of enemy MMG fire and fell down. Even in this condition he continued firing on the enemy and killed 4 more men.

Lance Naik Lakha Singh displayed exemplary courage and tenacity.

52. 3150340 Sepoy LEHNA SINGH,
The Jat Regiment.

(*Effective date of award—21st September, 1965*)

During the battle of Dograi village, after Sepoy Lehna Singh's company had captured the northern edge of the village, it came under intense enemy shelling and machine gun fire. In order to cut off the retreating enemy Sepoy Lehna Singh took up a position with a light machine gun, exposed to the enemy fire. Without regard for his own safety, he occupied the exposed position all alone and with his light machine gun killed at least 30 of the enemy and destroyed 4 vehicles.

In this action, Sepoy Lehana Singh displayed exemplary courage and devotion to duty.

53. Lieutenant Colonel KRISHNA PRASAD LAHIRI
(IC-2645),
The Garhwal Rifles.

(*Effective date of award—22nd September, 1965*).

Lieutenant Colonel Krishna Prasad Lahiri was in command of a battalion which was responsible for the capture of Gadra city. On the night of 22nd September, 1965, when the enemy made repeated attacks to recapture Sakarbu, Lieutenant Colonel Lahiri himself went forward to his company post with reinforcements and repulsed the attacks. Subsequently with cool courage and determination, he led his troops against the Pakistani intruders and recaptured certain other objectives.

Throughout, Lieutenant Colonel Krishna Prasad Lahiri displayed exemplary courage and leadership of a high order.

54 Captain DIWAKAR ANANT PARANJAPE
(IC-12416),
The Mahar Regiment.

(*Effective date of award—22nd September 1965*)

Captain Diwakar Anant Paranjape was commanding a company which occupied the forward-most position of a battalion defended area in Jammu-Sialkot sector. On the 22nd September, 1965, the enemy launched an attack supported by armour and artillery fire and took a heavy toll of Captain Paranjape's men. One of his platoon localities was also overrun. Re-organising the remnants of his platoon, Captain Paranjape made a bold and determined counter-attack, threw the enemy out from this locality and recaptured the lost positions.

In this action, Captain Diwakar Anant Paranjape displayed exemplary courage, initiative and resourcefulness.

55. Flight Lieutenant GOPAL KRISHNA GARUD
(6327),
G.D. (N).

(*Effective date of award—22nd September, 1965*)

Flight Lieutenant Gopal Krishna Garud has been a navigator in a Photo Reconnaissance Squadron since 1962. Photo reconnaissance flights are fraught with danger as these have invariably to be flown unescorted in broad day light. During the September, 1965, operations, he always volunteered for the most difficult missions and brought valuable information which contributed to a large extent towards the planning and successful execution of operations.

Throughout, Flight Lieutenant Gopal Krishna Garud displayed exemplary courage and professional skill of a high order.

56 Flight Lieutenant GANGADHAR RANGNATH
RAILKAR (5928),
G.D. (N)

(*Effective date of award—22nd September, 1965*)

Flight Lieutenant Gangadhar Rangnath Railkar has been a navigator in a Photo Reconnaissance Squadron since 1962. During the September 1965, operations, he undertook several

mission and obtained vital information about the enemy dispositions. He always volunteered for the most difficult sorties and flew several operational missions. The valuable information which he brought by making reconnaissance flights contributed to a large extent towards our planning and successful execution of operations.

Throughout, Flight Lieutenant Gangadhar Rangnath Kulkarni displayed exemplary courage and professional skill of a high order.

57. Second Lieutenant REET MOHINDER PAL SINGH (EC-56709), Light Cavalry.

(*Effective date of award—22nd September, 1965*)

On the 22nd September, 1965, Second Lieutenant Reet Mohinder Pal Singh was leader of a tank troop which was ordered to capture an enemy position in the Lahore sector. Having reached within 100 yards of the enemy position, he came upon an enemy mine field. Despite enemy shelling, he dismounted from his tank in order to find a suitable crossing place for his troop. Although he was wounded in the chest and right arm by an enemy shell, he continued and completed the reconnaissance. He was again hit by a shell burst which wounded him severely in the face.

In this action, Second Lieutenant Reet Mohinder Pal Singh displayed courage and leadership of a high order.

58. 1011043 Lance Dafadar UDHAN SINGH, Hodson's Horse. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—22nd September, 1965*)

During the August-September, 1965 operations in Jassoran, when our infantry was under heavy enemy fire on the 22nd September, 1965, Lance Dafadar Udhan Singh decided to take his tank forward despite limited observation afforded by the terrain. Although his tank was caught in the cross-fire of enemy tanks, he succeeded in knocking out two enemy tanks. Meanwhile, his own tank was hit by the enemy and he was killed afterwards. His action, however, enabled the infantry to extricate itself from a difficult situation.

In this action, Lance Dafadar Udhan Singh displayed courage and devotion to duty which are in the best traditions of the Army.

59. 2551118 Sepoy BHASKARAN NAIR, The Madras Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—24th September, 1965*)

Sepoy Bhaskaran Nair was a member of a company of a battalion of Madras Regiment which was assigned the task of clearing the enemy who had infiltrated into an area near the Ichhogil canal. When his company came under accurate small arms fire from well sited enemy bunkers, Sepoy Nair rushed forward and threw three hand grenades and silenced three enemy LMGs. When he was about to approach the fourth enemy bunker he was hit by a burst of LMG fire and was killed.

Sepoy Bhaskaran Nair displayed commendable courage and initiative.

60. JC-247 Subedar NAND KISHORE, The Kumaon Regiment. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—11th October 1965*)

On the 11th October 1965, the enemy overran one of our platoon localities, a feature of tactical importance. Subedar Nand Kishore who was the senior JCO of his company led a counter attack which was partially successful. He, however, was wounded and evacuated to the Regimental Aid Centre. Soon he rejoined his company, borrowed a pistol from one of the wounded signallers and rallied his men together. He fired two rockets at an enemy Browning Machine Gun and a Bren Light Machine Gun which were holding up the assault and destroyed the latter and its crew. Then, pistol in hand, he led a charge on the enemy position. Soon afterwards he was hit in the head and chest and was killed.

Subedar Nand Kishore displayed courage, leadership and initiative in the best traditions of the Army.

61. Major PURAN SINGH (IC 6391), The Grenadiers. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—31st October, 1965*)

Major Puran Singh was commanding a Long Range Border Patrol in Rajasthan. During the early hours of the 31st October, 1965, he was confronted by enemy troops from a strongly held and well dug-in position and some of his troops were encircled by the enemy. Major Singh deployed his remaining troops so that the enemy was encircled. When the enemy opened heavy fire Major Singh led his men and returned the fire so effectively that the enemy abandoned the position. He was also instrumental in foiling three successive enemy attacks on another position. Subsequently, he was killed in an enemy ambush.

Throughout, Major Puran Singh displayed exemplary courage and unflinching determination in the best traditions of the Army.

62. Major PARNJIT SINGH GREWAL (IC-12007), The Grenadiers.

(*Effective date of award—15th November, 1965*)

On the night of the 15th/16th November, 1965, Major Parnjit Singh Grewal was leading a patrol in Rajasthan. Suddenly the enemy, who had encroached in that area, started firing on his troops with mortars and machine guns. He made his troops observe silence during the night and next morning he personally led an assault on the enemy. Although he was wounded in his chest, he continued to direct the operation until he was evacuated, by which time the major portion of the objective had been cleared of the enemy infiltrators.

In this action, Major Parnjit Singh Grewal displayed exemplary courage and leadership of a high order.

63. JC-9950 Subedar DINA NATH, The Grenadiers. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—15th November, 1965*)

Subedar Dina Nath was commanding a platoon in a long range border patrol in Rajasthan on the 15th November, 1965. When the patrol reached an advance base which had been encroached upon by the enemy, he volunteered to bring information about the enemy dispositions, strength and weapons. He approached the outpost and killed several enemy soldiers by throwing grenades. While capturing a prisoner, he was shot and was killed on the spot.

Subedar Dina Nath displayed commendable courage and devotion to duty of a high order.

64. Lieutenant JASBIR SINGH (IC-14790), The Garhwal Rifles.

(*Effective date of award—17th November 1965*)

On the 17th/18th November 1965 Lieutenant Jasbir Singh was commanding a company of a battalion which was ordered to clear an area in Rajasthan where the enemy had intruded after the cease-fire. After carrying out a night long march, the battalion reached a point behind the objective. At 0400 hours on 18th November, 1965, Lieutenant Jasbir Singh's company and another company of the battalion started assaulting the enemy position. Despite heavy enemy small arms and automatic fire, Lieutenant Jasbir Singh moved forward and continued fighting till the objective was cleared of the intruders.

In this action, Lieutenant Jasbir Singh displayed courage and leadership of a high order.

65. Second Lieutenant GOPAL KRISHAN (IC-14541), The Maratha Light Infantry.

(*Effective date of award—17th November, 1965*)

On the 17th/18th November 1965, Second Lieutenant Gopal Krishan was commanding a company of a battalion which was ordered to clear an area in Rajasthan where the enemy had intruded after the cease-fire. After having marched for the whole night Second Lieutenant Gopal Krishan's company and another company of the battalion started assaulting the enemy position. Although severely wounded, he continued to lead his company in the face of heavy enemy small arms and automatic fire until the objective was cleared of the intruders.

In this action, Second Lieutenant Gopal Krishan displayed courage and leadership of a high order.

66. 2744148 Havildar SHANTA RAM SHINDE, The Maratha Light Infantry. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th November, 1965*)

Havildar Shanta Ram Shinde was commanding a platoon of a company of a battalion which was ordered to clear an area in Rajasthan where the enemy had intruded after the cease-fire. After reaching a point behind the objective, his platoon made an assault on the enemy position despite heavy enemy small arms and automatic fire. Single handed Havildar Shinde cleared two enemy bunkers. When the advance of his platoon was resisted by an enemy LMG, he crawled upto the enemy bunker to lodge a grenade there. While he was doing so, one of the enemy's grenades exploded and Havildar Shinde was killed. By that time, however, he had killed a number of the enemy and the rest surrendered.

Havildar Shanta Ram Shinde displayed commendable courage, determination and devotion to duty of a high order.

67. 4036250 Lance Havildar DEB SINGH BHANDARI, The Garhwal Rifles. (*Posthumous*)

(*Effective date of award—17th November, 1965*)

Lance Havildar Deb Singh Bhandari was commanding a leading section of a company of a battalion which was ordered to clear an area in Rajasthan where the enemy had intruded after the cease-fire. The assault of his company on the enemy position was held up by a well sited enemy LMG, which was inflicting a number of casualties. Disregarding heavy enemy automatic and small arms fire, Lance Havildar Bhandari crawled to the enemy LMG, threw a hand grenade and killed the enemy soldier manning it. While he was doing so, he was shot in the head and was killed.

Lance Havildar Deb Singh Bhandari displayed commendable courage, determination and devotion to duty of a high order.

D.634
29.12.67

No. 73-*Pres.*/66.—The President is pleased to approve the award of the ASHOKA CHAKRA, CLASS II, for acts of conspicuous gallantry to:—

1. Squadron Leader VISHWANATH BALKRISHNA SAWARDEKAR (4593), General Duties (Pilot).

(*Effective date of award—10th September* 1965)

Squadron Leader Vishwanath Balkrishna Sawardekar was attached to a Fighter Reconnaissance Squadron for operational duties during the September 1965, operations. On the 10th September 1966, he, along with his co-pilot, was about to take off on a sortie in a jet trainer aircraft when the airfield was suddenly attacked by four Pakistani aircraft as a result of which the trainer aircraft caught fire. Before they could abandon the burning aircraft, the co-pilot's cloths caught fire; he crawled away from the aircraft but collapsed after removing the top of this burning overall. Sqdn. Ldr. Sawardekar received facial injuries. At this stage, the ammunition in the aircraft caught fire and began to explode. Without regard for his own safety, Sqn. Ldr. Sawardekar ripped off the remnants of the co-pilot's overall which was still burning, and cut away his burning shoes and socks. He then wrapped his own overall around the co-pilot's body and smothered the flames. He thus saved the life of his comrade.

Squadron Leader Vishwanath Balkrishna Sawardekar displayed exemplary courage and a spirit of comradeship and devotion to duty which are in the best traditions of the Air Force.

2. Shri PREET PAL SINGH.
3. Shri KIRPAL SINGH DHINGRA.
4. Shri SATISH SOOD.
5. Shri ARUN KHANNA.

(*Effective date of award—14th February* 1966)

On the 14th February 1966, four students, Sarvashri Preet Pal Singh, Kirpal Singh Dhingra, Satish Sood and Arun Khanna were travelling in a car when they noticed three men engaged in a scuffle inside the car in front of them. A little later, they saw one of these persons fall out of the car which did not stop. Realising that there was something suspicious, Shri Preet Pal Singh and his companions raised an alarm and gave chase to the car. Ultimately, they succeeded in stopping it and overpowering one of the occupants at great personal risk to themselves. Thereafter, they returned and picked up the person who had fallen from the car. He had by then succumbed to his injuries and was identified to be a cashier of the Punjab Roadways.

Sarvashri Preet Pal Singh, Kirpal Singh Dhingra, Satish Sood and Arun Khanna showed gallantry of a very high order and remarkable initiative in chasing and stopping the car without regard for their own safety.

No. 74-*Pres.* 66.—The President is pleased to approve the award of the ASHOKA CHAKRA CLASS III, for acts of gallantry to:

1. Shri AMAR SINGH,
Watchman.

(*Effective date of award—7th September* 1965)

Shri Amar Singh was employed in an Air Force Station in Jammu & Kashmir. In August-September 1965, during the Pakistani infiltration into the Kashmir valley, he moved from village to village and collected vital information about the whereabouts of the infiltrators. On more than one occasion Shri Amar Singh guided army patrols in their operations against the infiltrators. On the 7th September 1965, when enemy aircraft raided the airfield, Shri Amar Singh rendered valuable service in retrieving arms and ammunition from the burning building of the armoury.

Shri Amar Singh displayed commendable courage and devotion to duty.

2. Shri KANSI RAM,
Civilian Driver attached to the Army Service Corps.

(*Effective date of award—12th September* 1965)

Shri Kansi Ram was on duty with a battalion of the Army Service Corps at Chhamb on the 2.. September 1965. His vehicle was loaded with ammunition when the area was straffed by enemy aircraft as a result of which a cleaner of another vehicle was killed and Shri Kansi Ram was wounded. Despite enemy straffing and his wound, Shri Kansi Ram unloaded his vehicle, collected the body of the cleaner and then drove his back his vehicle to a safe area.

Shri Kansi Ram displayed commendable courage and devotion to duty.

3. Shri KANWAL NAIN,
Civilian Driver attached to Headquarters,
Infantry Brigade.

(*Effective date of award—13th September* 1965)

On 13th September 1965, Shri Kanwal Nain was proceeding with his vehicle, carrying ammunition, as a part of a convoy when the enemy started heavy shelling of the convoy. Some of the vehicles were hit and caught fire. While some of the drivers left their vehicles, Shri Kanwal Nain, disregarding his own safety, drove his vehicle to a safe place. Then on his own initiative he went back three times and brought three other loaded vehicles to safety.

Throughout, Shri Kanwal Nain displayed exemplary courage and devotion to duty.

4. Shri ROSHAN LAL,
Civilian Driver attached to the Rajputana Rifles.

(*Effective date of award—13th September* 1965)

During the September 1965, operations in the Sialkot sector, Shri Roshan Lal was attached to a unit of the Rajputana Rifles and was employed to carry stores and troops to forward areas. On the 13th September 1965, when the unit ammunition, petrol, oil and lubricants dump and vehicles carrying equipment and stores were heavily shelled by the enemy resulting in explosion and fire, Shri Roshan Lal, disregarding his personal safety rushed to his vehicle and drove it to a safe area. He returned and brought back several other vehicles, whose drivers had left them, thus saving ammunition and other stores vitally needed for the operation. Again, on 15th September 1965, when Shri Roshan Lal was driving back his vehicle after having collected ammunition and petrol, oil and lubricants from the supply post, the convoy was straffed by enemy aircraft, which also used napalm bombs. While some of the drivers left their vehicles, Shri Roshan Lal continued to drive his vehicle and thus saved vital stores.

Throughout, Shri Roshan Lal displayed great initiative and devotion to duty.

5. Shri ATUL KUMAR HALDAR

(*Effective date of award—18th September* 1965)

On the 18th September 1965, a battalion of the Dogra Regiment was practising improvised river crossing on a river with a strong current; the depth of water was 15-20 feet and it was raining heavily. Some of the rafts carrying a large quantity of valuable military stores capsized. Shri Atul Kumar Haldar, who was fishing nearby, volunteered to salvage the stores. He dived several times in the river and recovered much of the lost stores. As all the stores could not be recovered the same night, he continued his efforts next morning also and ultimately recovered almost all the stores with the help of some of his friends. The skill and courage displayed by Shri Atul Kumar Haldar was highly commendable.

Y. D. GUNDEVIA, Secy. to the President.

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Expenditure)

New Delhi, the 23rd July 1966

No. F. 34(4)-*E.V.*/66.—It is announced for general information that the rate of interest on deposits, and also on balances at the credit of subscribers to the General Provident Fund and other similar Funds on the 31st March 1966, is 4.60 per cent and that this rate will be in force during the financial year beginning on the 1st April 1966. The Funds concerned are—

1. The General Provident Fund (Central Services).
2. The General Provident Fund (Defence Services).
3. The Secretary of State's Services (General Provident Fund).
4. The Contributory Provident Fund (India).
5. The Indian Civil Service Provident Fund.
6. The All India Services Provident Fund.
7. The Indian Ordinance Department Provident Fund.
8. The Indian Civil Service (N.E.M.) Provident Fund.
9. The Defence Services Officers Provident Fund.
10. Other Miscellaneous Provident Fund (Defence).
11. The Armed Forces Personnel Provident Fund.
12. The Military Engineering Services Provident Fund.
13. The Indian Ordinance Factories Workmen's Provident Fund.
14. The Contributory Provident Fund (Defence).
15. The Indian Naval Dockyard Workmen's Provident Fund.

Necessary instructions will be issued separately by the Ministry of Railways (Railway Board) concerning the rate of interest applicable during the year in question to the balances in the various Provident Funds under the control of that Ministry.

ORDER

ORDERED that the Resolution be published in the Gazette of India.

C. V. NAGENDRA, Dy. Secy.

MINISTRY OF HEALTH & FAMILY PLANNING

(Department of Family Planning)

New Delhi, the 27th September 1966

No. F. 4-38/66-*FP.II.*—In partial modification of this Ministry's Resolution No. 4-38/64-FP.II(C&C), dated 23-6-1966, regarding Committee to study the question of legalisation of abortion in the country, the Government of

India have decided that the Committee will now submit their report by the 30-12-1966 instead of the 30th September 1966.

A. P. ATRI, Under Secy.

MINISTRY OF FOOD, AGRICULTURE, COMMUNITY DEVELOPMENT AND COOPERATION

(Department of Co-operation)

RESOLUTION

New Delhi, the 20th September 1966

No. 7-3/66-*CC*.—In November 1962, the Government of India launched a centrally sponsored scheme for the organisation of a large net-work of consumer cooperative stores in all cities and towns with population over 50,000. Up to the end of March 1966, 246 wholesale stores had been set up with 7,649 primary stores/branches. In the wake of devaluation, it was decided to further strengthen the chain of consumer stores already set up, and to launch an accelerated programme which envisages the setting up of 101 wholesale stores, 2,000 primary stores/branches and about 60 department stores during the year 1966-67. Besides, special programmes for the development of consumer cooperatives in the public and private sector undertakings are also being enlarged and strengthened.

2. The success of these programmes will largely depend upon the smooth flow of supplies of essential commodities and the support received from Government agencies and the general public. To provide broad-based guidance and advise on suitable measures for the speedy development of consumer cooperatives as an effective and permanent instrument for ensuring the equitable distribution of essential commodities at fair prices, it has been decided to set up a Central Advisory Committee for Consumer Cooperatives.

3. The composition of the Committee will be as follows :—

Chairman

1. Minister,
Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.

Vice Chairman

2. Deputy Minister,
Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.

Members

3. Shri Annasahib P. Shinde,
Deputy Minister,
Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.

4. Shri T. V. Anandan,
Member of Parliament.

5. Shri P. R. Chakravarti,
Member of Parliament.

6. Shri Vishwa Nath Pandey,
Member of Parliament.

7. Dr. D. S. Kothari,
Chairman,
University Grants Commission,
New Delhi.

8. Shri K. T. Chandy,
Chairman,
Food Corporation of India,
Madras.

9. Shri B. Majumdar,
Chairman,
National Cooperative Agricultural Marketing Federation,
New Delhi.

10. Shri L. C. Jain,
President,
Cooperative Store Ltd.,
Connaught Circus,
New Delhi.

11. Dr. S. R. Ranade,
President,
National Consumers Cooperative Federation,
New Delhi.

12. Dr. S. K. Saxena,
Regional Officer,
International Cooperative Alliance,
6, Canning Road,
New Delhi.

13. Shri C. S. Ramachandran,
Honorary Secretary,
Chandraskharpuram Cooperative Consumer Stores Ltd., Kumbakonam,
Madras State.

14. Shri Amar Singh Harika,
Chairman,
State Cooperative Consumers Federation Ltd.,
Section 17, Chandigarh.

15. Shri P. L. Tandon,
Chairman,
Hindustan Lever Ltd.,
Bombay.

16. Shri Nehar Singh,
Chairman,
Himachal Pradesh Cooperative Marketing Federation,
The Mall, Simla.

17. Secretary to the Government of India,
Department of Cooperation,
Ministry of Food, Agriculture, Community Development and Cooperation.
New Delhi.

18. Secretary,
National Cooperative Development Corporation,
New Delhi.

19. Commissioner for Civil Supplies,
Ministry of Commerce,
New Delhi.

20. A representative of the Planning Commission.

21. A representative of the Ministry of Finance.

22. A representative of the Ministry of Industry.

23. A representative of the Ministry of Labour.

24. A representative of the Ministry of Works, Housing and Urban Development.

25. A representative of the Ministry of Education.

26. A representative of the Department of Food, (Ministry of Food, Agriculture, C.D. & Coop.).

Member Secretary

27. Shri N. P. Chaterji,
Joint Secretary,
Department of Cooperation,
Ministry of Food, Agriculture, C.D. & Cooperation,
New Delhi.

4. The following will be the terms of reference of the Committee :—

(i) to recommend measures for the sound and integrated development of consumer cooperatives;

(i) to review the progress of consumer cooperatives from time to time with particular reference to organisational, supply and financial aspects;

(iii) to suggest measures for enlisting greater participation of the people in the programme and fostering their initiative and leadership; and

(iv) to review arrangements for the training of personnel required for the programme.

5. The Committee shall be competent to form sub-committees to deal with any matter within the competence of the Committee.

6. A person who is appointed as a member of the Committee in his ex-officio capacity or as a holder of a particular office shall automatically cease to be a member of the Committee, if he ceases to be the ex-officio holder of the office or appointment as the case may be. All casual vacancies shall be filled in consultation with the authority or body which nominated the member whose place falls vacant.

7. The Committee will meet from time and at least once in six months.

8. The Committee will be reconstituted after two years.

ORDER

ORDERED that copy of the Resolution be communicated to all concerned.

ORDERED also that the Resolution be published in the Gazette of India for general information.

S. CHAKRAVARTI, Secy.

MINISTRY OF EDUCATION

New Delhi, the 28th September 1966

No. 22(11)/62-*SR.II*.—In continuation of this Ministry's Notification No. 22(11)/62-SR.II dated the 2nd November 1966, Col. J. S. Paintal, Surveyor General of India, is appointed a member of the National Committee for Geography *vice* Brig. Gambhir Singh.

No. 22(22)/62-*SR.II*.—In continuation of this Ministry's Notification No. 22(22)/62-SR.II dated the 27th September 1966, Dr. B. R. Seshachar, Professor and Head of the Department of Zoology, University of Delhi, Delhi, is appointed Chairman of the National Committee for Biological Sciences *vice* Prof. P. Maheshwari.

M. M. MALHOTRA, Dy. Secy.

MINISTRY OF LABOUR, EMPLOYMENT AND REHABILITATION

(Department of Labour and Employment)
(Directorate General of Employment and Training)

New Delhi, the 26th September 1966

No. EEI-3/15/66.—In pursuance of the Government of India, Ministry of Labour and Employment Resolution No. EP/EE-81(1)/58, dated the 13th October 1958, the Government of India constituted a Central Committee on Employment under their Notification No. EP-81(1)/58, dated the 19th January 1959, to advise the Ministry of Labour and Employment on problems relating to employment, creation of employment opportunities and the working of the National Employment Service. The Committee was subsequently reconstituted under Notification No. EE-81/1/62 dated the 7th November 1962. The term of the Committee having since expired, the Government of India are pleased to reconstitute the Central Committee on Employment for another period of three years and to appoint the members mentioned below to serve on the Committee with effect from the date of this Notification :—

1. The Union Minister of Labour, Employment & Rehabilitation—*Chairman.*
2. A representative of the Government of Andhra Pradesh (Home/Labour III Department).
3. A representative of the Government of Assam (Labour Department).
4. A representative of the Government of Bihar, (Labour & Employment Department).
5. A representative of Government of Gujarat, (Education & Labour Department).
6. A representative of the Government of J & K, (Finance Department).
7. A representative of the Government of Kerala, (Health & Labour Department).
8. A representative of the Government of Madhya Pradesh, (Labour Department).
9. A representative of the Government of Madras, (Department of Industries, Labour & Housing).
10. A representative of the Government of Maharashtra, (Industries & Labour Department).
11. A representative of the Government of Mysore, (Deptt. of Labour & Municipal Administration).
12. A representative of the Government of Orissa, (Labour, Employment and Housing Department).
13. A representative of the Government of Punjab, (Labour & Employment Department).
14. A representative of the Government of Rajasthan, (Labour & Employment Department).
15. A representative of the Government of Uttar Pradesh, [Labour (B) Department].
16. A representative of the Government of West Bengal, (Labour Department.)
17. Shri A. P. Sharma, M.P. (Lok Sabha).
18. Shri Balkrishna Wasnik, M.P. (Lok Sabha).
19. Shri T. V Anandan, M.P. (Rajya Sabha).
20. Shri Arjun Arora, M.P. (Rajya Sabha).
21. Virendra Agarwala, M.A., LL.B. (Economist) Baird Road, Flat No. 4, Lady Hardinge Hospital, New Delhi.
22. Prof. K. S. Sonachalam, (Economist), Head of Department of Economics, Annamalai University.
23. A representative of the All India Khadi & Village Industries Commission.
24. A representative of the Small Sacle Industries Board.
25. A representative of the Indian National Trade Union Congress.
26. A representative of the All India Trade Union Congress.
27. A representative of the Hind Mazdoor Sabha.
28. A representative of the Employers' Federation of India.
29. A representative of the All India Organisation of Industrial Employers.
30. A representative of the All India Manufacturers Organisation.
31. A representative of the All India Women's Conference.
32. Director, Institute of Applied Manpower Research, New Delhi.
33. Joint Secretary to the Government of India and Director of Manpower, Ministry of Home Affairs, New Delhi.
34. The Director General of Employment and Training, New Delhi.
35. The Director of Employment Exchanges, Directorate General of Employment and Training.—*Member-Secretary.*

G. JAGANNATHAN, Under Secy.

PRINTED IN INDIA BY THE MANAGER, GOVERNMENT OF INDIA PRESS, FARIDABAD AND PUBLISHED BY THE MANAGER OF PUBLICATIONS, DELHI, 1966